CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 121 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, शनिवार 24 मई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

बांग्लादेश को अमित शाह ने दी नसीहत : 1971 का युद्ध न भूले बांग्ला देश

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)।। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को 22 वें बीएसएफ अलंकरण समारोह में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने बीएसएफ जवानों के शौर्य की कहानी को बताया। साथ ही भारतीय सशस्त्र बलों की ओर से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के बारे में भी उन्होंने बात की। गृहमंत्री शाह ने कहा कि पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों की ओर से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर ने इस तथ्य को पूरी तरह उजागर कर दिया है कि भारत में आतंकवाद पाकिस्तान की ओर से प्रायोजित है। उन्होंने कहा कि यह ऑपरेशन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, एजेंसियों से प्राप्त सटीक खुफिया जानकारी और सशस्त्र बलों की घातक क्षमताओं को दिखाता है।

बांग्लादेश को अमित शाह ने समझा दिया

वहीं, इस कार्यक्रम में बीएसएफ जवानों की सराहना करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश को स्पष्ट रूप से समझा दिया। बीएसएफ की सराहना करते हुए अमित शाह ने कहा कि 1971 के युद्ध में बीएसएफ की ओर से दिखाई गई बहादुरी और बांग्लादेश के निर्माण में बल की ओर से किए गए योगदान को भारत नहीं भूल सकता और न ही बांग्लादेश को इसे कभी भूलना चाहिए। गृहमंत्री शाह ने बांग्लादेश को याद दिलाते हुए कहा कि बीएसएफ ने बांग्लादेश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अन्याय के खिलाफ लड़ाई में सशस्त्र बलों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बहादुरी का अनुकरणीय मानक स्थापित किया। गृह मंत्री ने कहा कि 2.75 लाख कर्मियों वाला बीएसएफ भौगोलिक चुनौतियों से ग्रस्त कुछ सबसे कठिन परिस्थितियों में काम कर रहा है।

1965 में हुआ था बीएसएफ का गठन

बता दें कि सीमा सुरक्षा बल का गठन साल 1965 में हुआ था। 1965 में गठित बीएसएफ पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ 6,000 किलोमीटर से अधिक लंबी भारतीय सीमाओं की रक्षा करता है। के एफ रुस्तमजी बीएसएफ के संस्थापक प्रमुख थे।

पाकिस्तान के अंदर घुसकर आतंकियों को मारा- शाह

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर बाद जब पाकिस्तान ने कुछ भारतीय नागरिक और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने का दुस्साहस किया तो भारत ने पाकिस्तान के अंदर 100 किलोमीटर तक हमला किया, जिसमें नौ आतंकवादी शिविर नष्ट कर दिए गए। गृहमंत्री शाह ने कहा कि आतंकवादियों ने पहलगाम में एक चरम हमला किया, जिसमें उन्होंने चुनिंदा निर्दोष लोगों को चुना, उनका धर्म पूछा और महिलाओं और बच्चों सहित उनके परिवारों के सामने उनकी बेरहमी से हत्या कर दी। उन्होंने कहा कि यह पाप पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों की ओर से किया गया था।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत की प्रतिक्रिया अलग थी

गृहमंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत की प्रतिक्रिया अलग थी। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी ठिकानों को महज कुछ मिनटों में नष्ट कर दिया। शाह ने कहा कि भारत की ओर से केवल आतंकी शिविरों पर हमला किया गया, पाकिस्तान के किसी भी नागरिक प्रतिष्ठानों पर हमला नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि हमने केवल पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। हालांकि, पाकिस्तानी सेना ने इसे अपने ऊपर हमला माना। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान 9 आतंकी ठिकानों को नष्ट किया गया।

पेपरलीक : महिला वनरक्षक समेत तीन गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। एसओजी ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले में गुरुवार को एक युवती समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें दो वनरक्षक हैं, जिन्होंने लीक पेपर पढ़कर एग्जाम पास किया था। पेपर के लिए दोनों वनरक्षक ने कुल 4 लाख (1 लाख और 3 लाख) रुपए दलाल को दिए थे। एसओजी के एडीजी वीके सिंह ने बताया कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले की एसओजी ने जांच की। जांच के दौरान 12 मार्च को कार्रवाई कर पेपर लीक मामले में आरोपी कंवराराम जाट (गुजरात के पालनपुर में स्टेशन मास्टर) को अरेस्ट किया गया था। उससे पूछताछ में खुलासा हुआ कि उसने वनरक्षक उमाराम और प्यारी कुमारी को 13 नवम्बर 2022 को हुई वनरक्षक भर्ती परीक्षा का पेपर उदयपुर में एग्जाम से पहले ही दे दिया था। पूछताछ में नाम सामने आने पर एसओजी ने गुरुवार को गुडामलानी (बाड़मेर) के रहने वाले आरोपी वनरक्षक उमाराम (23) और वनरक्षक प्यारी कुमारी (30) को गिरफ्तार किया। पूछताछ में दोनों वनरक्षकों से पेपर के लिए 4 लाख रुपए देना सामने आया। आरोपी वनरक्षक उमाराम ने लीक पेपर पढ़ने के लिए फरार आरोपी जबराराम जाट को 1 लाख रुपए दिए थे। जबकि, आरोपी वनरक्षक प्यारी कुमार के भाई हीराराम ने 3 लाख रुपए दिए थे। एसओजी वांछित आरोपी जबराराम जाट की तलाश में दबिश दे रही है।

विधानसभा ने की अधिसूचना जारी

अंता के भाजपा विधायक कंवर लाल की विधायकी खत्म

8 साल में विधायकी से हाथ धोने वाले दूसरे विधायक है कंवरलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। आखिरकार भाजपा के एक विधायक की विधायिकी शुक्रवार को खत्म हो गई। एसडीएम पर पिस्टल तानने के मामले में 3 साल की सजा पाने वाले बीजेपी विधायक कंवरलाल मीणा की सदस्यता खत्म कर दी गई है। विधानसभा ने इसकी अधिसूचना जारी कर दी है। अंता सीट पर उपचुनाव होंगे या नहीं, यह सुप्रीम कोर्ट में कंवरलाल की ओर से लगाई गई रिव्यू पिटीशन पर फैसले के बाद तय होगा। कंवरलाल की विधायकी 1 मई से खत्म मानी जाएगी। स्पीकर वासुदेव देवनानी ने कंवरलाल की विधायकी के बारे में फैसला करने को लेकर राज्य के महाधिवक्ता और सीनियर वकीलों से कानूनी राय मांगी थी।

महाधिवक्ता ने शुक्रवार को ही कानूनी राय भेजी थी, जिसमें सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए कहा गया था कि फिलहाल विधायकी खत्म करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। काबिले गौर है कि 21 मई को ही कंवरलाल मीणा ने कोर्ट के सामने सरेंडर किया था।

कंवरलाल मीणा ने सुप्रीम कोर्ट में सजा स्थगित करने की याचिका लगाई थी, जो खारिज हो गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने दो सप्ताह में सरेंडर करने को कहा था। सुप्रीम कोर्ट से याचिका खारिज होने के बाद 21 मई को कंवरलाल ने अकलेरा कोर्ट में सरेंडर कर दिया, जिसके बाद उन्हें जेल भेज दिया। कंवरलाल अभी जेल में हैं।

लोकतंत्र और संविधान की मर्यादा की जीत- जूली

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कियह सत्य की जीत हुई है। संविधान की जीत हुई है। जिस संविधान की पालना पहले ही दिन हो जानी चाहिए, इसकी पालना करते-करते इन लोगों ने 23 दिन लगा दिए। कानून के अनुसार जब किसी जनप्रतिनिधि को दो साल या उससे अधिक की सजा होती है, तो उसकी सदस्यता स्वतः समाप्त मानी जानी चाहिए। हालांकि राजस्थान में भाजपा विधायक कंवरलाल को तीन साल की सजा होने के बाद भी कोर्ट के आदेश के 23 दिन बाद तक, विधानसभा अध्यक्ष की ओर से सदस्यता रद्द नहीं की गई। यह न केवल संविधान की अवहेलना थी, बल्कि न्याय व्यवस्था का खुला अपमान भी।

सजा पर रोक नहीं लगने से विधायकी खत्म करने के अलावा विकल्प नहीं

विधानसभा सचिवालय ने कंवरलाल को नोटिस जारी कर 7 मई तक जवाब मांगा था। इसमें सजा पर रोक के लिए सुप्रीम कोर्ट से कोई राहत मिली या नहीं, इस पर जवाब देना था। कंवरलाल की सजा सुप्रीम कोर्ट ने भी स्थगित नहीं की, इसलिए अब स्पीकर के पास विधायकी खत्म करने पर फैसला करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। विधानसभा में अब 199 विधायक हैं। अंता सीट खाली हो गई है।

जर्मनी में बोले विदेश मंत्री: आतंकवाद बर्दाश्त नहीं

भारत अब परमाणु धमकियों से डरने वाला नहीं- जय शंकर

जयपुर टाइम्स

बर्लिन/एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि भारत आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करेगा और परमाणु ब्लैकमेल' के आगे कभी नहीं झुकेगा। अपने जर्मन समकक्ष जोहोन वेडफुल के साथ एक साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में जयशंकर ने यह भी कहा कि भारत पाकिस्तान से केवल द्विपक्षीय तरीके से ही निपटेगा और इस मामले में किसी भी तरफ से कोई भ्रम नहीं होना चाहिए। जयशंकर ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत की जवाबी कार्रवाई के तुरंत बाद मैं बर्लिन आया हूं। मैं आपको वह बात बताना चाहता हूं जो मैंने वाडेफुल से कही। भारत आतंकवाद के लिए जीरो टॉलरेंस रखता है। भारत कभी न्यूक्लियर ब्लैकमेल के आगे नहीं झुकेगा। भारत पाकिस्तान से केवल द्विपक्षीय तरीके से निपटेगा। इस बात को लेकर किसी तरह का कोई भ्रम नहीं होना चाहिए।' भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद कूटनीतिक स्तर पर सक्रियता बढ़ा दी है। उस हमले में 26 लोग मारे गए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे एक 'नया सामान्य' (न्यू

नॉर्मल) घोषित किया है, जिसके तहत भारत अब किसी भी सीमा पार आतंकवादी हमले को भारत के खिलाफ युद्ध का कदम मानेगी। इससे पहले, जयशंकर ने जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज से भी मुलाकात की और बातचीत में कहा कि भारत द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने और उसका विस्तार करने के लिए जर्मनी की सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक है। जयशंकर नीदरलैंड, डेनमार्क और जर्मनी के दौरे के अंतिम पड़ाव में बर्लिन में हैं। जयशंकर ने एक्स पर लिखा, आज बर्लिन में चांसल फ्रेडरिक मर्ज से मुलाकात कर सम्मानित महसूस कर रहा है। उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री ने वन विभाग को भूमि आवंटन की दी स्वीकृति

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य में ईआरसीपी परियोजना (रामजल सेतु लिंक परियोजना) के कार्यों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वन भूमि प्रत्यावर्तन के तहत बारां व अलवर जिलों में 1102.72 हैक्टेयर भूमि वन विभाग को आवंटित करने की स्वीकृति प्रदान की है। मुख्यमंत्री ने ईआरसीपी के अंतर्गत निर्माणाधीन रामगढ़ व महलपुर बैराज और नवनेरा- गलवा- बीसलपुर-ईसरदा लिंक परियोजना के अन्तर्गत बैराज निर्माण के कार्य से प्रभावित वन भूमि के प्रत्यावर्तन के लिए वन विभाग को भूमि आंवटन के चार प्रस्तावों का अनुमोदन किया है। इस निर्णय के अनुसार बारां जिले की किशनगंज तहसील में 427.59 हैक्टेयर, छबड़ा तहसील में 284.09 हैक्टेयर, छीपाबड़ौद तहसील में 362.95 हैक्टेयर व अलवर जिले में आरक्षित भूमि कोष से 28.08 हैक्टेयर गैर-वन भूमि वन विभाग को निःशुल्क आवंटित की जा रही है।

राज्य सरकार को 'सुप्रीम' फटकार: सिर्फ कोटा में सुसाइड क्यों?

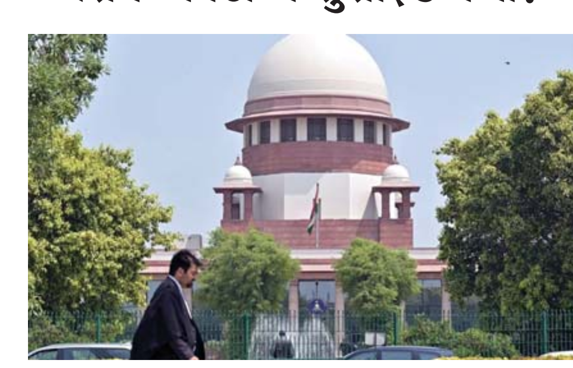

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(**एजेंसी.**)। आए दिन राजस्थान के कोटा से स्टूडेंट्स की ओर से आत्महत्या की खबर सामने आती रहती है। इसी मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अब राज्य सरकार को फटकार लगाई है और स्थिति को गंभीर बताया है। न्यायमूर्ति जेपी पारदीवाला और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने कहा कि इस साल अब तक शहर से 14 आत्महत्या के मामले सामने आ चुके हैं। न्यायमूर्ति पारदीवाला ने राज्य सरकार की ओर से पेश वकील से पूछा कि एक राज्य के रूप में आप क्या कर रहे हैं? न्यायाधीश ने कहा कि ये बच्चे आत्महत्या क्यों कर रहे हैं और केवल कोटा में ही क्यों? क्या आपने एक राज्य के रूप में इस पर विचार नहीं किया? हालांकि, वकील ने जवाब देते हुए कहा कि आत्महत्या के मामलों की जांच के लिए राज्य में एक विशेष जांच दल का गठन किया गया था। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट खड़गपुर में पढ़ने वाले छात्र की मौत के मामले में सुनवाई कर रहा था। 4 मई को छात्र अपने छात्रावास के कमरे में फांसी के फंदे से लटका पाया गया था। एक अन्य मामले की भी सुनवाई हुई, जिसमें एक लड़की नीट की परीक्षा देने वाली थी और वह कोटा में अपने कमरे में लटकी मिली थी। लड़की अपने माता-पिता के साथ रहती थी। सर्वोच्च न्यायालय की पीठ को पता चला कि आईआईटी खड़गपुर के छात्र के मामले में प्राथमिकी दर्ज की गई थी, लेकिन 8 मई को दर्ज की गई एफआईआर में चार दिन की देरी पर सुप्रीम कोर्ट ने सवाल भी उठाया। पीठ ने कहा कि इन बातों को हल्के में न लें। यह बहुत गंभीर बातें हैं। पीठ ने सुप्रीम कोर्ट के 24 मार्च के उस फैसले का हवाला दिया, जिसमें उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की आत्महत्या के लगातार मामलों पर ध्यान दिया गया था और छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को दूर करने और ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए एक राष्ट्रीय टास्क फोर्स का गठन किया गया था। पीठ ने कहा कि ऐसे मामलों में तुरंत एफआईआर दर्ज करना जरूरी है। पीठ ने अदालत में मौजूद संबंधित पुलिस अधिकारी से पूछा कि आपको एफआईंआर दर्ज करने में चार दिन क्यों लगे?" हालांकि, पुलिस अधिकारी ने कहा कि एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है।

भारत के दुश्मनों की अब खैर नहीं

कुशा प्रोजेक्ट से और मजबूत होगा डिफेंस सिस्टम

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)। हाल ही में पाकिस्तान के साथ हुए सैन्य टकराव के दौरान भारतीय डिफेंस सिस्टम ने बेहतरीन ढंग से काम करते हुए पाकिस्तान की ओर से भेजे गए सारे ड्रोन्स और मिसाइल को नष्ट कर पाकिस्तानी हमले को नाकाम कर दिया था। रूसी 400 ने प्रभावशाली काम करते हुए पाकिस्तानी ड्रोन्स को हवा में ही नाकाम कर हमले के प्रयास को विफल कर दिया था। अब भारत अपना खुद का स्वदेशी मिसाइल डिफेंस सिस्टम तैयार करने पर काम कर रहा है। आकाश जैसी एअर डिफेंस सिस्टम बनाने वाली एक प्रमुख रक्षा क्षेत्र की कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड प्रोजेक्ट

कुशा के तहत एस 400 की तरह ही स्वदेशी लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाले मिसाइल सिस्टम बनाने में जुट गई है। रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी का लक्ष्य 12 से 18 महीने में प्रोटोटाइप को पूरा करना है, उसके बाद उपयोगकर्ता परीक्षण होंगे, जो 12 से 36 महीने तक चल सकते हैं। प्रोजेक्ट कुशा का नेतृत्व DRDO कर रहा है और इसका उद्देश्य एक ऐसा सिस्टम बनाना है जो ड्रोन, विमान और मिसाइल जैसे विभिन्न हवाई खतरों को मुकाबला कर सके।

बीईएल के अध्यक्ष का बयान

बीईएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मनोज जैन ने कहा कि हम डीआरडीओ के साथ विकास साझेदार हैं और संयुक्त रूप से कुशा की कई सिस्टमों को बना रहे हैं। उन्होंने बताया कि इसमें मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के रडार और नियंत्रण प्रणालियां विकसित की जा रही है। प्रोजेक्ट कुशा के अलावा, बीईएल क्विक रिएक्शन सरफेस-टू-एअर मिसाइल सिस्टम पर भी काम कर रहा है। कंपनी को इस परियोजना के लिए 30,000 करोड़ रुपये के ऑर्डर मिलने की उम्मीद है, जो भारतीय सेना और वायु सेना की संयुक्त आवश्यकताओं को पूरा करेगा। बीईएल की ओर से बनाई गई आकाश मिसाइल प्रणाली ने बेहतरीन प्रदर्शन कर हालिया सफलता से ध्यान आकर्षित किया है। आकाश एक वायु रक्षा नियंत्रण और रिपोर्टिंग सिस्टम है जिसे विशेष रूप से भारतीय सशस्त्र बलों के लिए विकसित किा गया है। यह कई हवाई लक्ष्यों की वास्तविक समय की निगरानी और संलग्नता को सक्षम बनाता है और सेंसर और हथियार प्रणालियों की एक विस्तृत श्रृंखला को एक ही ढांचे में एकीकृत करता है।

CMYK

रोटरी क्लब अलवर ने बांटे सेनेटरी पैड

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। रोटरी क्लब अलवर का हर माह परमानेंट प्रोजेक्ट वूमेन हाइजीन के तहत सहचरी प्रोजेक्ट किया जाता है जिसमें रोटरी क्लब अलवर की रोटेरियन महिलाएं सेनेटरी नैपकिन का निशुल्क वितरण करती है एवं महिलाओ को स्वच्छता एवं स्वस्थ रहने की जानकारी देती हैं। शुक्रवार 23 मई, 2025 को इस बार श्रॉफ आई हॉस्पिटल में होस्टल में रहने वाली लड़कियों को निशुल्क सेनेटरी नैपकिन पैड का वितरण किया गया। इस बार रोटरी क्लब अलवर की क्लब की प्रथम महिला रोटेरियन बबीता कट्टा द्वारा निशुल्क सेनेटरी नैपकिन पैड दिये गये। इस कार्यक्रम की कोर्डिनेटर कविता खण्डेलवाल ने बताया इस कार्यक्रम में रोटश्र आगामी अध्यक्ष बबीता खण्डेलवाल, रोटश्र ममता खन्ना,रोटश्र साक्षी खण्डेलवाल, बबीता कट्टा मौजूद रहीं। यह जानकारी अध्यक्ष दीपक कट्टा, रोटरी क्लब अलवर ने दी।

श्री केशव मण्डल, अलवर (दक्षिण) ने निकाली प्रातः और सांय तिरंगा रैली

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। ऑपरेशन सिंदूर और तिरंगा रैली के कार्यक्रम के तहत सुबह अलवर शहर विधानसभा के श्री केशव मंडल अलवर (दक्षिण) अध्यक्ष महेश निहालवानी के नेतृत्व में नयाबास शक्ति केंद्र संयोजक विजय कुमार मीणा, पार्षद रविंद्र जैन, और आमजन के सहयोग से स्कीम नं 8 में तिरंगा रैली का निकाली गई और शाम को रामनगर शक्ति केंद्र संयोजक महेश निहालवानी, मंडल महामंत्री ओम प्रकाश शर्मा, ब्रह्मानंद गुप्ता, कमल कांत जांगिड़, राधा कृष्ण मित्तल, जगदीश शर्मा, सोरभ, मुकेश शर्मा, निर्मल शर्मा, सोनू अरोड़ा, सन्नी मीणा सहित काफी संख्या में महिला कार्यकर्ता और आमजन ने तिरंगा रैली का आयोजन एन.ई.बी. सैक्टर 5, 6 व 07 में भारत माता की जय बोलते हुए देश के सैनिकों के अदम्य साहस और मनोबल को बढ़ाने के लिए तिरंगा रैली का निकाली गई।

सरकार की योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभांवित करावे - संयुक्त सचिव स्मृति सहारण

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। भारत सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की संयुक्त सचिव स्मृति सहारण ने जिला परिषद सभागार में बैठक लेकर कृषि, पशुपालन, राजीविका एवं जिले के विकास अधिकारियों को निर्देश दिये कि विभागीय समन्वय स्थापित कर केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही एनआरएलएम योजना का लाभ ग्रामीण विकास परिक्षेत्र में कार्य करने वाली स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को दिया जावे, ताकि स्वयं सहायता समूह की सदस्यों को आजीविका संवर्धन में सहायता मिल सके। उन्होंने निर्देश दिये कि विभागीय समन्वय के साथ कार्य करते हुए सरकार की योजना से वंचित व पात्र व्यक्तियों को जोडकर उन्हें योजनाओं से लाभांवित करावे। इस दौरान जिला परिषद के सीईओ सालुखे गौरव रवीन्द्र, डीपीएम राजीविका रेखारानी व्यास सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

आरआईएसई (रैपिड इम्यूनाईजेशन स्किल एनहंसमेंट) कार्यशाला का आयोजन

कोटपूतली(निसं.) यहाँ के राजकीय सरदार जनाना अस्पताल में शुक्रवार को बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर के नेतृत्व में ब्लॉक स्तर पर आरआईएसई (रैपिड इम्यूनाईजेशन स्किल एनहंसमेंट) कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य टीकाकरण कार्यक्रम के कवरेज, समानता व गुणवत्ता में सुधार लाना है। इसमें वैक्सीन का रखरखाव किस तरीके से होता है, बच्चों के वैक्सीन कैसे लगाई जाती है, वैक्सीनेशन से पहले क्या तैयारियां की जाती है एवं अन्य सभी प्रकार के मॉड्यूल एप पर उपलब्ध है। सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने टीकाकरण की समीक्षा करते हुये बताया कि ब्लॉक कोटपूतली का टीकाकरण 82 प्रतिशत है जो कम से कम 95 प्रतिशत होना चाहिये। उन्होंने एनसीडी कार्यक्रम की प्रगति में सुधार करने के निर्देश प्रदान किये। जहां भी सुधार नहीं होगा उन अधिकारी/कर्मचारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश प्रदान किये। आरसीएचओ डॉ. अरविन्द अग्रवाल, डीएनओ रविकान्त जांगिड़ ने आरआईएसई एप के बारे में जानकारी दी। आरआईएसई एप का प्रशिक्षण चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. दिलीप पंवार व डॉ. अनिल यादव द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण में बताया कि आईआईएसई एप को प्ले स्टोर से डाउनलोड कर आई.डी. एवं पासवर्ड से लॉगिन करेंगे, उसके बाद मॉड्यूल स्टार्ट होंगे मॉड्यूल को पढ़ना है। विडियो को देखकर पूछे गये प्रश्न का जवाब देना होगा।

'शुद्ध आहार मिलावट पर वार' अभियान के तहत खाद्य पदार्थों के 50 नमूने जांच में अवमानक पाए गए

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. योगेन्द्र शर्मा ने बताया कि जिले में मिलावटीखोरी पर लगाम लगाने हेतु चलाए जा रहे 'शुद्ध आहार मिलावट पर वार' अभियान के तहत 1 अगस्त 2024 से 30 सितम्बर 2024 तक खाद्य पदार्थों के 128 नमूने जांच हेतु लिए गए जिनमें से 50 नमूने अवमानक स्तर के पाये गए। उन्होंने बताया कि रामगढ में बहादुरपुर रोड स्थित मैसर्स चौधरी डेयरी, दिल्ली-मुम्बई हाईवे पर लक्ष्मणगढ में मैसर्स श्री श्याम फेसिलिटी मेनजमेंट प्रा.लि, रामगढ के खालसा मार्केट में मैसर्स प्रजापति पनीर भंडार, लक्ष्मणगढ के बडोदामेव मैन मार्केट में मैसर्स खंडेलवाल एंटरप्राइजेज, बनबीरपुर में मैसर्स जेएसके फूड्स, अलवर में बस स्टैण्ड पर मैसर्स हनुमान पवित्र ढाबा एवं मैसर्स बाबा दा पराठा, लक्ष्मणगढ में निजाम नगर रोड स्थित मैसर्स कृष्णा डेयरी, नीमराणा में पुरानी सब्जी मंडी के पास मैसर्स बाबा डेयरी, खैरथल में हरसौली रोड स्थित मैसर्स ओम मिष्ठान भंडार, कोटकासिम में मैसर्स सोनू रसगुल्ला भंडार, कोटकासिम के भौकर में मैसर्स प्रदीप रसगुल्ला भंडार, सिलीसेरघ किशनपुर में मैसर्स साने रेजिडेंसी प्रा.लि, बानसूर में मैसर्स प्रिंस सरस लोटस एजेन्सी, तिजारा में अलीम शाह, तिजारा में गणपति सिनेमा के सामने मैसर्स दया मिष्ठान भंडार, तिजारा में विकास पथ पर मैसर्स मानसी मावा भंडार, तिजारा में मैसर्स श्री श्याम डेयरी एवं फूड प्रोडेक्टस तथा तिजारा में बस स्टेण्ड बाइपास आरजे 40 रेस्टोरेंट से लिए गए पनीर के नमूने जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए गए। इसी प्रकार मैसर्स अलवर में गुलाब बाग स्थित मैसर्स शिवा सेल्स एंटरप्राइजेज, कटोरी वाला तिबारा स्थित मैसर्स दीपक डेयरी, कोटकासिम में मैसर्स श्री गणपति ट्रेडर्स, सिलीसेरघ किशनपुर में मैसर्स साने रेजिडेंसी प्रा.लि से घी के तथा कोटकासिम में मैसर्स श्री गणपति ट्रेडर्स से देसी घी के लिए गए नमूने जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए गए। राजगढ के बस स्टेण्ड गोला का बास में मैसर्स पवन मिष्ठान भंडार, खेडली में जवाहर चौक स्थित मैसर्स बीकानेर मिष्ठान भंडार, अलवर में रेलवे स्टेशन के पास स्थित मैसर्स कृष्णा मिष्ठान भंडार एवं जनरल स्टोर, टपूकडा में बस स्टैण्ड स्थित मैसर्स एम.के पनीर भंडार व खैरथल में मटोर रोड स्थित मैसर्स भगवान दास मिष्ठान भंडार, से लिए गए कलाकंद के नमूने जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए गए।अलवर में बस स्टैण्ड पर मैसर्स बाबा दा पराठा, मुण्डावर के बादली में मैसर्स लवी मिल्क प्रोडेक्ट, तिजारा में मैसर्स अग्रवाल मिष्ठान भंडार, से लिए दही के नमूने जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए गए। इसी प्रकार अलवर के हाउसिंग बोर्ड में मैसर्स प्रीमियम बाल्सग मोसा ग्रुप से चाट मसाला, अलवर में वीर चौक में मैसर्स नन्दू जी स्वीट्स से बेसन के लड्डू, अलवर में आटा वाली गली में मैसर्स सौभाग्य ट्रेडर्स व थानागाजी में मैसर्स जय मातादी किराणा स्टोर से रेड चिल्ली पाउडर, धोबी गट्टा में मैसर्स बालाजी मिष्ठान भंडार से पतिसा मिठाई, अलवर में 60 फुट रोड स्थित मैसर्स लक्ष्मी मिष्ठान भंडार से नारियल लड्डू, तिजारा में मैसर्स विवेक सैनी से प्रयोग किया हुआ रिफाइंड सोयाबीन ऑयल, नीमराना में मैसर्स श्री जोधपुर मिष्ठान भंडार व बानसूर में मैसर्स यादव कॉफी टी स्टोल और मिष्ठान भंडार से मावा, तिजारा में मैसर्स विशाल किराणा स्टोर से खुला हुआ मिर्च पाउडर, टपूकडा में मैसर्स यादव रसगुल्ला भंडार, तिजारा में मैसर्स श्री श्याम डेयरी एण्ड फूड प्रोडेक्टस व कोटकासिम के भोकर में मैसर्स प्रदीप रसगुल्ला भंडार से रसगुल्ला, अलवर में स्टेशन रोड के पीछे मैसर्स सैनी मिष्ठान भंडार, किशनगढबास में मैसर्स जोधपुर मिष्ठान भंडार व भर्तृहरि धाम स्थित मैसर्स बलराम सैनी से बर्फी, अलवर में 60 फुट रोड स्थित मैसर्स खंडेलवाल किराणा स्टोर से हल्दी पाउडर तथा बहरोड में मैसर्स खुशी होटल एण्ड रेस्टोरेंट से मिक्स मिल्क के नमूनों की जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए गए। उन्होंने बताया कि खाद्य पदार्थों के नमूना जांच रिपोर्ट में अवमानक पाए जाने पर प्रकरण में 5 लाख तक के जुर्माने का प्रावधान है एवं खाद्य पदार्थों के नमूने जांच रिपोर्ट में असुरक्षित पाए जाने पर कारावास की सजा का प्रावधान है।

जिला कलक्टर ने किया विभिन्न कार्यालयों का का निरीक्षण, दिए त्वरित कार्यवाही के निर्देश

जनहित में पारदर्शिता और समयबद्ध सेवाएं सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला कलेक्टर ने शुक्रवार को किशनगढ़ बास तहसील, नगर परिषद खैरथल एवं उप पंजीयन कार्यालय टपूकड़ा का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सभी कार्यालयों की कार्यप्रणाली की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि आमजन के कार्यों को समयबद्ध व पारदर्शी तरीके से पूर्ण किया जाए। तहसील किशनगढ़ बास में निरीक्षण के दौरान जिला कलेक्टर ने सरकारी भूमि पर अतिक्रमण, धारा 91, 90ए एवं म्यूटेशन से जुड़े प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए। साथ ही सीमाज्ञान, सहमति एवं बंटवारे के मामलों को प्राथमिकता से सुलझाने पर बल दिया। तहसील भवन की खराब स्थिति को देखते हुए उन्होंने उपखंड अधिकारी व सार्वजनिक निर्माण विभाग के अभियंता को अविलंब मरम्मत कार्य कराने के निर्देश भी दिए। नगर परिषद खैरथल के निरीक्षण में कलेक्टर ने सफाई व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखने, रिकॉर्ड संधारण में पारदर्शिता बरतने एवं सभी शाखाओं में नागरिकों को बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके पश्चात उन्होंने टपूकड़ा स्थित उप पंजीयन कार्यालय का निरीक्षण किया और तहसीलदार को पुराने प्रकरणों की वसूली करने तथा राजस्व लक्ष्य समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। साथ ही यह सुनिश्चित करने को कहा कि नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। निरीक्षण के दौरान उपखंड अधिकारी मनीष कुमार जाटव, तहसीलदार नरेंद्र कुमार भाटिया, तहसीलदार शैतान सिंह यादव, नगर परिषद आयुक्त मुकेश शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

गिव अप अभियान के तहत 31 मई तक अपात्र व्यक्ति हटवा सकते हैं खाद्य सुरक्षा योजना से नाम

अभियान के तहत अब तक 6 हजार से अधिक परिवारों की 25 हजार से अधिक यूनिट्स हटाई गई

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। गिव अप अभियान के तहत अपात्र खाद्य सुरक्षा लाभार्थी स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा सूची से 31 मई तक अपना नाम हटवा सकते हैं। जिला रसद अधिकारी विनोद जुनेजा ने बताया कि विभाग द्वारा गिव अप अभियान के तहत नाम हटाने की प्रक्रिया का सरलीकरण कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि अभियान में खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित ऐसे लाभार्थी जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं जैसे आयकरदाता, 1 लाख रूपये से अधिक वार्षिक आय, चौपहिया वाहन धारक स्वेच्छा से अपने नजदीकी उचित मूल्य दुकानदार/जिला रसद अधिकारी कार्यालय अलवर में उपलब्ध निर्धारित प्रपत्र भरकर अपना नाम हटवा सकते हैं। प्रपत्र जिले की सभी उचित मूल्य दुकानों पर उपलब्ध है। अब कोई भी अपात्र व्यक्ति खाद्य विभाग राजस्थान के पोर्टल https:// food.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध लिंक 'गिव अप अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा योजना (NFSA)से स्वतः हटने के लिए आवेदन करें' पर आवेदन कर अपना नाम स्वयं खाद्य सुरक्षा सूची से हटा सकते हैं। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत आयकर विभाग से आयकरदाताओं की सूची तथा परिवहन विभाग से चौपहिया वाहनधारकों के नाम प्राप्त किये जा रहे है। इस सूचना के आधार पर उनके खिलाफ विशेष अभियान चलाकर वसूली की कार्यवाही तथा दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी एवं योजना के प्रारंभ से ही प्राप्त किए गए कुल गेहूं की बाजार दर से वसूली की जाएगी। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत अब तक 6041 परिवारों की 25372 यूनिट्स हटाई जा चुकी है।

खुले कचरे से गौवंश की मौतें, 26 मई को "गौवंश बचाओ महा-रैली" का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। खुले में फेंके जा रहे कचरे और सिंगल यूज़ प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग के कारण गौवंश की लगातार हो रही मौतों को लेकर स्थानीय लोगों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। इस गंभीर स्थिति को देखते हुए राजस्थान जाट महासभा फुलेरा तहसील अध्यक्ष एवं सांभर लेक पंचायत समिति सदस्य धनालाल नोदल के नेतृत्व में "गौवंश बचाओ महा-रैली" का आयोजन किया जा रहा है। यह रैली आगामी 26 मई को प्रातः 9 बजे वन विभाग कार्यालय, डेहरा रोड, जोबनेर से प्रारंभ होगी। ताकि कचरे के निस्तारण के लिए एक सुनिश्चित और सुरक्षित स्थान निर्धारित किया जाए तथा खुले में कचरा फेंकने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जा सके। धनालाल नोदल ने बताया कि नगरपालिका की लापरवाही के चलते गौवंश सड़कों पर फैले प्लास्टिक और अन्य हानिकारक कचरे का सेवन कर रहे हैं, जिससे उनकी

जान जा रही है। यह न केवल मानवीय दृष्टिकोण से दुखद है बल्कि पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरा है। उन्होंने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में रैली में भाग ले ताकि गौवंश संरक्षण की इस मुहिम को मजबूती प्रदान प्रधान की जा सके ।

अनाधिकृत कट्स एवं अतिक्रमणों पर कार्यवाही करते हुये यातायात को सुगम व सुरक्षित बनायें - जिला कलक्टर

जिला सडक़ सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) जिला कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला सडक़ सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान जिला पुलिस अधीक्षक दुष्यंत राजन भी मौजूद रहे। बैठक में सडक़ सुरक्षा से संबंधित विभिन्न बिंदुओं और सडक़ों की स्थिति की समीक्षा करते हुये सडक़ दुर्घटनाओं और इसके कारणों पर गहराई से चर्चा की गई। इस दौरान ओवरस्पीडिंग, ट्रैफिक प्रबंधन, ब्लैक स्पॉट, यू-टर्न, साईन बोर्ड, यातायात नियमों के बारे में प्रचार-प्रसार करने, आपातकालीन सेवाओं के रिस्पॉन्स टाईम जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विस्तृत विचार-विमर्श कर संबंधित विभाग को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये गये। जिला कलक्टर ने सडक़ सुरक्षा एक्टिविटी पर फोकस रखते हुये हाईवे के मध्य अनाधिकृत समस्त कट्स एवं ब्लैक स्पॉट को चिन्हित करते हुये उन्हें बंद करने के निर्देश दिये। साथ ही सर्वे कर दुर्घटना संभावित स्थानों, अनाधिकृत पार्किंग को चिन्हित कर आवश्यक कार्यवाही करने को कहा। जिससे की सडक़ दुर्घटनाओं को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने सडक़ों की मरम्मत, नेशनल हाईवे पर आवश्यक स्थानों पर हैल्प लाईन नंबर प्रदर्शित करने, आईआरडीए एप पर दर्ज ब्लैक स्पॉट की स्थिति के संबंध में आवश्यक निर्देश प्रदान किये। उन्होंने स्थानीय आवश्यकता व दुर्घटना कारणों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विभागों को आपसी समन्वय से कार्ययोजना बनाकर कार्य करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने सडक़ सुरक्षा को बढ़ावा देने और दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा की। उन्होंने निर्देश दिए कि ट्रैफिक नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए और लोगों को जागरूक किया जाए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को हाईवे के मद्देनजर किसी प्रकार के हादसे की स्थिति से निपटने के लिए सदैव तैयार रहने के निर्देश दिए. उन्होंने मानसून से पहले सडक़ों की स्थिति में सुधार के प्रयासों में गति लाने को कहा। जिला पुलिस अधीक्षक ने संबंधित विभागों को दिशा-निर्देश दिए कि हाईवे पर निरीक्षण कमिटी द्वारा सर्वे कर नए दुर्घटना संभावित क्रॉसिंग पॉइंट्स व ब्लैक स्पॉट को चिन्हित कर सुधार करें, आवश्यक स्थानों पर फेंसिंग या अवरोधक, साइनेज बोर्ड, डिवाईडर, रिफ्लेक्टर, पिलर्स लगवाया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि एनएचएआई अधिकारी हाईवे, फ्लाईओवर आदि के निर्माण से पहले गहन सर्वे कर प्रस्ताव तैयार करें। जिससे भविष्य में ट्रैफिक की समस्या नहीं हो, हाईवे पर रात्रि में कार्य के दौरान दुर्घटना से बचने के लिए साइनेज लगवायें। उन्होंने कहा कि कागजी कार्यवाही के साथ जमीनी स्तर पर भी सुधार देखने के लिए संवेदनशीलता से कार्य करें, हाईवे के साथ-साथ एमडीआर, ग्रामीण सडक़ें व अन्य सडक़ मार्गों पर भी सर्वे कर दुर्घटना संभावित स्थानों का चयन कर संबंधित एजेंसियों को पाबंद करते हुए आवश्यक सुधार करें। हमारा उद्देश्य हर हाल में दुर्घटनाओं में कमी लाना है, इसके लिए त्वरित एक्शन प्लान की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि ट्रैक्टर, ट्रॉली, डंपर, ट्रक व अन्य माल वाहक वाहनों की पीछे विभिन्न विभाग कार्ययोजना बनाकर टीम के साथ रिफ्लेक्टर टेप लगवाना सुनिश्चित करें. पशुओं से होने वाले ऐक्सिडेंट में कमी लाने के लिए उनके सिंघियपर रिफ्लेक्टर टेप लगायें।

जिला कलक्टर ने दिखाई संवेदनशीलता, दिव्यांग का हाथों हाथ करवाया आवेदन, तत्काल जारी हुई पेंशन स्वीकृति

फिंगर प्रिंट ना आने के कारण नहीं मिल पा रहा था पेंशन योजना का लाभ

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) जिला प्रशासन आमजन की समस्याओं को लेकर संवेदनशील है। इसका उदाहरण गुरुवार को सामने आया जब जिला कलक्टर ने ना केवल महीपाल का पेंशन आवेदन करवाया बल्कि तत्काल स्वीकृत भी करवाया। महीपाल एक निर्धन एवं दिव्यांग व्यक्ति हैं अपने परिवार, पत्नी व तीन वर्षीय पुत्र के साथ जीवनयापन कर रहे हैं। लगभग दो वर्ष पूर्व उन्होंने सामाजिक सुरक्षा पेंशन हेतु आवेदन करने का प्रयास किया, परंतु फिंगर प्रिंट ना आने के कारण उनका आवेदन तकनीकी अड़चनों में उलझ गया। तहसील नीमराना के ग्राम कायसा के निवासी 38 वर्षीय महीपाल एक गंभीर दुर्घटना में अपनी उंगलियों के फिंगर प्रिंट गंवा चुके थे। फिंगर प्रिंट नहीं आने के कारण उन्हें सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा था। उन्होंने बताया कि महीनों तक उन्होंने ई-मित्र केन्द्रों, पंचायत समिति कार्यालयों और तहसील के चक्कर लगाये, लेकिन समाधान नहीं मिला। गुरुवार को उन्होंने अपनी समस्या को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल के समक्ष प्रस्तुत किया। जिला कलक्टर ने संवेदनशीलता के साथ उनकी बात सुनी और तत्काल आवश्यक कार्यवाही के निर्देश देते हुए पंचायत समिति नीमराना के विकास अधिकारी नरेन्द्र शर्मा एवं सहायक विकास अधिकारी ओमप्रकाश निर्मल को प्रकरण का त्वरित समाधान करने के निर्देश दिए। निर्देशानुसार सहायक विकास अधिकारी ने तत्परता दिखाते हुए महीपाल की पास के ई-मित्र केन्द्र पर जनआधार की ई केवाईसी प्रक्रिया करवाई। आधार, जनआधार एवं बैंक विवरण संकलित कर उनका सामाजिक सुरक्षा पेंशन आवेदन ना केवल स्वीकृत करवाया गया, बल्कि पेंशन स्वीकृति आदेश भी तत्काल जारी करवा दिया गया।

आगामी मानसून को लेकर जिला कलेक्टर ने दिए अधिकारियों को निर्देश

हरियालो राजस्थान को लेकर जिला कलेक्टर ने विभागवार लक्ष्य देकर, लिया तैयारियों का जायजा

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। शुक्रवार को जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में बीड़ा सभागार भिवाड़ी में हरियालु राजस्थान एवं आगामी मानसून में जल भराव से निपटने हेतु बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान उन्होंने आगामी मानसून की तैयारी एवं हरियालो राजस्थान के तहत सघन वृक्षारोपण करने हेतु सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने आगामी मानसून में भिवाड़ी जल भराव की समस्या से निपटने हेतू सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने बारिश के पानी को सड़कों पर ना बहने देने की व्यवस्था में रिचार्ज स्ट्रक्चर, प्राकृतिक स्रोत जैसे तालाब जोहड़ तथा भिवाड़ी में सभी नालियों कि साफ-सफाई एवं गाद निकालने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने नगर परिषद भिवाड़ी एवं रीको विभाग को इकट्ठा वर्षा जल को निकालने के लिए प्लान तैयार करने तथा तैयार किए प्लान के अनुसार भरे हुए पानी को जल्द से जल्द पंपसेट के माध्यम से निकाल रास्ते को सुचारु करने हेतु निर्देशित किया ताकि भिवाड़ी में जल भराव ना हो। बैठक में जिला कलेक्टर ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान हरियालो राजस्थान अभियान के तहत मियावाकी पद्धति सहित नवीनतम पौधारोपण तकनीकों का उपयोग करते हुए वृहद स्तर पर पौधारोपण करने के निर्देश दिए । उन्होंने कहा कि पौधारोपण केवल संख्यात्मक नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और दीर्घकालिक परिणाम देने वाला होना चाहिए। बैठक के दौरान वृक्षारोपण हेतु पौधों की उपलब्धता, नर्सरियों में प्लांटेशन, उनकी देखभाल हेतु तारबंदी, ट्री गार्ड व फेंसिंग, पानी की व्यवस्था, सीएसआर के माध्यम से पौधारोपण, किसानों एंव आमजन की सहभागिता पर चर्चा कर जिले को मिले 15 लाख पौधारोपण के लक्ष्यानुरूप विभागवार लक्ष्य देकर पौधारोपण करने के निर्देश दिए। बैठक में जिला कलेक्टर ने निर्देश दिए की जिले के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों, औद्योगिक क्षेत्रों के समीप और विद्यालय परिसरों में पौधारोपण किया जाए। साथ ही फंड से संसाधन उपलब्ध करवाकर पौधों के संरक्षण के लिए विशेष निगरानी तंत्र भी विकसित किया जाए। वन विभाग के अधिकारियों ने मियावाकी पद्धति की विशेषताएं बताते हुए उसे पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत लाभकारी बताया। बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीडा अतुल प्रकाश, अतिरिक्त जिला कलेक्टर भिवाड़ी सुमित्रा मिश्र, डीएफओ राजेंद्र हुड्डा, मुख्य स्टेकहोल्डर्स, औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि, वन विभाग सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जनता के हितों के लिए सरकार से सड़क पर नहीं टेबल पर करेंगे बात : जोगिंदर सिंह गवाना

राजस्थान में कई पूर्व विधायक और कई बड़े राजनेता आरएलडी को कर सकते हैं जॉइन, 2028 के विधानसभा चुनाव के लिए तीसरे बड़े राजनीतिक दल के रूप में आरएलडी को स्थापित करने की युद्ध स्तर पर तैयारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश में पिछली गहलोत सरकार में मंत्री रहे जोगेंद्र सिंह अवाना को आरएलडी की राजस्थान इकाई की जिम्मेवारी सौंप कर आरएलडी के दिल्ली दरबार के नेताओं ने राजस्थान में अपने दल को तीसरे बड़े राजनीतिक दल के रूप में स्थापित करने की तैयारी युद्ध स्तर पर शुरू कर दी हैं हालांकि अभी प्रदेश में विधानसभा चुनाव काफी दूर हैं लेकिन इससे पहले प्रदेश में पंचायत राज और नगर निकाय के चुनाव को देखते आरएलडी के रणनीतिकारों ने राजनीतिक चतुराई दिखाते हुए नदबई के पूर्व विधायक अवाना को पार्टी की राजस्थान इकाई का अध्यक्ष नियुक्त करके प्रदेश की राजनीति में उथल-पुथल से मचा दी है क्योंकि जोगिंदर सिंह अवाना को राजस्थान की राजनीति में एक ऐसे युवा नेता के रूप में माना जाता है जिन्होंने उत्तर प्रदेश से राजस्थान में आकर बहुत ही कम समय में अपने व्यवहार और काम करने की शैली से हर जाति और बिरादरी के लोगों में अलग मुकाम बनाया और 2018 की विधानसभा चुनाव में नदबई से चुनाव भी जीत बाद में गहलोत सरकार में राज्य मंत्री भी बने और विधायक रहने के दौरान अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए गहलोत सरकार से सबसे ज्यादा रुपए के बजट के काम स्वीकृत करवाए हालांकि जातिगत समीकरणों की वजह से यह बात अलग है कि 2023 का विधानसभा चुनाव हुए वे हार गए लेकिन उनकी जमीनी पकड़ अब भी पहले की तरह ही बनी हुई है क्योंकि देवनारायण बोर्ड का अध्यक्ष रहने के दौरान उन्होंने पूरे प्रदेश भर में दौरे किए थे और अपनी बिरादरी के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास भी किया इसलिए अब पूरे राजस्थान की राजनीति का गणित अवाना अच्छी तरह से समझ चुके हैं तथा बसपा के पूर्व विधायकों और कई बड़े नेताओं से उनके अब भी बहुत अच्छे राजनीतिक और व्यक्तिगत संबंध हैं इसलिए उन्हें राजस्थान में राष्ट्रीय लोक दल को मजबूती प्रदान करने में काफी मदद मिलेगी यही वजह है कि राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयंत चौधरी ने बड़ी उम्मीद और भरोसे के साथ अवाना को राजस्थान में पार्टी का अध्यक्ष मनोनीत किया है, इसी क्रम में गुरुवार को जयपुर में कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में राष्ट्रीय लोकदल के संगठन महासचिव त्रिलोक त्यागी और राष्ट्रीय लोकदल के राजस्थान प्रभारी मलूक नागर, विधायक और पूर्व मंत्री सुभाष गर्ग और अन्य नेताओं की मौजूदगी में आरएलडी के दिल्ली से आए नेताओं ने अवाना को राजस्थान इकाई के अध्यक्ष पद पर पार्टी का नियुक्ति पत्र सोपा, इस मौके पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए अवाना ने कहा कि आगामी जून माह तक पार्टी की प्रदेश कार्यकारिणी का गठन कर दिया जाएगा तथा अगले महीने से ही पूरे प्रदेश भर में लगातार.......दौर शुरू किए जाएंगे, इन प्रदेशव्यापी दोनों में आरएलडी की नीतियों, सिद्धांतों का प्रचार प्रसार किया जाएगा, आरएलडी प्रदेश के किसान, युवा, मजदूर महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए शुरू से ही कृत संकल्प हैं पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न से सम्मानित चौधरी चरण सिंह जिन्होंने हिंदुस्तान के किसान मजदूर और युवाओं के लिए जो संघर्ष किया उसे पूरी दुनिया जानती है इसलिए चौधरी चरण सिंह के सपनों को साकार करने के लिए राजस्थान के युवाओं को किसानों को महिलाओं को और मजदूरों को पार्टी से ज्यादा से ज्यादा जोड़ा जाएगा और आगामी विधानसभा चुनाव तक राजस्थान में आरएलडी को एक तीसरी सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में हर हाल में स्थापित किया जाएगा उन्होंने पत्रकारों के सवाल के जवाब में कहा कि केंद्र में जिस तरह से आरएलडी एनडीए सरकार का हिस्सा है ठीक उसी तरह से राजस्थान में भी प्रदेश की भाजपा सरकार के साथ प्रदेश की जनता के हितों के लिए सड़क पर नहीं बल्कि टेबल पर बातचीत के माध्यम से हर समस्या का समाधान निकालेंगे एक अन्य सवाल के जवाब में जोगेंद्र सिंह अवाना ने कहा कि प्रदेश में चाहे कोई सा भी चुनाव हो जहां तक गठबंधन की बात है यह विषय पार्टी हाई कमान से जुड़ा हुआ है केंद्र जिस तरह का निर्देश देगा ठीक उसी तरह से पार्टी की प्रदेश इकाई भी काम करेगी उन्होंने कहा कि पार्टी को संभाग, जिला, मंडल, ब्लॉक स्तर पर मजबूत किया जाएगा इसके लिए पार्टी के नेताओं की कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी निर्धारित की जाएगी टीमों का गठन किया जाएगा, संगठन को निचले स्तर पर मजबूत किया जाएगा घ एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अगले महीने जून माह में जयपुर में आरएलडी की एक बड़ी सभा आयोजित की जाएगी इस सभा को आरएलडी सुप्रीमो जयंत चौधरी भी संबोधित करेंगे घ उन्होंने कहा कि प्रदेश में पंचायत राज और नगर निकाय के चुनाव में भी आरएलडी अपने उम्मीदवार उतारेगी घ पत्रकारों से बातचीत के दौरान जोगेंद्र सिंह अवाना ने अपनी नियुक्ति के लिए जयंत चौधरी और आरएलडी के दिल्ली में बैठे सभी बड़े नेताओं का आभार प्रकट किया और कहा कि जयंत चौधरी ने जिस उम्मीद और भरोसे के साथ उन्हें यह जिम्मेदारी दी है उसे भरोसे और उम्मीद पर खरे उतरेंगे अवाना ने पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह और अजीत सिंह की भी खूब तारीफ की और कहा कि इस तरह के राजनेता कभी कबार ही पैदा होते हैं उन्होंने कहा कि आज भी हर किसान के दिल में चौधरी चरण सिंह और अजीत सिंह बसे हुए हैं उन्होंने केंद्रीय मंत्री और आरएलडी सुप्रीमो जयंत चौधरी को भी ऊर्जावान, निष्ठावान राजनेता हैं और वे भी अपने पिता और दादा की तरह देश के किसान, मजदूर और युवाओं के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं घ इस मौके पर आरएलडीके प्रवक्ता मनोज चौधरी राजेश गुर्जर देवी सिंह दोसा नरेंद्र भाटी सहित कई नेता मौजूद रहे ।

जयपुर में महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत के आरोपी को हाईकोर्ट से जमानत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जयपुर में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामले में आरोपी को राजस्थान हाईकोर्ट से जमानत मिल गई है। राजस्थान हाईकोर्ट जयपुर में आरोपी रमेशचंद ने अपने अधिवक्ता हरिराम गुर्जर के जरिए जमानत आवेदन पेश किया। उल्लेखनीय है कि जयपुर दक्षिण के सांगानेर थाने में हत्या का मुकदमा मकान मालिक और उसके परिचित रमेश व अन्य के खिलाफ दर्ज हुआ। अनुसंधान में मामला 306,201भादसं का अपराध आरोपी के खिलाफ आया। राजस्थान हाईकोर्ट में अधिवक्ता हरिराम गुर्जर ने बहस करते हुए कहा कि प्राथी को मामले में झूठा फसाया गया है, याची न तो मृतका के परिवार का सदस्य है और न ही रिश्तेदार। मृतका ने कोई सुसाइड नोट नहीं छोड़ा है। याचिकाकर्ता मृतका के घर आता जाता रहता था और उससे दोस्ती कर ली। पुलिस ने याची को झूठे कारण से लिप्त किया है कि वह मृतका से अन्य व्यक्ति के प्रेम संबध नहीं चाहता। याची ने घटना के तुरंत बाद मृतका को हॉस्पिटल पहुंचाया। सरकारी वकील ने भी जोरदार विरोध किया। इस पर दोनो पक्षों को सुनकर राजस्थान हाईकोर्ट जयपुर के न्यायाधीश प्रमिल कुमार माथुर ने याची के अधिवक्ता हरिराम गुर्जर की बहस से संतुष्ट होकर याची रमेशचंद गुर्जर को जमानत प्रदान की।

भारतीय सेना के सम्मान में 'सिंदूर शौर्य रैली', मातृशक्ति ने जताया आक्रोश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भारतीय सेना के सम्मान में शुक्रवार को मातृशक्ति की ओर से विधानसभा से अमर जवान ज्योति तक पैदल मार्च किया गया। इसके बाद मातृशक्ति द्वारा एक श्रृंखला बनाई गई और हमले में बलिदान हुए नागरिकों व जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित प्रॉक्सी संगठनों द्वारा किए गए आतंकी हमले के विरोध में अपना आक्रोश प्रकट किया। रैली में उपस्थित महिलाओं ने हाथों में तिरंगा लेकर नारों के साथ देशभक्ति का संदेश दिया। इस अवसर पर विंग कमांडर रेखा शेखावत ने कहा कि हमें गर्व है कि हम उस देश के नागरिक हैं जहां ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाता है। फिर वह पुलवामा हो या कारगिल। उन्होंने अपने सैन्य अनुभवों को साझा करते हुए भारतीय सेना की वीरता और समर्पण को नमन किया। शेखावत ने बताया कि उनके परिवार के कई सदस्य भारतीय सेना में सेवारत रहे हैं। उन्होंने नारी शक्ति को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। जहां हमारे समय में अवसर सीमित थे, आज की पीढ़ी के पास अनेक विकल्प उपलब्ध हैं। शहीद स्मारक पर उपस्थित महिलाओं ने कहा कि यह स्थल ऊर्जा और प्रेरणा से भरपूर है। मातृशक्ति के इस एकत्रीकरण में महिलाओं ने पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकियों के विरुद्ध भारतीय सेना की कार्रवाई को पूर्णतः उचित ठहराया। आतंकियों ने धर्म पूछकर सिंदूर उजाड़ा, लेकिन हमारी सेना ने उन्हें घर में घुसकर मारा। हम सेना और देश के नेतृत्व पर गर्व करते हैं।

भारतीय सेना में कार्यरत ले. कर्नल विजय वर्मा शौर्य चक्र से सम्मानित

कोटपूतली(निसं.)। निकटवर्ती ग्राम सांगटेड़ा निवासी भारतीय वायु सेना से सेवानिवृत फ्लाइंग ऑफिसर जगदीश प्रसाद वर्मा के पुत्र भारतीय सेना में कार्यरत ले. कर्नल विजय वर्मा को विगत 22 मई को भारत के राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा राष्ट्रपति भवन में शौर्य चक्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। ले. कर्नल विजय वर्मा ने वर्ष 2021-22 के दौरान जम्मू कश्मीर में सेवा देते हुये 10 आतंकवादी विरोधी अभियानों में शौर्य का परिचय देते हुये 22 आतंकवादियों को मार गिराया तथा अक्टूबर 2022 में जम्मू कश्मीर के शोंपिया जिले में आतंकवादियों द्वारा ग्रेनेड से उनकी बटालियन पर हमला करने पर अपने साथियों को बचाते हुये उस आतंकवादी को मार कर ढ़ेर कर दिया।

राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने सिरोही की पांच ग्राम पंचायतों में की जनसुनवाई, विकास कार्यों का किया लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने शुक्रवार को सिरोही जिले की पांच ग्राम पंचायतों का दौरा कर जनसुनवाई की और आमजन की समस्याओं को मौके पर ही सुना व उनके समाधान के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया। जनसुनवाई के दौरान राज्यमंत्री देवासी ने कहा कि राज्य सरकार आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गांवों में आधारभूत संरचना को मजबूत किया जा रहा है। विकास कार्यों के तहत ग्राम पंचायतों में पेयजल सुविधाओं का विस्तार, सीसी सड़कों का निर्माण, पुलिया निर्माण तथा पशुओं के लिए टीन शेड जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। राज्यमंत्री देवासी ने इन योजनाओं का लोकार्पण करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी विकास के लिए सरकार हर स्तर पर प्रयासरत है। जनसुनवाई में मौजूद ग्रामीणों को पट्टों का वितरण किया गया, साथ ही नाम शुद्धिकरण से संबंधित मामलों का त्वरित निस्तारण किया गया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं के समाधान पर संतोष जताया और राज्य सरकार, मंत्री ओटाराम देवासी व जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया। राज्यमंत्री का यह दौरा ग्रामीण विकास की दिशा में सरकार की सक्रियता और जवाबदेही का परिचायक बना।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही

7 हजार रुपये का किया कैरिंग चार्ज वसूल, 4 केन्टर सामान जब्त

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देषानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में शुक्रवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में नेशनल हैण्डलूम, नर्सरी सर्किल से आम्रपाली सर्किल तक व जैन अस्पताल एवं टैगोर पथ थड़ी मार्केट मानसरोवर से अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों के विरूद्ध 7 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल कर 4 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में नेशनल हैण्डलूम, नर्सरी सर्किल से आम्रपाली सर्किल तक व जैन अस्पताल एवं टैगोर पथ थड़ी मार्केट मानसरोवर से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 4 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर 7 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

शीघ्र ही मिलेगी स्पोर्ट्स एकेडमी की सौगात

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर द्वारा जल्द ही जयपुरवासियों को स्पोर्ट्स एकेडमी की सौगात दी जाएगी। जिसमें बच्चे, युवा, महिलाएँ आकर खेलों में अपना कौशल दिखा सकते हैं। शुक्रवार को नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय के ई.सी. मीटिंग हॉल में वार्ड नं. 150 में रवींद्र मंच के पास स्पोर्ट्स एकेडमी का शिलान्यास माननीय सांसद जयपुर शहर मंजू शर्मा व माननीय विधायक मालवीय नगर कालीचरण सर्राफ के कर-कमलों द्वारा किया गया। इससे पूर्व निर्माण शाखा से संबंधित कार्यां की समीक्षा बैठक महापौर डॉ सौम्या गुर्जर की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें वार्डों में किये जा रहे विकास कार्यों के सम्बन्ध में चर्चा की गई। महापौर डॉ सौम्या गुर्जर द्वारा वार्डां में किये जा रहे विकास कार्यां के संबंध में लगातार अधिकारियों के साथ बैठक कर उनकी प्रगति रिपोर्ट ली जा रही है। स्वस्थ जयपुर की तर्ज़ पर मालवीय नगर जोन में रवीन्द्र मंच के पास स्पोर्ट्स एकेडमी बनाया जाएगा। इस स्पोर्ट्स एकेडमी में पाँच प्रकार के खेलों के मैदान होंगे। जिसके अंतर्गत् बैडमिंटन के दो खेल मैदान, टेनिस के दो खेल मैदान, बास्केटबॉल का एक खेल मैदान, क्रिकेट बॉक्स के तीन खेल मैदान, वॉलीबॉल के दो खेल मैदान बनाए जाऐंगे।

बैठक में महापौर ने प्रत्येक वार्ड में कराए गए 50-50 लाख रुपये के विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ली। साथ ही रामनिवास बाग में स्पोर्ट्स एकेडमी विकसित करने, उद्यान के विकास कार्यों को करने, प्रगतिरत नाला सफाई, निगम मुख्यालय के कैंपस गार्डन एरिया में डबल बेसमेंट पार्किंग बनाए जाने की जानकारी भी ली।

चाकसू की बेटी अक्षिता खांडल ने जयपुर जिले में किया नाम रोशन

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं.) प्रदेश में गुरुवार को कक्षा 12 वीं के सभी वर्ग की परीक्षा के परिणाम घोषित होते ही छात्राओं में खुशी का ठिकाना नहीं रहा। ऐसे ही जयपुर जिले के चाकसू नेशनल हाईवे 52 पर स्थित गोस्वामी विद्या मंदिर इंग्लिश मीडियम की छात्रा अक्षिता खांडल ने कक्षा 12 वीं साइंस वर्ग में 98.60 प्रतिशत अंक कर स्कूल व परिवार जनों का नाम रोशन किया। जीवीएम स्कूल के प्रधानाचार्य आशीष गोस्वामी ने बताया कि एक और छात्रा भूमिका शर्मा ने साइंस वर्ग में 96.00 प्रतिशत अंक कर क्षेत्र का नाम रोशन किया। लोगों ने बताया कि ऐसी होनहार छात्रा ने चाकसू नहीं जयपुर जिले

में भी नाम रोशन किया है। अक्षिता खांडल ने अच्छे अंक प्राप्त करने के बाद लोगों ने माला पहनाकर व मुंह मिठा करवाकर बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

छात्राओं ने बताया कि इतने अच्छे अंक प्राप्त करने का श्रेय हमारे विद्यालय का स्टाफ व प्रधानाचार्य सहित अपने माता-पिता को देना चाहते हैं।

प्रत्येक घर तक जल पहुंचाने के लिए अधिकारी प्रभावी मॉनिटरिंग करें - जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री

सीकर जिले में जल जीवन मिशन और अमृत-2 योजना की प्रगति की समीक्षा की

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैयालाल ने शुक्रवार को सीकर कलेक्ट्रेट सभागार में जिले की जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक ली। इस दौरान उन्होंने जल जीवन मिशन और अमृत-2 योजना की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की और विभागीय कार्यों में और अधिक प्रगति लाने के निर्देश दिए। जलदाय मंत्री ने विभागीय अधिकारियों को जल जीवन मिशन और अमृत-2 योजना के तहत प्रभावी मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने और प्रत्येक घर तक जल पहुंचाने के लिए ठोस कदम उठाने को कहा। उन्होंने अधीक्षण अभियंता, सीकर को निर्देश दिए कि वे विधानसभावार उन गांवों की सूची तैयार करें, जहां अभी तक पानी की आपूर्ति नहीं हो पाई है। यह सूची संबंधित एसडीएम और क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों के साथ साझा की जाए साथ ही उन्होंने समन्वय के साथ कार्य करने और जल आपूर्ति में आ रही समस्याओं का त्वरित समाधान करने को कहा। उन्होंने जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा को जल जीवन मिशन के कार्यों की सख्त मॉनिटरिंग करने और किसी भी प्रकार की लापरवाही पर कठोर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही, जनप्रतिनिधि स्तर पर भी इन कार्यों की निगरानी सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने विशेष रूप से दांतारामगढ़, फतेहपुर, धोद और खंडेला जैसे जल की कमी वाले क्षेत्रों में प्रभावी मॉनिटरिंग और त्वरित कार्रवाई पर जोर दिया गया। जलदाय मंत्री ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जल जीवन मिशन की रूपरेखा तैयार की गई है, जिसका लक्ष्य अगले 30 वर्षों तक प्रत्येक घर में नल के माध्यम से स्वच्छ जल उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर ग्रीष्मकालीन आकस्मिक योजना के लिए जिलों की मांग के अनुसार पर्याप्त धनराशि आवंटित की गई है। उन्होंने ठेकेदारों की कार्यप्रणाली पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि जल जीवन मिशन के तहत कार्यों में लापरवाही बरतने वाले ठेकेदारों को ब्लैक लिस्ट किया जाए। साथ ही, आपणी योजना के तहत लक्ष्मणगढ़ और फतेहपुर में प्रोजेक्ट के तहत पानी की आपूर्ति की प्रगति रिपोर्ट 15 दिनों में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने पाइप लाइन बिछाने के बाद सीसी कार्य और उच्च गुणवत्ता की पाइप का उपयोग सुनिश्चित करने तथा ट्यूबवेल की गहराई बढ़ाने के लिए अतिरिक्त पाइप डालने के प्रस्ताव भिजवाने के निर्देश दिए। जलदाय मंत्री ने अमृत-2 योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही, राज्य सरकार की बजट घोषणाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में जिले के जनप्रतिनिधियों ने अपने क्षेत्रों में जल से संबंधित समस्याओं को मंत्री के समक्ष रखा। इस पर जिला कलेक्टर ने मुख्य अभियंता को निर्देश दिए कि आगामी सप्ताह में जल जीवन मिशन और अमृत-2 योजना से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की उपस्थिति में समीक्षा बैठक आयोजित की जाए।

महिला कामगारों को कम वेतन क्यों

कुछ दिन पहले पेरिस के प्रमुख प्रशासनिक और सांस्कृतिक कार्यालयों की महिला कर्मचारियों ने ठीक साढ़े चार बजे अपना काम रोका। यह विरोध जताने का उनका तरीका था। वे पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम वेतन मिलने की तरफ ध्यान खींचना चाहती थीं। दरअसल, एक नारीवादी न्यूजलेटर ने महिला कर्मचारियों का आह्वान किया था कि वे अपना काम रोक दें। पुरुष व स्त्री कर्मचारियों के बीच वेतन संबंधी असमानता को देखते हुए न्यूजलेटर ने कहा था कि 7 नवंबर के आगे बाकी बचे साल तक महिलाएं काम करती भी रहें तो यह एक तरह से 'स्वैच्छिक काम' होगा, क्योंकि उन्हें उतना वेतन कम मिलता है। जगह-जगह महिलाएं सड़कों पर उतरीं और उन्होंने समान वेतन की मांग की। यह बात भी रेखांकित करने वाली है कि फ्रांस में हुए ये प्रदर्शन आईसलैंड में 24 अक्तूबर को हुए ऐसे ही प्रदर्शनों की तर्ज पर थे, जहां हजारों महिलाओं ने उस दिन ठीक 2.38 बजे अपना काम रोका था ताकि उनके देश में पुरुषों व महिलाओं के वेतन के बीच चौदह फीसद की विषमता को उजागर किया जा सके।

यूरोप के देशों में समान काम के लिए समान वेतन नए सिरे से मुद्दा बन रहा है। अगर हम दुनिया के बड़े विकसित देशों की बात करें तो वहां भी हर स्तर पर महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन अभी सुनिश्चित नहीं किया जा सका है। याद रहे कि बराक ओबामा ने अमेरिका का राष्ट्रपति बनने के बाद जिस पहले विधेयक पर हस्ताक्षर किए थे, वह था 'इक्वल पे बिल' अर्थात समान वेतन कानून, और इसके लिए उन्होंने वाहवाही भी लूटी। उनका कार्यकाल समाप्ति की ओर है, मगर बताया जाता है कि अमेरिका में अब भी कई स्तरों पर गैर-बराबरी कायम है। वहां हाल यह है कि शुरुआत में यदि किसी नौकरी में बराबर के वेतन पर स्त्री-पुरुष की नियुक्ति हुई भी, तो बाद में धीरे-धीरे औरत का वेतन कम हो जाता है। वहां पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की कमाई 74 से 77 फीसद बताई जाती है। हार्वर्ड में एसोसिएट प्रोफेसर मारिको चांग के मुताबिक आमतौर पर महिलाएं तुलनात्मक रूप से कम वेतन वाले क्षेत्रों में काम करती हैं, लेकिन कहीं-कहीं समान हैसियत वाले क्षेत्रों में भी अंतर दिखाई देता है। यहां तक कि जिस काम में पारंपारिक रूप से महिलाओं का वर्चस्व रहा है उसमें भी जब पुरुषों ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया हो तो उन्हें अधिक पैसे मिलने लगे, जैसे नर्स।

अगर यूरोप व अमेरिका के पुरुषों तथा स्त्रियों में वेतन की इतनी गहरी असमानता है तो तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में स्थितियां कैसी होंगी। अगर वैश्विक स्तर पर 'जेंडर के आधार पर वेतन के अंतराल' की सूची में भारत ऊपर से छठे नंबर पर है तो अमेरिका सोलहवें नंबर पर। पिछले दिनों एक संस्था की तरफ से किए गए ऑनलाइन सर्वेक्षण के नतीजे भी इस मामले में गौरतलब हैं जिसमें उसने 16,500 कर्मचारियों से ऑनलाइन संपर्क किया था जिसमें 13,729 पुरुष थे तथा बाकी महिलाएं थीं और इन आंकड़ों को 2006 से 2011 के बीच इकट्ठा किया गया। सर्वेक्षण के मुताबिक इस कालखंड में वेतन में अंतराल चौवन फीसद था। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि यह अंतराल शिक्षा, पेशों, अधिक वेतन के साथ बदलता है। मसलन, स्वास्थ्य सेवा में यह अंतराल सबसे अधिक है, जबकि क्लीनर या ऐसे अन्य कामों में सबसे कम है। संविधान की विभिन्न धाराएं पुरुषों व महिलाओं के समान अधिकार और समान अवसर की बात कहती हैं। इतना ही नहीं, भारत सरकार ने कई अधिनियम बनाए हैं ताकि समान वेतन और कार्यस्थल पर सभी के साथ समान व्यवहार को सुनिश्चित किया जा सके। चाहे आप 1948 में बना न्यूनतम वेतन कानून देखें या कारखाना अधिनियम, 1948 पर गौर करें या या श्रमिक मुआवजा अधिनियम 1923 को देखें। इन सभी अधिनियमों के पीछे पुरुष व स्त्री कामगारों के बीच भेदभाव मिटाना ही रहा है। आप 1976 में बना समान वेतन अधिनियम देखें, जो सभी की खातिर समान काम के लिए समान वेतन की बात करता है, जिसे इसी खास मकसद से बनाया गया, क्योंकि बच्चों के प्रजनन और पालन में महिलाओं को असमान शारीरिक व सामाजिक दायित्व उठाना पड़ता है।

संविधान जो भी कहे, अब भी हम समान काम के लिए समान वेतन के लक्ष्य से दूर खड़े हैं। दरअसल, अब जरूरत इस बात को सुनिश्चित करने की है कि इसका कार्यान्वय न होना अपराध माना जाए, चाहे नियोक्ता निजी कंपनी हो या सरकार। हालांकि श्रम कानून के अंतर्गत बराबरी का प्रावधान है, लेकिन हर जगह जेंडर भेदभाव के लिए रास्ते निकाल लिये जाते हैं। दरअसल, ऐसे हालात तैयार करना भी सरकार और नियोक्ता की जिम्मेदारी बनती है जिनमें महिलाएं बराबर का काम कर भी सकें और उन्हें बराबर की सारी सुविधाएं मिलें। हमारे संविधान का अनुच्छेद 15 यह व्यवस्था देता है कि भारत का हर नागरिक लैंगिक तथा जातीय भेदभाव से मुक्त जीवन जीने का अधिकारी है। लेकिन यहां की महिलाएं आसानी से और धड़ल्ले से आर्थिक शोषण का शिकार होती आई हैं। असंगठित क्षेत्र में यह भेदभाव अधिक देखने को मिलता है। आज भी कुशल श्रमिक के रूप में महिलाएं कुल श्रमशक्ति में बराबर का हिस्सेदार नहीं बन पाई हैं। श्रम मंत्रालय की एक रिपोर्ट इस बात का खुलासा करती है। पिछली जनगणना के अनुसार महिला श्रमिकों की संख्या 12 करोड़ 72 लाख है जो उनकी कुल संख्या 49 करोड़ 60 लाख का चौथा (25.60 प्रतिशत) हिस्सा ही हुआ। इनमें भी अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और उनका प्रतिशत ऊपर दी हुई कुल महिला श्रमिकों की संख्या के तीन हिस्से से भी ज्यादा (87 प्रतिशत) कृषि संबंधी रोजगार में है। रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्र के रोजगार में अस्सी फीसद महिला श्रमिक घरेलू उद्योग, लघु व्यवसाय सेवा तथा भवन-निर्माण में लगी हैं। यों सरकार ने महिला श्रमिकों की स्थिति बेहतर बनाने के लिए कई कानून बनाए हैं, लेकिन व्यवहार में उनकी स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश को छोड़ कर, जहां क्रमशः महिला श्रमिकों की संख्या 11.90, 10.34 और तथा 10.07 फीसद है, अधिकतर राज्यों में कुल श्रमिकों की तुलना में महिला श्रमिक एक फीसद से भी कम हैं।

हर देश में पारिवारिक जिम्मेदारियां भी औरत के कैरियर में रोड़ा बनती रही हैं। यह भी कई बार कहा जाता है कि महिलाएं बाहर का चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए तैयार नहीं होतीं। आखिर किन कारणों से ऐसा होता है या क्या वाकई ऐसा होता भी है, यह पड़ताल का विषय है।महिलाओं के लिए सार्वजनिक दायरे में रोजगार उपलब्ध कराने की बात जब भी चलती है, तो एक अन्य अहम मुद्दा सामने आता है और वह है रात की पाली में स्त्री के काम करने का। निश्चित ही इस पर समाज में एकमत नहीं है। कुछ की राय होती है कि जब तक समाज में पूर्ण सुरक्षा का माहौल न बन जाए तब तक यह खतरा बना रहेगा

अगर यूरोप व अमेरिका के पुरुषों तथा स्त्रियों में वेतन की इतनी गहरी असमानता है तो तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में स्थितियां कैसी होंगी। अगर वैश्विक स्तर पर 'जेंडर के आधार पर वेतन के अंतराल' की सूची में भारत ऊपर से छठे नंबर पर है तो अमेरिका सोलहवें नंबर पर। पिछले दिनों एक संस्था की तरफ से किए गए ऑनलाइन सर्वेक्षण के नतीजे भी इस मामले में गौरतलब हैं जिसमें उसने 16,500 कर्मचारियों से ऑनलाइन संपर्क किया था जिसमें 13,729 पुरुष थे तथा बाकी महिलाएं थीं और इन आंकड़ों को 2006 से 2011 के बीच इकट्ठा किया गया। सर्वेक्षण के मुताबिक इस कालखंड में वेतन में अंतराल चौवन फीसद था। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि यह अंतराल शिक्षा, पेशों, अधिक वेतन के साथ बदलता है। मसलन, स्वास्थ्य सेवा में यह अंतराल सबसे अधिक है, जबकि क्लीनर या ऐसे अन्य कामों में सबसे कम है। संविधान की विभिन्न धाराएं पुरुषों व महिलाओं के समान अधिकार और

सम्पादकीय

कामकाज के आधार पर होता है पदोन्नति का निर्णय

सरकार का जोर सेना को युवा और ऊर्जावान बनाने पर है। साथ ही, सेना में महिलाओं की भूमिका भी बढ़ाई जा रही है। महिलाएं अब रफाल विमान तक उड़ा रही हैं। लेकिन अल्पकालिक सेवा कमीशन के तहत भर्ती हुई महिला अधिकारियों को बार-बार सुप्रीम कोर्ट तक दौड़ लगानी पड़ती है। यह बात गले नहीं उतरती कि जब कोई सैन्यकर्मी, चाहे वह महिला हो पुरुष-शारीरिक-मानसिक रूप से पूरी तरह सेवाएं देने के योग्य है और सेवा के दौरान उसके कामकाज और आचरण में किसी तरह की कमी नहीं पाई गई, तो उसे लंबी अवधि का सेवा विस्तार देने से क्यों परहेज किया जाना चाहिए। अल्पकालिक सेवा कमीशन के तहत भर्ती हुई एक महिला नौसेना अधिकारी को स्थायी कमीशन न दिए जाने पर सर्वोच्च न्यायालय ने गंभीर नाराजगी जाहिर की है। उस अधिकारी को स्थायी कमीशन देने का आदेश अदालत ने पहले ही दिया था, मगर उसका पालन नहीं किया गया। इसलिए भी अदालत की तल्खी बढ़ गई। महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन न दिए जाने पर लंबे समय से असंतोष है। शीर्ष अदालत ने 2020 में कहा था कि इस तरह महिला अधिकारियों को सेवा से वंचित करने से सेना का मनोबल गिरेगा। तब से नौसेना, वायुसेना और थलसेना को कई मामलों में स्थायी कमीशन देने के आदेश दिए जा चुके हैं। सेना नियमों के मुताबिक, अल्पकालिक कमीशन में चयनित अधिकारियों को उनके कामकाज के प्रदर्शन के आधार पर पदोन्नति और स्थायी कमीशन देने का निर्णय किया जाता है। मगर महिला अधिकारियों के मामले में इस पर अक्सर संकुचित दृष्टिकोण ही देखा जाता है। अभी सर्वोच्च न्यायालय में उनहत्तर ऐसे ही अधिकारियों का मामला लंबित है, जिस पर अगस्त में सुनवाई होनी है। अदालत ने कहा है कि अंतिम फैसला आने तक इन अधिकारियों को सेवामुक्त न किया जाए। इस तरह स्थायी कमीशन न मिल पाने के कारण महिला अधिकारियों की तरफ से लगातार मिल रही शिकायतों के मद्देनजर ही नौसेना अधिकारी के मामले पर फैसला देते समय सर्वोच्च न्यायालय ने फटकार लगाई। अदालत ने कहा कि अब बहुत हो गया, सेना के अधिकारी अपना संकुचित नजरिया त्यागें और उदारता का परिचय दें। इस फटकार और नसीहत को सेना और सरकार कितनी गंभीरता से लेते हैं, देखने की बात है। यह पहला मौका नहीं है, जब महिला सेनाधिकारियों को अदालत की मार्फत अपना हक हासिल करना पड़ा है। इसके पहले लड़ाकू विमान उड़ाने से महिलाओं को वंचित रखने के नियम को भी अदालत के आदेश पर ही बदला गया था। यह थोड़ी असहज करने वाली स्थिति है कि अनुशासित और मर्यादित मानी जानी वाली भारतीय सेना में महिलाओं की क्षमताओं और योग्यता को कम करके आंका जाता है। सेना में अनेक ऐसे काम हैं, जिनमें महिलाओं ने पुरुषों के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया है। जिस महिला नौसेना अधिकारी को स्थायी कमीशन देने से रोका गया, वह तो न्यायिक सेवा में है। चिकित्सा, कंप्यूटरीकृत सैन्य प्रणाली आदि में महिला अधिकारियों की कुशलता पर शक नहीं किया जा सकता। फिर, अनुभव बड़ी चीज होती है।

वाजिब फिक्र

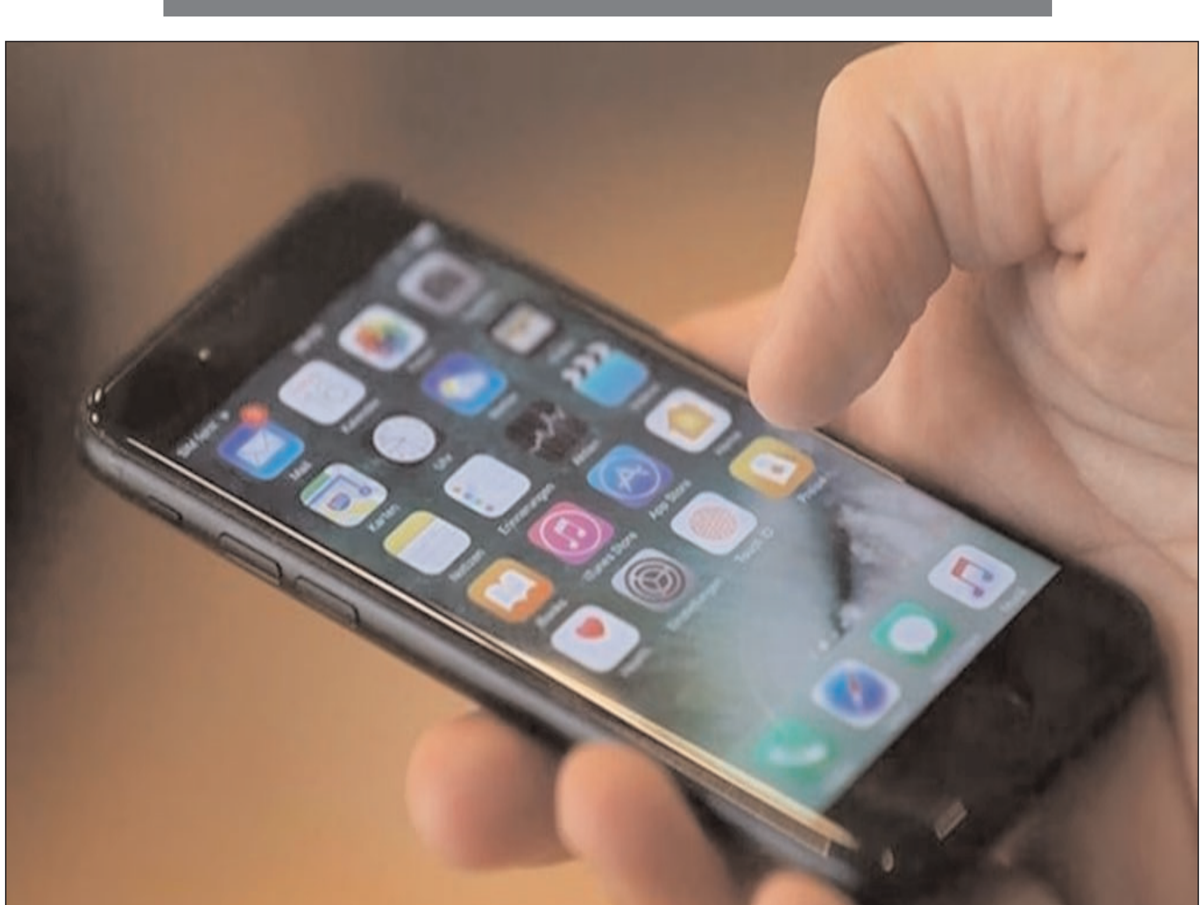

आज हर कोई जनता है कि दुनिया भर में तेजी से प्रचलित इंटरनेट मीडिया पर निरंतर अफवाहों, भ्रामक खबरों और अनर्गल सूचनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाता है या होता रहता है। फर्जी खबरें वर्तमान समय का रिवाज बन गई हैं। इसके कारोबार में व्यस्त लोग देश या समाज के प्रति अपनी जवाबदेही को नहीं समझते और न ही ऐसी विषैली खबरों को सुनने वाला वर्ग इस बारे में किसी सावधानी या सत्यता की जरूरत महसूस करता है। हद तो यह है कि देश में घर-घर और प्रत्येक परिवार में देखे जाने वाले टीवी चैनलों पर भी अनर्गल समाचारों और सूचनाओं का प्रसारण पूरी संवेदनहीनता से बेखौफ होकर किया जाता है। हालांकि हमारे देश में इस पर लगाम लगाने के लिए पर्याप्त कानून मौजूद हैं, पर उन पर अमल करने वाला या उनके प्रभावी परिपालन की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। वर्तमान दौर इंटरनेट मीडिया का है। लोग अब लाइन में खड़े होने के बजाय आनलाइन रहना ज्यादा पसंद करते हैं। यह सुविधाजनक भी है, लेकिन इसी सुविधा का नाजायज फायदा उठाते हुए देश में हजारों वेबसाइट्स कुकुरमुत्ते की तरह उग आए हैं। पहले जब हम खबरें पढ़ने के लिए समाचार पत्रों पर निर्भर थे, तब हम ऐसी सच्ची खबरों से रूबरू होते थे जो कई माध्यमों से छनकर हमारे पास पहुंचती थीं, लेकिन यह समय 'रियल टाइम खबरों' का है जहां पलक झपकते ही कोई फर्जी खबर लाखों लोगों को साझा कर दी जाती है, ट्वीट और रीट्वीट कर दी जाती है। इसी तीव्र गति के चलते कुटिल लोगों के अनर्गल निजी विचार या निजी प्रोपेगंडा को भी सच मान लिया जाता है। इंटरनेट मीडिया ने 'सार्वजानिक' और 'निजी' के अंतर को लगभग समाप्त कर दिया है। अभिव्यक्ति की आजादी का अपना महत्त्व है, पर इस स्वतंत्रता के नाम पर तथ्यों से छेड़छाड़ को किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता। इंटरनेट मीडिया का उपयोग करने वाला एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है, जो इस पर लिखी किसी भी बात को सत्य मान लेता है। अभी तक देश में ऐसा कोई स्पष्ट कानून नहीं है जो फर्जी खबरों को निषिद्ध करता हो, लेकिन कुछ ऐसे उपाय अवश्य हैं जिनसे इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। इसमें कोई शक नहीं है कि इंटरनेट मीडिया अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ ही नई जानकारी हासिल करने, सीखने और पढ़ने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आया है, लेकिन इसके उपयोग के साथ कुछ सावधानियां और समझदारी भी आवश्यक है। जैसे कि प्रत्येक जानकारी के स्रोत की पड़ताल 'गूगल' या 'फेसबुक' जैसे माध्यम से करना आदि।

खुशियों की राह

ऐसे में हम देखते हैं कि कई बार हमारी सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है। वहीं कई बार इससे उलटा हो जाता है। हम अपने आपको उदास और निरुत्साही-सा महसूस करने लगते हैं। न चाह कर भी कई बार हमें ऐसे विचारों को सुनना पड़ जाता है जो मन की शांति को तो भंग करते ही हैं, साथ ही स्वास्थ्य पर भी उनका विपरीत असर होने लगता है। कुछ गलत विचार हमें अपने लक्ष्य से भटकाने का काम भी कर जाते हैं। जीवन में आई विपरीत परिस्थितियां भी हमारे अंदर नकारात्मकता पैदा करती हैं।

मेरी दादी अक्सर एक कहावत का बहुत प्रयोग किया करती थीं। कहती थीं कि 'जैसा खाएं अन्न, वैसा बने मन'। काफी हद तक उनकी यह कहावत भोजन और उससे होने वाले प्रभाव के मापदंडों पर सही बैठती है। अब देखिए, जब हम गरिष्ठ और मिर्च-मसालेदार भोजन लंबे समय तक करते हैं तो कुछ समय बाद पेट में विकार उत्पन्न होने लगते हैं। नतीजतन, हम कुछ सुस्त और चिड़चिड़े-से हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी यह भी होता है कि जीभ का स्वाद बदलने के लिए चटपटा भोजन करते हैं तो मन प्रसन्न हो जाता है। शरीर का 'प्रोसेसिंग यूनिट' एकदम सीधा है। उसके अंदर हम जैसा 'इनपुट' डालते हैं, वह वैसा ही 'आउटपुट' वह हमें देने लगता है। हालांकि वह हमें अलग-अलग तरीके से सचेत जरूर करता रहता है। जब भी हम खाने-पीने में अति करने लगते हैं या फिर खान-पान में किसी प्रकार की कमी होने लगती है, तब हमारा शरीर हमें संकेत अवश्य देता है, ताकि हम अपनी जीवनशैली को वापस सही पटरी पर ले आएं। सही भोजन और व्यायाम करना तो फिर भी हमारे नियंत्रण में है, पर उन अवांछित विचारों का क्या किया जाए जो हमारे मन और मस्तिष्क पर अनचाहे गहरा असर छोड़ते जाते हैं और उसका प्रभाव हमारे शरीर पर भी दिखने लगता है। विषैले विचारों को भीतर प्रवेश करने से रोकना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। एक सामान्य व्यक्ति दिन भर में कई लोगों से मिलता-जुलता है और उस मुलाकात में एक दूसरे के विचारों और प्रभामंडल का परस्पर असर भी होता रहता है। ऐसे में हम देखते हैं कि कई बार हमारी सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है। वहीं कई बार इससे उलटा हो जाता है। हम अपने आपको उदास और निरुत्साही-सा महसूस करने लगते हैं। न चाह कर भी कई बार हमें ऐसे विचारों को सुनना पड़ जाता है जो मन की शांति को तो भंग करते ही हैं, साथ ही स्वास्थ्य पर भी उनका विपरीत असर होने लगता है। कुछ गलत विचार हमें अपने लक्ष्य से भटकाने का काम भी कर जाते हैं। जीवन में आई विपरीत परिस्थितियां भी हमारे अंदर नकारात्मकता पैदा करती हैं। लंबे समय के संघर्ष के बाद मिली असफलता के बाद आने वाली निराशा से जीवन में आए नकारात्मक विचार मनुष्य को निरंतर कमजोर बनाते हैं। हालांकि यह सब बाहरी वातावरण में घटित होने वाली चीजे हैं जो तब तक निष्प्रभावी हैं, जब तक कि हम उन्हें अपने भीतर प्रवेश न करने दें और शुरुआत में ही उनसे मुकाबला कर उन्हें परास्त कर दें। जिस तरह शारीरिक बीमारियों से बचने के लिए हमारे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होनी चाहिए और उसे मजबूत रखने के लिए हम नियमित उचित आहार और पौष्टिक तत्त्व उसे देते रहते हैं, उसी तरह मानसिक दृढ़ता और मनोबल के लिए भी हमेशा अपने मानसिक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखा जाना जरूरी है। दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल से काफी हद तक असाध्य रोगों को भी परास्त किया जा सकता है। जरूरी नहीं कि हर समय हमारे आसपास ऐसे लोग मौजूद रहें जो हमें सकारात्मक ऊर्जा देते रहेंगे। जरूरी यह है कि खुद के लिए हम खुद दिनभर की ऐसी खुराक तैयार करें जो हमे सकारात्मक और ऊर्जावान बनाए रख सके। मसलन, हम सुबह 'मेडिटेशन' या फिर कोई प्रेरणास्पद किताब के कुछ पन्नों से अपने दिन की शुरुआत कर सकते हैं। यह भी सच है कि स्वयं से अधिक प्रेरणा हमें और कौन दे सकता है! इसलिए अपनी बार-बार आलोचना करने की आदत से हमें परहेज करना चाहिए। छोटे-छोटे प्रयास और सफलता पर खुद ही अपनी पीठ थपथपा लेने में कोई बुराई नहीं है। दूसरों से प्रशंसा और स्वीकृति पाने के लिए पूरे समय निरर्थक प्रयास करते रहने को लक्ष्य बनाने में तो कई बार हम खुद ही निराशा का रास्ता अनायास खोल देते हैं। एक अच्छा तरीका यह है, जिससे हम खुद को ऊर्जावान बनाए रख सकते हैं- अपने आप को 'सेकंड पर्सन' की तरह देखना। अक्सर हम दूसरों की देखभाल बहुत अच्छे से करते हैं। मुसीबत के समय उन्हें सही राय भी दे पाते हैं। लेकिन जब अपनी बात आती है तो कई वजहों से अपना नकारात्मक तरीके से अवलोकन करने लगते हैं या फिर हम खुद को प्राथमिकताओं की सूची में सबसे निचले पायदान पर रख देते हैं। यही वजह होती है कि महत्त्वपूर्ण समय निकल जाता है

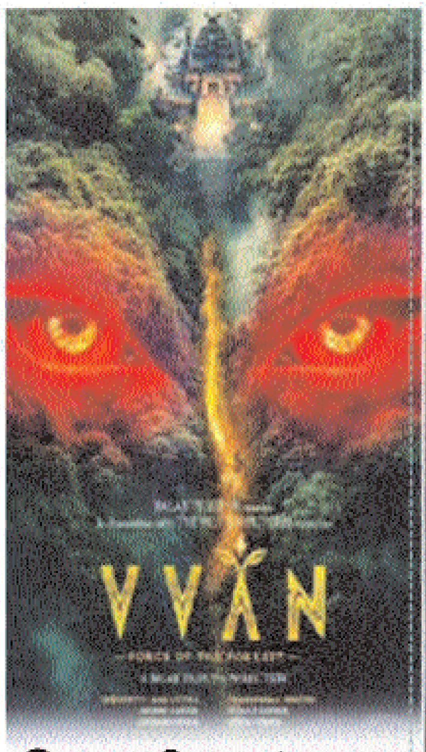

सिद्धार्थ मल्होत्रा-तमन्ना भाटिया की वीवन की रिलीज डेट आई सामने

पौराणिक थ्रिलर फिल्म 'वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट' उर्फ वीवन की रिलीज डेट की आधिकारिक घोषणा कर दी गई है। हाल ही में मेकर्स ने वीवन का टीजर रिलीज किया था, जिसमें फिल्म की स्टार कास्ट के चेहरे नहीं बल्कि उनके नाम जरूर जाहिर किए थे। वहीं आज रिलीज डेट के सामने आने से फैंस बेहद खुश हैं।

वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट की रिलीज डेट

बाला जी मोशन पिक्चर्स ने आज इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए फिल्म 'वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट' की रिलीज डेट से पर्दा उठा दिया है। इस पोस्ट के साथ पोस्टर वही पुराना है, लेकिन कैप्शन नया है। कैप्शन में लिखा- जंगल फुसफुसा रहा है। 15 मई, 2026 को बल का प्रदर्शन किया जाएगा! बड़े परदे पर रोमांच के लिए तैयार हो जाइए! आगे फिल्म की स्टार कास्ट और बाकी जानकारी देते हुए लिखा है- अभिनीत सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया। फिल्म के निर्देशक अरुणभ कुमार और दीपक मिश्रा करेंगे। यह फिल्म बालाजी मोशन पिक्चर्स द्वारा निर्मित है। VVAN- फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट 15 मई, 2026 को रिलीज होगी।

फिल्म का टीजर

हाल ही में एकता कपूर की प्रोडक्शन कंपनी बाला जी मोशन पिक्चर्स ने इंस्टाग्राम पर इसका टीजर रिलीज किया था और कैप्शन में लिखा- भारतीय पौराणिक कथाओं और रहस्यवाद पर आधारित, वीवन- फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट इतिहास और लोककथाओं के पन्नों से सीधे एक कहानी सामने लाता है। आपका स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। इस शक्तिशाली कथा के लिए — अपने आप में एक ताकत, जो पहले कभी नहीं देखी गई स्क्रीन पर कमान संभालने के लिए तैयार है। बॉलीवुड निर्माता प्रज्ञा कपूर ने लाल दिल वाले इमोजी बनाए हैं। वहीं फैंस ने भी कमेंट कर फिल्म के लिए अपनी राय दी है। एक फैन ने लिखा, इसके लिए 1 साल तक इंतजार करना पड़ेगा, एक और फैन ने लिखा, बहुत उत्साहित हूं, एक और फैन ने लिखा, हमें 1 साल इंतजार करना होगा, ठीक है आपके लिए कुछ भी, एक और फैन ने लिखा, इस फिल्म के लिए बहुत उत्साहित हूं। मैं इस हॉरर फिल्म का और सिद्धार्थ और तमन्ना की केमिस्ट्री का इंतजार कर रहा हूं।

जब निर्देशक ने हुमा से कहा कम उम्र वाले किरदार करो

अभिनेत्री हुमा कुरैशी ने बॉलीवुड में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर खुलकर अपनी बात रखी है। हुमा ने चुनौतियों के बावजूद अपने करियर को अपनी शर्तों पर आगे बढ़ाने के अपने फैसले पर जोर दिया है। उन्होंने बताया कि बॉलीवुड में हमेशा से एक गेटकीपिंग रही है, और यह किसी एक व्यक्ति या एजेंसी से नहीं आती। यह गेटकीपिंग सामूहिक रूप है।

मायूस नहीं हैं हुमा

बातचीत में हुमा ने कहा बॉलीवुड में एक बाहरी और एक महिला के तौर पर मेरा करियर बहुत आसान नहीं रहा है। आज के दिन भी कई कमरे हैं, जहां तक मेरी पहुंच नहीं है। कई रोल्स हैं जो मैं निभा सकती हूं लेकिन लोग मुझे नहीं बुलाते। तो मैं क्या करती हूं? क्या मैं घर पर बैठ कर रोती हूं और ये कहती हूं कि मुझे मौका नहीं मिला? क्या मैं इसका रोना रोती हूं?

कम उम्र का किरदार निभाने पर दबाव

हुमा कुरैशी ने एक कास्टिंग डायरेक्टर से जुड़ी घटना का जिक्र किया जिसने उन्हें बड़ी महिलाओं के किरदान निभाने से मना किया औ इसके बजाए युवा किरदार निभाने का आग्रह किया। हुमा कुरैशी ने बताया महारानी और तरला की कामयाबी के बाद, एक कास्टिंग डायरेक्टर ने मुझे फोन करके कहा आप बहुत खूबसूरत महिला हैं। आप इन किरदारों को निभाकर खुद को बूढ़ा क्यों दिखा रही हो? ऐसे बहुत से दूसरे निर्माता हैं जो आपके साथ काम करना चाहते हैं। कम उम्र के किरदार निभान की कोशिश करें। हुमा ने आगे कहा मैंने सोचा कम उम्र के किरदार निभाने का बोझ हमेशा लड़कियों पर ही क्यों पड़ता है? हमसे क्यों उम्मीद क्यों की जाती है कि हम अपनी उम्र से कम उम्र की दिखने की कोशिश करें?

हुमा कुरैशी की लोगों को सलाह

हुमा ने आगे कहा मैंने पेड़ों के पास नाचने गाने का अपना काम किया है, लेकिन अगर कोई बढ़िया स्क्रिप्ट मेरे पास आती है, तो क्या मुझे सिर्फ इसलिए मना कर देना चाहिए क्योंकि मैं अपने से कुछ साल बड़े किसी किरदार को निभाने से डरती हूं? कुरैशी ने इस बात पर जोर दिया कि महिलाएं या तो कॉस्मेटिक सर्जरी करवा सकती हैं और किरदार के लिए इंतजार कर सकती हैं या अच्छी स्क्रिप्ट पेश करने वाले फिल्म निर्माताओं के साथ सक्रिय रुप से सहयोग का विकल्प चुन सकती हैं।

स्पेशल ऑप्स 2 में फिर हिम्मत सिंह का रोल प्ले करेंगे केके मेनन

नी रज पांडे की पॉपुलर स्पाई सीरीज स्पेशल ऑप्स का दूसरा सीजन वापसी करने वाला है। इस सीरीज का टीजर रिलीज किया गया। केके मेनन एक बार फिर से हिम्मत सिंह का रोल इस सीरीज में निभाएंगे। हिम्मत सिंह की टीम में भी पुराने लोग ही नजर आएंगे, जो इंटरनेशनल लेवल पर फैल चुके आतंकवाद से मिलकर लड़ेंगे। इस बार सीरीज में प्रकाश राज की एंट्री भी हुई। उन्हें टीजर में देखकर विलेन वाली फीलिंग आती है। लेकिन अभी स्पष्ट नहीं है कि उनका किरदार किस तरह का होगा। दर्शक इस बार इस सीरीज को जियोहॉटस्टार पर देख सकते हैं। स्पेशल ऑप्स 2 की रिलीज डेट की अभी घोषणा नहीं की गई लेकिन जल्द ही मेकर्स इसकी जानकारी भी देंगे।

शादी के बाद भी साथ नहीं रहते सुरभि ज्योति और सुमित सूरी? एक्ट्रेस ने बताई वजह

टीवी की दुनिया की जानी मानी अभिनेत्री सुरभि ज्योति ने हाल ही में अपनी शादीशुदा जिंदगी को लेकर एक खुलासा किया है। पिछले साल ही दोनों शादी के बंधन में बंधे थे। अभिनेत्री ने बताया कि दोनों पति-पत्नी घर में अभिनेत्री सुरभि ज्योति न इंटरव्यू के दौरान बताया कि उन्हें और उनके पति सुमित को वर्क फाम होम करना पड़ता है, इसलिए वो अलग-अलग कमरे में रहते हैं। एक्ट्रेस ने कहा, 'सुमित घर से काम करता है और मैं भी घर से ही काम करती हूं, जब मेरी शूटिंग नहीं होती है। हमें बाहर जाने का कोई शौक नहीं है, हम घर पर रहकर बहुत खुश हैं। हमारे घर में, हमारे पास पसंद के अलग-अलग कमरे हैं।'

क्यों रहते हैं दोनों अलग?

सुरभि ज्योति ने आगे बात करते हुए बताया कि वह दोनों क्यों अलग रहते हैं। उन्होंने कहा, 'ये इसलिए है क्योंकि सुमित अपनी जिंदगी में ज्यादातर समय पर अकेला ही रहा है। मेरे साथ भी ऐसा ही है, यह हम दोनों का आपसी फैसला था। यह तोड़ा अजीब है, लेकिन ऐसा होता है।' साथ ही उन्होंने बताया, 'मेरी अपनी अलमारी, अपना वार्डरोब, अपना बाथरूम और मेरी अपनी जगह है। कभी-कभी वह अपने कमरे में होता है, तो कभी मैं अपने कमरे में। फिर भी, हम साथ हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि हम एक ही सोच रखते थे। मैं यह नहीं कह रही हूं कि यह एकमात्र तरीका है जिससे आप एक-दूसरे को स्पेस दे सकते हैं, लेकिन हां। हम ऐसा ही कर रहे हैं।

'द रॉयल्स' में ट्रोल हुईं भूमि ने दिया था करारा जवाब

बॉलीवुड एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर इन दिनों अपने नए शो 'द रॉयल्स' को लेकर चर्चा में हैं। नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई इस वेब सीरीज को दर्शकों से कुछ खास प्रतिक्रिया नहीं मिली है और अब सोशल मीडिया पर इस शो को लेकर तरह-तरह की टिप्पणियां की जा रही हैं। भूमि इन दिनों अपने लुक्स को लेकर भी सुर्खियों में हैं। खासकर भूमि की लिप्स को लेकर लोग जमकर ट्रोल कर रहे हैं। अब इस पर अभिनेत्री ने जवाब दिया है।

भूमि के होंठों पर यूजर्स ने किया कमेंट

शो 'द रॉयल्स' में भूमि पेडनेकर और ईशान खट्टर की जोड़ी को लेकर यूजर्स का कहना है कि दोनों के बीच केमिस्ट्री की कमी है और स्क्रीनप्ले काफी कमजोर और सतही है। सोशल मीडिया पर एक यूजर ने यहां तक लिख दिया, 'भूमि के होंठ इस शो में उनसे ज्यादा एक्टिंग कर रहे हैं।' वहीं एक दूसरे ने तंज कसते हुए कहा, 'लगता है उनके होंठों की स्क्रीन प्रेजेंस भूमि से भी ज्यादा है।'

भूमि का पुराना इंटरव्यू हो रहा वायरल

इस बढ़ते विवाद के बीच भूमि का रेडिट पर एक पुराना वीडियो फिर से वायरल हो गया है। यह वीडियो साल 2017 के एक इंटरव्यू का है, जहां भूमि के साथ राजकुमार राव और आयुष्मान खुराना भी नजर आए थे। इस दौरान उन्होंने अपने लुक्स को लेकर होने वाली आलोचना पर खुलकर बात की थी।

भूमि ने ट्रोल्स को दिया था करारा जवाब

भूमि ने इस इंटरव्यू में कहा था, 'एक बार किसी ने मुझे कहा था कि मेरे होंठ बहुत बड़े हैं। मैंने कहा, इसमें दिक्कत क्या है? लोग लाखों रुपए खर्च करते हैं ऐसे लुक्स पाने के लिए।' उन्होंने इसके साथ ही यह भी जोड़ा कि लोग कुछ भी बोल सकते हैं, लेकिन हमें खुद को लेकर कॉन्फिडेंट रहना चाहिए। इसी इंटरव्यू में राजकुमार राव और आयुष्मान खुराना ने भी शेयर किया था कि करियर की शुरुआत में उन्हें भी लुक्स को लेकर लोगों की काफी बातें सुननी पड़ी थीं।

नेटफ्लिक्स के शो 'द रॉयल्स' के बारे में

नेटफ्लिक्स पर 9 मई को रिलीज हुई 'द रॉयल्स' सीरीज में ईशान-भूमि के अलावा जीनत अमान, नोरा फतेही, चंकी पांडे, साक्षी तंवर, डिनो मोरिया और मिलिंद सोमन जैसे बड़े कलाकार भी देखने को मिल रहे हैं।

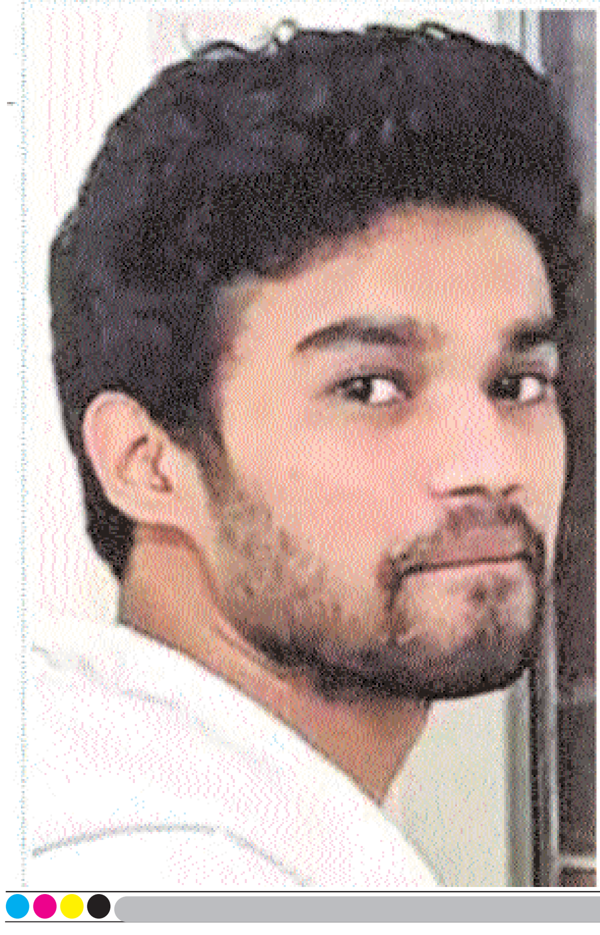

बाबिल खान ने करियर से लिया ब्रेक

कुछ समय पहले ही बाबिल खान का एक वीडियो वायरल हो गया था, जिसमें वो रोते-बिलखते फिल्म इंडस्ट्री को अपशब्द कह रहे थे। इसके कुछ देर बाद बाबिल की टीम ने सफाई दी थी कि उनके बयान का गलत अर्थ निकाला गया है। इस पर फिल्ममेकर साई राजेश भड़क गए। उन्होंने बाबिल को फटकार लगाई, तो दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। अब विवादों के बीच बाबिल ने अनाउंस कर दिया है कि वो फिल्मों से ब्रेक ले रहे हैं। इतना ही नहीं उन्होंने साई राजेश की फिल्म भी छोड़ दी है। बाबिल खान ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से फिल्म से हटने पर कहा है, काफी हिम्मत, जुनून और आपसी सम्मान के साथ मैंने और साई राजेश सर ने इस जादुई यात्रा में कदम रखा था। दुर्भाग्य से अलग तरह की स्थिति पैदा होने के चलते चीजें वैसी नहीं हुईं, जैसा सभी ने प्लान किया था। क्योंकि मैं कुछ समय का ब्रेक ले रहा हूं, इसलिए मैं साई राजेश सर और उनकी टीम को इस सफर के लिए शुभकामनाएं देता हूं। मैं जानता हूं कि हमारे बीच बहुत प्यार है और हम भविष्य में जल्द ही मिलेंगे और मैजिक क्रिएट करेंगे।

वहीं दूसरी तरफ साई राजेश ने भी बाबिल के फिल्म से हटने की ऑफिशियल अनाउंसमेंट कर दी है। उन्होंने लिखा है, मैं जितने भी एक्टर्स से मिला हूं, बाबिल उनमें से सबसे हार्डवर्किंग और टैलेंटेड एक्टर हैं, लेकिन मुझे रियलिटी की ये दुर्भाग्य बात को अपनाना ही होगा। फिल्म की तैयारी के दौरान बाबिल के साथ समय बिताने का मौका मिला, इतने टेलेंटेड एक्टर के साथ काम करके बहुत खुश था। मैं हमेशा उन्हें अपने सामने परफॉर्म करते हुए देखने के एक्सपीरियंस को संजो कर रखूंगा। मुझे अपने हीरो की याद आएगी। मैं खुद की देखभाल करने के लिए उनके फैसले का सम्मान करता हूं और उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं और ढेर सारा प्यार भेजता हूं। मुझे पता है कि हम दोनों मिलकर वो जादू जरूर बनाएंगे।

सरेआम हुई थी बाबिल-साई राजेश की बहस

दरअसल कुछ समय पहले ही बाबिल का एक वीडियो वायरल हो गया था, जिसमें वो बुरी तरह रोते हुए फिल्म इंडस्ट्री के लिए अपशब्द कह रहे थे। इसके बाद उनकी टीम की तरफ से स्टेटमेंट जारी कर बताया गया था कि बाबिल तारीफ कर रहे थे, लेकिन उनके शब्दों को गलत तरह लिया जा रहा है। इस स्टेटमेंट के बाद साई राजेश ने एक पोस्ट शेयर कर लिखा, क्या आपको लगता है कि हम इतने भोले हैं कि चुपचाप निकल जाएंगे। हमारे साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि जिन लोगों के नाम आपने वीडियो में लिए हैं, वही बस इज्जत के हकदार हैं और बाकी हम सब मूर्ख हैं, जो आपके बुरे समय में आपके साथ खड़े रहे। सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्होंने आपके लिए पोस्ट की, इसलिए आप उन्हें वैल्यू दे रहे हैं और बाकी सबको इग्नोर कर रहे हैं। अगर ऐसा है तो हम भी माफी के हकदार हैं। फिल्ममेकर के बयान पर बाबिल ने कमेंट कर लिखा, इस बात का जिक्र नहीं करना चाहिए कि मैंने अपनी आत्मा को कितना दर्द और पीड़ा में डाला, गंदगी में जीया, सिर्फ ये सुनिश्चित करने के लिए कि सर साई राजेश किरदार से खुश हैं। लेकिन अब ठीक है। अब मेरा काम बात करेगा। अलविदा। मेरी दाढ़ी में कीड़े थे, क्योंकि आपको वो किरदार ऐसा ही चाहिए थे। मैंने खुद आंसू लेकर उन्हें खुशी दी। मैंने उनके लिए कलाई तक काट ली।

वायरल हुआ बाबिल का वीडियो, बॉलीवुड को कहे अपशद

कुछ समय पहले बाबिल खान का एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें उन्होंने इंडस्ट्री के लिए अपशब्द कहे। उन्होंने कहा, बॉलीवुड बहुत रूड है। बॉलीवुड सबसे सबसे ज्यादा फेक है। सबसे फेक इंडस्ट्री जिसका मैं हिस्सा रहा हूं। यहां कुछ लोग हैं जो बॉलीवुड को बेहतर बनाना चाहते हैं। मैं आपको बहुत कुछ दिखाना चाहता हूं। बहुत कुछ। मेरे पास आपको देने के लिए बहुत कुछ है। ये कहते ही बाबिल फूट-फूटकर रोने लगे। रेडिट में पोस्ट किए गए इन वीडियोज के साथ दावा किया जा रहा है कि बाबिल ने ये वीडियो इंस्टाग्राम पर पोस्ट किए थे। हालांकि कुछ ही देर बाद ये वीडियो हटा दिए गए। इसी के साथ बाबिल का इंस्टाग्राम अकाउंट भी बंद कर दिया गया था। हालांकि रविवार शाम को उन्होंने इंस्टाग्राम पर वापसी कर दोबारा पोस्ट करना शुरू कर दिया है।

परिवार ने जारी किया था ऑफिशियल स्टेटमेंट

वीडियो वायरल होने के बाद बाबिल खान की टीम और परिवार की तरफ से एक जॉइंट स्टेटमेंट जारी किया गया है। स्टेटमेंट में कहा गया है, बाबिल मेंटल हेल्थ पर खुलकर बात करते रहते हैं। उन्हें भी कभी बुरा महसूस करने की आजादी है, ये भी उनका बुरा दिन था। हम सबको तसल्ली देना चाहते हैं वो अब सेफ हैं और जल्द ठीक हो जाएंगे। साथ ही स्टेटमेंट में कहा गया है कि बाबिल ने इंडस्ट्री या अर्जुन कपूर-अनन्या पांडे के लिए अपशब्द नहीं कहे, बल्कि वो उनकी तारीफ कर रहे थे।

प्राकृतिक तरीकों से करें जुकाम का उपचार

सर्दियों में नजला-जुकाम होना आम है, पर इससे निजात पाना कई बार आसान नहीं होता।

कुछ घरेलू उपचार के तरीके

सुहागे को तवे पर फुला कर बारीक पीस कर शीशी में भर लें।

नजला-जुकाम होने पर आधा ग्राम (बच्चों के लिए आधी मात्रा) गरम पानी के साथ दिन में तीन बार लें। पहले दिन से आराम आना शुरू हो जाएगा।

विशेष: सुहागे को फुलाने या खील बनाने के लिए सुहागे को बारीक कूट कर लोहे की साफ कड़ाही में या तवे पर डालें और तेज आंच में इतना पकाएं कि पिघलने के पश्चात सूख जाए। यह धीरे-धीरे फूलने लगेगा। फूलने के बीच लोहे की छुरी से इसे उलट-पुलट करते रहें। सारा सुहागा फूलने के बाद पीस लें।

काली मिर्च और बताशा

सात काली मिर्च और सात बताशे पाव भर जल में पकाएं। चौथाई रहने पर इसे गरमागरम पी लें और सारा शरीर ढक कर दस मिनट तक लेट जाएं। सुबह खाली पेट और रात सोते समय दो दिन प्रयोग करें। जुकाम के अलावा खांसी, ठंडी हवाएं और शरीर के दर्द में भी आराम मिलता है। ज्वर सहित जुकाम होने पर साथ तुलसी की पत्तियां भी काढ़ा बनाते समय डाल दें और यह काढ़ा दिन में दो बार लें।

तुलसी की चाय

ताजा तुलसी की पत्तियां 7 से 11 तक (अथवा छाया में सुखाई गई तुलसी की पत्तियों का चूर्ण एक ग्राम या चौथाई चम्मच), ताजा अदरक दो ग्राम (या सूखी सौंठ का चूर्ण आधा ग्राम), काली मिर्च (कुटी हुई) सात नग तीनों वस्तुओं को 200 ग्राम उबलते हुए पानी में दो मिनट उबालें। फिर नीचे उतारकर दो मिनट ढक दें। अब छानकर इसमें उबला हुआ दूध 100 ग्राम और मिश्री या चीनी एक-दो चम्मच डालकर गरम-गरम पी लें। पांच-दस मिनट सो जाएं।

इससे सर्दी का सिर दर्द, नाक में सर्दी, जुकाम, श्वास नली में सूजन एवं दर्द (ब्रोन्काइटिस), साधारण बुखार, मलेरिया, फ्लू आदि रोग दूर होते हैं। बच्चों को चाय में आधी मात्रा दें। दिन में दो बार आवश्यकतानुसार दो-तीन दिन लें। गले के रोगों और श्वसन प्रणाली की झिल्ली पर स्वास्थ्यकर प्रभाव डालने की तुलसी में अद्भुत क्षमता है। जमा हुआ कफ ढीला होकर निकल जाता है।

जुकाम में नाक बंद होना

10 ग्राम अजवायन को एक साफ कपड़े की पोटली में बांध कर तवे पर गर्म कर लें। फिर इसे बार-बार सूंघने से जुकाम में आराम होता है, बंद नाक खुल जाती है, गाढ़ा पानी निकल जाता है व सिर का भारीपन मिट जाता है।

छाती का दर्द/पसली चलना

अजवायन एक चम्मच को 250 ग्राम पानी में उबालें, चौथाई शेष रहने पर काढ़े को छान कर रात को पीकर सो जाएं। दिन में दो बार नियमित पीने से 5-7 दिन में छाती का दर्द चला जाता है। यह काढ़ा दो चम्मच की मात्रा से दिन में दो बार कुछ दिन देने से पसली चलना भी ठीक होता है।

कड़वा करेले के कई फायदे

करेले के कड़वेपन की वजह से भले ही ज्यादा लोग इसे नापसंद करते हों लेकिन इसमें कई एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन होते हैं जो हमें निरोगी बनाए रखने में खासे मददगार साबित हो सकते हैं। इसमें अधिक मात्रा में विटामिन-ए, बी और सी होते हैं। यह कैरोटीन, बीटाकैरोटीन, ल्यूटीन, आयरन, जिंक और मैग्नीशियम से भरपूर होता है। इससे चेहरे के दाग-धब्बे, मुंहासे व त्वचा रोगों में लाभ होता है।

क्या है ये हाइलैंडर सिंड्रोम

हाइलैंडर सिंड्रोम सुनने में तो काफी अजीब बीमारियों की ही तरह लगता है, लेकिन ये सिंड्रोम वाकई ही अजीब और विरला है। इस सिंड्रोम से पीड़ित किसी व्यक्ति की उम्र बेहद ज्यादा हो जाने के बाद भी वह किसी बच्चे जैसा ही दिखाई पड़ता है। हालांकि हाइलैंडर सिंड्रोम पर अभी भी शोध हो रहे हैं और इसके बारे में अधिक जानकारी जुटाने का प्रयास किया जा रहा है। कोरिया के होमिन शिन हाइलैंडर सिंड्रोम से पीड़ित हैं।

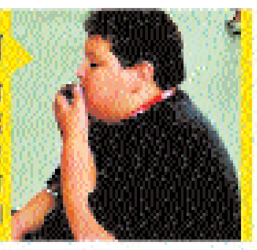

स्वास्थ्य की कुंजी है आपके हाथों में

आज की तेज रफ्तार जीवन-शैली में खुद को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी हो गया है। आप कुछ मूलभूत बातें ध्यान में रखें और समय समय पर डॉक्टर से रूटीन चेकअप कराते रहें तो कई बीमारियों से सुरक्षित रह सकते हैं।

स्वस्थ शरीर के कुछ मूलभूत पैमाने होते हैं, जिन्हें परख कर आप अपने स्वास्थ्य की जांच कर सकते हैं और भविष्य में होने वाली किसी बड़ी बीमारी या उसके खतरे से खुद को बचाए रख सकते हैं।

कितना हो आपका वजन

किसी भी व्यक्ति का आदर्श वजन उसके मसल्स, मोटापे आदि पर निर्भर करता है। आदर्श वजन होने का अर्थ यह नहीं है कि हर स्थिति में व्यक्ति के शरीर का वजन भी एक जैसा रहे, बल्कि समय व परिस्थिति के मुताबिक वजन में परिवर्तन होते रहना स्वाभाविक है। आदर्श वजन में आपकी उम्र और लंबाई के आधार पर आपका कुछ निश्चित वजन होना चाहिए।

शोध के अनुसार

आपके आदर्श वजन के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक बीएमआई यानी बॉडी मास इंडेक्स को माना जाता है। इसके अनुसार एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए 23 से 30 बीएमआई तक रखा गया है। 23 से कम अंडरवेट और 30 से अधिक बीएमआई को ओवरवेट की श्रेणी में रखा गया है। अंडरवेट यानी कम वजन होने पर आपके पूरे शरीर की कार्यशैली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। याददाश्त कम होती है। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण हो जाती है। ओवरवेट होने की स्थिति में मोटापा, हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना, उच्च रक्तचाप, जोड़ों में दर्द और लिवर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

हीमोग्लोबिन की कमी

हमारे शरीर में हीमोग्लोबिन का सही स्तर होना बहुत जरूरी है। हीमोग्लोबिन की कमी से आप एनीमिया और कुपोषण की चपेट में आ सकते हैं। महिलाओं में हीमोग्लोबिन का स्तर 12 से 16 के बीच होना चाहिए, जबकि पुरुषों में 14 से 18 के बीच। शरीर में हीमोग्लोबिन के निर्माण का कार्य आयरन ही करता है, जो शरीर के अंगों को सुडौल और शरीर को स्वस्थ रखता है। इसलिए शरीर में आयरन संतुलित मात्रा में होना चाहिए। आयरन की कमी या अधिकता दोनों ही शरीर के लिए हानिकारक साबित हो सकती है। हीमोग्लोबिन की कमी से थकान होना, सांस फूलना, हाथ-पैरों में सूजन आदि की समस्या होती है। इससे रोगप्रतिरोधक क्षमता कम होती है और एनीमिया हो सकता है।

कोलेस्ट्रॉल का नियंत्रण जरूरी

शरीर में अतिरिक्त वसा जहां नुकसान देती है, वहीं वसा की कमी के कारण कई सेल्स और हार्मोंस बनने बंद भी हो सकते हैं। हमारे शरीर में दो तरह के कोलेस्ट्रॉल होते हैं, जिन्हें गुड कोलेस्ट्रॉल यानी एचडीएल और बैड कोलेस्ट्रॉल यानी एलडीएल की श्रेणी में रखा गया है। एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर का एलडीएल 130 से नीचे और एचडीएल महिला में 40 से ज्यादा और पुरुष में 50 से ज्यादा होना चाहिए।

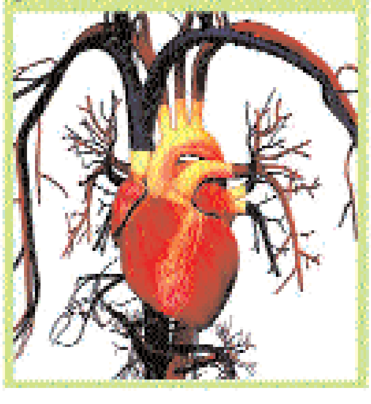

रक्तचाप रहे नियंत्रित

स्वस्थ व्यक्ति का रक्तचाप नियंत्रण में रहना बहुत जरूरी है। स्वस्थ शरीर का ऊपरी रक्तचाप यानी सिस्टोलिक 130 और नीचे का रक्तचाप यानी डायस्टोलिक 80 होना चाहिए। ये दोनों रक्तचाप कम या ज्यादा हों तो उच्च या निम्न रक्तचाप की स्थिति होती है।

ध्यान दें

उच्च रक्तचाप की स्थिति में व्यक्ति को हाइपरटेंशन, हार्ट प्रॉब्लम, किडनी रोग, नर्व सिस्टम पर बुरा असर, मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव, आई साइट कम होना और सिरदर्द जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। निम्न रक्तचाप में घबराहट, पसीना आना, कमजोरी, सिरदर्द, चक्कर आने जैसी समस्याएं दिखाती हैं।

सही पॉश्चर दूर कर सकता है आपके दर्द

जो लोग कम्प्यूटर पर लगातार काम करते हैं, उन्हें अमूमन बैक पेन, कलाई या कमर के दर्द की शिकायत हो जाती है। ऐसा न हो, इसके लिए जरूरी है कि कुछ सावधानियां बरती जाएं।

कुर्सी से चिपकी रहे पीठ

कम्प्यूटर के सामने बैठते वक्त हमारी पीठ एकदम सीधी हो। खासतौर से हमारी रीढ़ की हड्डी। वह कुर्सी से पूरी तरह से चिपकी हुई हो। कुर्सी पर इस तरह से बैठें कि रीढ़ की हड्डी और कुर्सी के बीच जगह न बचे। कोशिश करें कि हिप्स तक का हिस्सा कुर्सी से चिपका हुआ हो।

स्ट्रेट गर्दन, स्ट्रेट चेहरा

हमारी गर्दन भी स्ट्रेट होनी चाहिए। कई लोग गर्दन को आगे की ओर निकाल लेते हैं, यह गलत है। गर्दन कंधों से ऊपर होनी चाहिए। कई लोग गर्दन को कंधे के बीच में धंसा लेते हैं। यह भी गलत है, इससे भी समस्या हो सकती है। इसी तरह से यह भी ध्यान रखें कि चेहरा बाहर की ओर निकला हुआ न हो। चेहरा सामान्य अवस्था में होना चाहिए। अगर चेहरा कंधों से बाहर निकला है तो गर्दन पर दबाव पड़ेगा, जो अच्छा नहीं है।

सीधी रखें अपनी कलाई

अगर आप कलाई के दर्द से बचना चाहते हैं तो कोशिश करें कि हाथ माउस या कीबोर्ड की दिशा में एकदम सीधा हो। अगर आप उसे कोहनी से मोड़कर रखेंगे तो आपकी कलाई में दर्द होने की पूरी संभावना है।

फुटरेस्ट पर रखें पैर

ये भी कोशिश करें कि आपकी कुर्सी के आगे फुट सपोर्ट या सपोर्टिंग स्टूल हो, जिस पर आप पैरों को फैला कर रख सकें। पैरों को 90 डिग्री के कोण पर रखते हुए काम करने से पैरों में दर्द हो सकता है।

शरीर के पास रखें हाथ

हाथ और कोहनी को शरीर के पास रखें, ताकि शरीर को पूरा सपोर्ट मिल सके। शरीर और हाथ के बीच दूरी होगी तो मांसपेशियों में दर्द हो सकता है

स्टैमिना की स्पेशल डायट

मॉडर्न लाइफस्टाइल में चाहे कामकाजी युवा हो, स्टूडेंट हो या हाउसवाइफ सब शरीर की औसत शक्ति से ज्यादा मेहनत करते हैं। इसीलिए एक्स्ट्रा स्टैमिना की जरूरत होती है। एक्स्ट्रा स्टैमिना तब मिलता है, जब हम उसके लिए स्पेशल डायट लें। जो लोग इस पहलू को नहीं समझते, वे कई तरह की शिकायतों का सामना करते हैं। मसलन छोटे-छोटे काम करके ही थक जाते हैं। सीढ़ियां चढ़ने पर सांस चढ़ने लगती है। कई बार समस्या इतनी बढ़ जाती है कि लोग अचानक से चक्कर खाकर गिर जाते हैं या बेहोश हो जाते हैं। ऐसी कौन सी चीजें हैं, जिन्हें नियमित रूप से खाने से हमारी स्टैमिना पावर बढ़ जाती है।

विटामिन सी

ऐसे फलों का नियमित सेवन करना चाहिए, जिनमें विटामिन सी पाया जाता हो। एक्सपर्ट मानते हैं कि अंगूर ऐसे फलों में बेस्ट हैं। अंगूर से न सिर्फ शरीर में एनर्जी बनती है, बल्कि दिन भर एनर्जी का संतुलित लेवल शरीर में बना रहता है।

विटामिन बी: अनाज तो हम सब खाते हैं। अगर हम ऐसे अनाज खाएं, जिनमें विटामिन बी अच्छी मात्रा में हो तो हमारा स्टैमिना और अच्छा हो सकता है।

गेहूं की घास: दूध में गेहूं की छोटी घास मिला कर खाएं तो यह भी हेल्दी नाश्ता माना जाता है। कहते हैं कि इसमें सब्जियों के मुकाबले 25 गुना अधिक पौष्टिक तत्व होते हैं।

ओट

ओट का सेवन हम सुबह या शाम के नाश्ते में कर सकते हैं। ओट पानी या दूध के साथ मिला कर खाया जाता है।

मूंग की दाल

मूंग की दाल हम उबाल कर या तल कर खा सकते हैं। इसे सलाद के रूप में भी खा सकते हैं। इसका सूप बना कर पी सकते हैं।

स्क्वैश

फलों से बने स्क्वैश पीने से भी शरीर में हारमोंस और ब्लड शुगर का लेवल ठीक रहता है। स्क्वैश और जूस में यह अंतर होता है कि जूस केवल रस होता है, जबकि स्क्वैश में फलों का पल्प भी होता है, जिससे ये ज्यादा पौष्टिक होते हैं।

बेहद खतरनाक है फोबिया

यदि आपका डर आपके लिए सजा बन जाए तो यह आपके लिए खतरे की बात है, क्योंकि आपको मात्र डर नहीं है बल्कि आप फोबिया से ग्रस्त हैं। फोबिया केवल डर ही नहीं, एक गंभीर बीमारी है, जो आपके पूरे जीवन को प्रभावित कर सकती है।

क्या है फोबिया?

फोबिया एक प्रकार का रोग है, जिसमें इंसान को किसी खास वस्तु, कार्य एवं परिस्थिति के प्रति भय उत्पन्न हो जाता है। इसमें व्यक्ति उन चीजों से बचने की कोशिश करता है। फोबिया में अपने डर की सोच भी व्यक्ति को इतना डरा देती है कि उसकी मानसिक व शारीरिक क्षमताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसमें इंसान का डर वास्तविक या काल्पनिक दोनों हो सकते हैं। आमतौर पर किसी भी तरह के फोबिया से ग्रस्त रोगी अपने डर पर पर्दा डाले रहते हैं। उन्हें लगता है कि अपना डर दूसरों को बताने से लोग उन पर हंसेंगे। इसलिए वे अपने डर व उस परिस्थिति से सामना करने की बजाय बचने की हर संभव कोशिश करते हैं।

कैसे-कैसे फोबिया

चाइल्डहुड फोबिया

यह फोबिया बचपन से होने वाला फोबिया है। इसमें बचपन में ही किसी चीज, व्यक्ति, जानवर या परिस्थिति के प्रति डर बैठ जाता है, जो वक्त के साथ खत्म न होने पर फोबिया बन जाता है। यह डर या तो बच्चों में खुद होता है या कई बार अभिभावक ही बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए किसी चीज से डरा देते हैं। वैसे तो यह डर उम्र के साथ खत्म हो जाता है, लेकिन कई बार जब यह डर बड़े होने पर भी नहीं जाता तो फोबिया का रूप धारण कर लेता है। इसलिए बच्चों को डराने की बजाय प्यार से समझाने की कोशिश करें।

एडल्टहुड फोबिया

कुछ डर वयस्क होने के बाद पैदा होते हैं। इनका प्रभाव सबसे ज्यादा यंग जनरेशन पर पड़ता है। एडल्टहुड फोबिया में कई तरह के फोबिया शामिल होते हैं।

एग्रोफोबिया

एग्रोफोबिया एक तरह का फोबिक डिसऑर्डर है, जो यह अपने साथ कई अन्य परेशानियां भी लाता है। इनमें डिप्रेशन, डर तरह की बेचैनी आदि प्रमुख हैं। एग्रोफोबिया में व्यक्ति को बिना किसी कारण के ही डर लगता है। यह डर किसी चीज, व्यक्ति, जानवर या परिस्थिति से जुड़ा हुआ न होकर खुद के प्रति ही होता है। एग्रोफोबिया का मरीज अकेलेपन से डरता है। वह भीड़ में खड़ा होकर भी खुद को अकेला ही महसूस करता है। वह कहीं अकेले जा नहीं सकता, अकेले रह नहीं सकता। उसे लगता है कि वह किसी भी परिस्थिति का सामना नहीं कर सकता। ऐसे लोगों का आत्मविश्वास न के बराबर होता है। ऐसे लोग अकेले बाहर न जा सकने के कारण खुद को घर में ही कैद कर लेते हैं।

फोबिया के लक्षण

फोबिया के रोगी आम लोगों की तरह ही दिखाई देते हैं। वैसे तो इस रोग का पता नहीं चल पाता है, लेकिन फोबिया के रोगियों का अपने डर से सामना होने और अपने डर के बारे में बात करने पर इसके लक्षण सामने आते हैं। आमतौर पर फोबिया के रोगी अपने डर से दूर ही रहते हैं, लेकिन अनजाने में अपने डर को अपने सामने देखकर उन्हें फोबिया का दौरा पड़ता है। ऐसे में उनमें तनाव, बेचैनी, पसीने आना, परिस्थिति या लोगों से दूर भागना, सिर में भारीपन, कानों में अलग-अलग आवाजें सुनाई देना, दिल की धड़कन बढ़ जाना, सांस तेज होना, डायरिया, चक्कर आना, शरीर में कहीं भी दर्द को महसूस करना, पेट खराब हो जाना, ब्लड प्रेशर बढ़ना या कम हो जाना जैसी दिक्कतें दिखाई देती हैं। फोबिया का दौरा पड़ने पर रोगी में इस तरह के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। ऐसे में रोगी बहुत ज्यादा पैनिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में रोगी के साथ किसी भी तरह की जबरदस्ती उसके लिए खतरनाक हो सकती है। जबरदस्ती करने से रोगी और भी ज्यादा पैनिक हो जाता है और उसका डर कोई भी भयावह रूप ले सकता है।

उपचार

फोबिया के इलाज के लिए कोई एक खास ट्रीटमेंट नहीं होता है। हर मरीज का फोबिया और उसकी परिस्थिति अलग-अलग होती है, इसलिए फोबिया का इलाज भी मरीज और उसके डर के अनुरूप ही किया जाता है। डॉक्टर बताते हैं कि फोबिया के इलाज के लिए दवाएं, काउंसलिंग, मनोवैज्ञानिक थेरेपी का इस्तेमाल किया जाता है। फोबिया के ट्रीटमेंट के लिए रोगी के थायरॉयड, ब्लड शुगर, डायबिटीज आदि की जांच करना भी जरूरी होता है।

कुछ आम फोबिक डर

- बंद जगह में डर लगना
- अंधेरे में डर लगना
- ज्यादा ऊंचाई वाली जगह में डर लगना
- भीड़भाड़ वाली जगह में डर लगना
- कहीं बाहर जाने का डर
- चूहा, छिपकली, मकड़ी जैसे छोटे-छोटे जीवों का डर
- मरने का डर
- बिजली की चमक, गड़गड़ाहट और तेज बारिश से डर
- पानी से डर

बड़े डर की आशंका खतरे को बढ़ा देती है

ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने चिंता और डर के रहस्य को खोलने की कोशिश में कई महत्वपूर्ण बातों का पता लगाया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, किसी भी तरह के खतरे पर दिमाग की प्रतिक्रिया खतरे की दूरी, दिशा और खतरे के अनुमान पर निर्भर होती है। रिसर्च में पता चला है कि दिमाग के भय नेटवर्क के विभिन्न हिस्से अलग-अलग खतरे पर अलग-अलग प्रतिक्रिया के लिए जिम्मेदार होते हैं। शोध टीम का नेतृत्व करने वाले डीन मोब्स का कहना है कि दिमाग में सिर्फ एक ढांचा नहीं होता, बल्कि भय नेटवर्क के अलग-अलग अंग होते हैं और वे डर पर होने वाली प्रतिक्रिया को दिखाने के लिए मिलकर काम करते हैं। खतरे का गलत अंदाजा लगाने की भूल ही लोगों में फोबिया के बढ़ने का कारण होती है। किसी चीज, लोग, जानवर और परिस्थितियों से बेतुका, गहन और लगातार भय ही फोबिया कहलाता है। मोब्स का कहना है कि बड़े डर की आशंका ही दिमाग में खतरे के आकार को बढ़ा देती है।

सोशलफोबिया

युवाओं में पाया जाने वाला सबसे आम फोबिया है। इस फोबिया के शिकार आमतौर पर स्कूल और कॉलेज जाने वाले युवा होते हैं। सोशल फोबिया के शिकार लोग किसी भी सार्वजनिक स्थान पर जाने से, वहां बोलने से, वहां खाने से भी डरते हैं। इस फोबिया में सबसे ज्यादा स्पीकिंग कम्युनिकेशन की समस्या होती है।

मोनो जाइगोटिक ट्वीन्स फोबिया

यह एक तरह का जेनेटिक फोबिया होता है, जो जुड़वा बच्चों को ही होता है। इसमें अगर एक बच्चा किसी फोबिया का शिकार है तो दूसरा बच्चा भी उसी फोबिया से ग्रस्त होगा। सभी ट्वीन्स के साथ ये समस्या नहीं होती है, लेकिन फिर भी आमतौर पर ट्वीन्स के साथ इस तरह की शिकायत देखी गई है।

रेसिपी

कोकोनट पछड़ी

सामग्री

- 3/4 कप ताजा दही, फेंटा हुआ
- 1/3 कप ताजा कसा हुआ नारियल
- 2 टी-स्पून बारीक कटी हुई हरी मिर्च
- 1/2 टी-स्पून बारीक कटा हुआ अदरक
- नमक स्वादअनुसार
- 2 टी-स्पून नारियल का तेल/ अन्य तेल
- 1/4 टी-स्पून सरसों
- 7 से 8 कड़ी पत्ते

विधि

दही, नारियल, हरी मिर्च, अदरक और नमक को साथ में परोसने के बाउल में अच्छी तरह मिला लें। एक तरफ रख दें। तड़के के लिए, एक छोटे पैन में तेल गरम करें और सरसों डालें। जब बीज चटकने लगें, कड़ी पत्ते डालकर, मध्यम आंच पर कुछ सेकन्ड तक भुन लें। तड़के को दही-नारियल के मिश्रण के ऊपर डालकर अच्छी तरह मिला लें। तुरंत परोसें।

गोंद के लड्डू

सामग्री

- 3 टेबल-स्पून गोंद
- 4 1/2 टेबल-स्पून घी
- 1 1/4 कप गेहूं का आटा
- 1/2 कप पीसी हुई शक्कर
- 1/2 टी-स्पून इलायची पाउडर
- घी, तलने के लिए

विधि

एक चौड़े नॉन-स्टिक पैन में 31/2 टेबल-स्पून घी गरम करें, गेहूं का आटा डालकर, मध्यम आंच पर, लगातार हिलाते हुए 6 मिनट तक भुन लें। पूरी तरह ठंडा करने के लिए रख दें। एक गहरी नॉन-स्टिक कढ़ाई में तलने के लिए घी गरम करें और गोंद के फूलने तक तल लें। तेल सोखने वाले कागज पर निकाल लें। पीसी हुई शक्कर, तले हुए गोंद, इलायची पाउडर, बचा हुआ 1 टेबल-स्पून घी और भुने हुए आटे को एक गहरे बाउल में अच्छी तरह मिला लें। मिश्रण को 15 भाग में बांटकर गोले बना लें। परोसें या हवा बंद डब्बे में रखकर संग्रह करें।

मंत्री कुमावत ने सुमेरपुर के विभिन्न गांवों में विकास कार्यों का किया शिलान्यास

सरकार विकास कार्यो के लिए प्रतिबद्ध- कुमावत

जयपुर टाइम्स

पाली(निसं.)। कैबिनेट मंत्री पशुपालन एवं विधायक जोराराम कुमावत ने आज शुक्रवार को पाली जिले के सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रो में विकास कार्यों का शिलान्यास और उद्घाटन किया। मंत्री कुमावत ने खिवांदी ,बांकली और सलोदरिया गांव में विभिन्न उद्घाटन एव शिलान्यास कार्यक्रम में भाग लिया। कैबिनेट मंत्री कुमावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि विधानसभा क्षेत्र में विकास की कोई कमी नहीं रखूंगा, ग्रामीणों की समस्याये उपखंड स्तर पर ही समाधान की जा रही है।साथ ही पानी बिजली सड़क संबंधी अनेक विकास कार्य करवाये जा रहे है साथ ही इनसे संबंधित समस्याओं को भी दूर किया जा रहा है। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी कालूराम कुम्हार समेत प्रशासक सरपंच एवं ग्रामीण मौजूद थे।

सिलिकोसिस पीड़ितों के साथ धोखाधड़ी करने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। पुलिस थाना बिजौलियां द्वारा सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ितों के साथ धोखाधड़ी करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। विगत 20 मई को सिलिकोसिस जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों पर कार्यवाही करते हुए आरोपी डूंगरसिंह व योगराज को गिरफ्तार किया। थानाधिकारी लोकपाल सिंह ने बताया कि आरोपी सिलिकोसिस बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों को सरकार से मिलने वाली सहायता राशि दिलाने के नाम पर खाली चैक ले लेते थे। सरकार द्वारा जब सिलिकोसिस पीड़ितों के खाते में सहायता राशि डाली जाती तब उस राशि का अधिकांश हिस्सा चैक द्वारा आरोपी, पीडितों को बिना बताए ही उनके खातों से निकाल लेते थे।दोनों आरोपी कई वर्षों से बिजौलियां व क्षेत्र में सक्रिय हैं।

पक्षियों के लिए लगाए 16 परिंडे व चूगा पात्र

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मीतासर में 16 परिंडे व चुग्गा पात्र लगाए गए। इस अवसर पर संस्था प्रधान ओमप्रकाश स्वामी ने कहा कि भीषण गर्मी में बेजुबान पक्षियों के लिए पानी व चुग्गे की व्यवस्था करना पुण्य का कार्य है। स्काउट मास्टर बाबूलाल स्वामी ने बताया कि विद्यालय के स्काउट गाइड की टोली बनाकर प्रतिदिन परिंडों में पानी व चुग्गा डालने की जिम्मेदारी दी गई। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक अरुण कुमार शर्मा, समाजसेवी भंवर सिंह राजपुरोहित, भैराराम नायक, गाइड जसोदा माली, ललिता माली, आइना, सीताराम, लक्ष्मण, अशोक, बाबूलाल, रामचंद्र माली आदि ने सहयोग प्रदान किया।

नुक्कड़ सभा में दी सीवरेज की जानकारी

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। आरयूआईडीपी के एक्सईएन आरडी गर्ग के निर्देशन में वार्ड संख्या एक व 9 में उस्मानिया मस्जिद के पास पार्षद मोहम्मद अब्बास गौरी की अध्यक्षता में शुक्रवार को नुक्कड़ सभा आयोजित की गई। जनसहभागिता इकाई के प्रवीणसिंह राठौड़ ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को सीवरेज व ड्रेनेज परियोजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही सीवरेज के घरेलू कनेक्शन के रखरखाव के बारे में बताया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को स्नानघर, रसोई में जाली लगाने के लिए प्रेरित किया। सीवरेज कनेक्शन से कोई भी घर वंचित न रहे इसके लिए लोगों को जागरूक किया। इस मौके पर मुश्ताक खां, अब्दुल लतीफ, सलीम खान, मुगल शेख, क्यूम काजी सहित कई लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आरजीआई कंपनी के मनीष नवल ने किया।

तालाब में भीषण गर्मी से घटा जल स्तर मछलियों पर छाया संकट

तालाब सुखा देख जीव दया पर दानदाताओं को दया आई पानी डलवाने की शुरुआत हुई तेज

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। नगर के तखतगढ़ रोड़ स्थित सिंह प्रस्थ तालाब में इस भीषण गर्मी में घटते पानी जल स्तर से मछलियों के जीवन पर उत्पन्न संकट को देखते हुए गुरूवार को नवभारत सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट, मुस्कराहट के साथ सेवा के भाव से एवं भारतीय रेडक्रोस सोसायटी की प्रेरणा से ट्रस्ट सदस्यों व भामाशाहों द्वारा 21 पानी के टैंकर डलवाए गए। ट्रस्ट सचिव डॉ. कमलेश कुमार व मदन प्रजापत ने बताया कि हमारे ट्रस्ट के संस्थापक व अध्यक्ष व रेडक्रोस सोसायटी के चार्टर अध्यक्ष पंकज राज मेवाड़ा के सानिध्य में सेवा कार्य किया गया व बताया कि सिंहप्रस्थ तालाब में हजारों की तादाद में मछलियां के अलावा कछुए, जलीय कीड़े आदि जलीय जीव विचरण करते हैं। तालाब में भीषण गर्मी के चलते निरंतर जल स्तर में कमी हो रहीं हैं। जलीव जीवों को जीवित रहने के लिए पर्याप्त पानी और ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। जल कम होने से ऑक्सीजन का स्तर गिरता है, जिससे जलजीव मर सकते हैं। जलीव जीवों को बचाने के लिए टैंकरों के माध्यम से तालाब में पानी डलवाया जा रहा हैं। शाम को एक साथ 21 पानी के टैंकर डलवाये गये हैं। साथ ही भामाशाहों से सहयोग व मार्गदर्शन लेकर 151 पानी के टैंकर डलवाए जाएंगे। ट्रस्ट संस्थापक व अध्यक्ष मेवाड़ा ने कहा कि बेजुबानों की सेवा सबसे बड़ी सेवा है जल है तो कल है व जल ही जीवन है। सभी ट्रस्ट सदस्यों का व भामाशाह आभार प्रकट किया। इस पुनीत सेवा में ट्रस्ट के संरक्षक नेनमल सोनी, झुम्मरलाल गर्ग, चंपालाल सोनी, हरिराम सोनी, उपाध्यक्ष डॉ. अयोध्या प्रसाद वैष्णव, प्रियंका मेवाड़ा, सचिव डॉ. कमलेश कुमार, सहसचिव मदन प्रजापत, कोषाध्यक्ष अंजली अग्रवाल, नंदनी शर्मा, जितेंद्र देवड़ा, यमुना रावल, अक्ष शर्मा, यश प्रजापत, युवराज रावल, कैलाश सुथार ठेकेदार, कमलेश कुमावत आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

भीषण गर्मी में राहगीरों को पिलाया शरबत

कोटपूतली (नि.सं.)। कस्बे के गढ़ कॉलोनी मोड़ पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सामने देव सैन व अरुण सिंह राठौड के नेतृत्व में भीषण गर्मी को देखते हुये राहगीरों को शरबत पिलाया गया। देव सैन ने बताया कि इन दिनों जिले में तेज गर्मी से आमजन परेशान है। तापमान 43 डिग्री के करीब पहुँच चुका है। दोपहर के समय सड़कों पर निकलना मुश्किल हो गया है। ऐसे में राहगीरों को ठंडा शरबत व शीतल पेय वितरित किया गया। तेज धूप व गर्म हवा के बीच जब राहगीरों को ठंडा शरबत मिला तो चेहरे पर राहत के भाव साफ नजर आये। इस सेवा शिविर में देव सैन, अरुण सिंह राठौड़, आदित्य सैन, लक्की शेरावत, नवनित वर्मा, वंश, रीहान, शानू यादव, अकिंत, कमलेंद्र शेखावत, दिंपाशु यादव, निमित शर्मा ने भूमिका निभाई।

पट्टों की पत्रावलियों का जल्द निस्तारण करवाने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के अनेक पार्षदों ने एडीएम के नाम ज्ञापन सौंपकर नगरपरिषद सुजानगढ़ में पट्टे की लम्बिल चल रही पत्रावलियों का निस्तारण करवाए जाने की मांग की है। अनेक पार्षदों से हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन में बताया गया है कि नगरपरिषद कार्यालय में पट्टा पत्रावलियों का काम लटका हुआ है, जिसके कारण नगरपरिषद की आय में काफी कमी आ गई है। ज्ञापन में बताया गया है कि हल्का पटवारी के पास करीब 170 फाईलें रिपोर्ट के लिए पेंडिंग पड़ी हैं, लेकिन पटवारी पत्रावलियों को अपने पास दबाकर बैठा हुआ है। जबकि उससे सम्पर्क करने पर नगरपरिषद में सम्पर्क करने का कहकर पल्ला झाड़ लिया जाता है। जिसके कारण आवेदकों और पार्षदों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। एक तरफ जहां नगरपरिषद की आलमारियों में पट्टों की पत्रावलियां धूल फांक रही हैं, वहीं नगरपरिषद के राजस्व में कमी आई है। दूसरी ओर नगरपरिषद में आयुक्त के नहीं होने की समस्या भी गंभीर बनी हुई है। ज्ञापन में बताया गया है कि एक या दो दिन 2 घंटे के लिए आयुक्त बैठते हैं, बाकी के चार दिन जनता परेशान होती है। क्योंकि यहां पर स्थायी आयुक्त नहीं है। आयुक्त नहीं होने के कारण न तो सफाई कार्य की मोनिटरिंग हो पा रही है और न ही जनता की समस्याओं का समय पर निस्तारण हो पाता है। अतः जल्द से जल्द विचाराधीन समस्त पट्टा पत्रावलियों के निस्तारण की व्यवस्था की जावे, ताकि जनता को राहत मिले। ज्ञापन पर पार्षद रूबिना खातून, पार्षद सलीम खान, पार्षद मोबिना, पार्षद तरूण सियोता, जावेद खिची, पार्षद राकेश तंवर, पार्षद परवीना बानो, पार्षद अब्दुल कासिम, पार्षद आरिफ भाटी, पार्षद अर्चना, मो. जुल्कर पड़िहार आदि लोगों के हस्ताक्षर हैं।

कार्यालय नगर निगम ग्रेटर जयपुर
(पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भवन, लालकोठी, टोंक रोड जयपुर-302015, राजस्थान)

क्रमांक :- ज.स.अ./2025/71 दिनांक :- 23/05/2025

ई-बोली सूचना सं 01 (वर्ष 2025-26)

केन्द्र एंव राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत ठेकेदार, मैन्युफेक्चरर (सम्बधित केमिकल्स)/अधीकृत सप्लायर बोलीदाताओ से मलेरिया स्टोर, नगर निगम ग्रेटर जयपुर मुख्यालय द्वारा सामान/केमिकल क्रय हेतु बोलियां आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम जयपुर की वेबसाईट **www.jaipurmc.org** व राजस्थान सरकार के पोर्टल **http;//sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती। UBN No. JMC2526GLOB00595 हैं।

(प्रभारी अधिकारी मलेरिया),
नगर निगम ग्रेटर जयपुर

राज.संवाद/सी/25/2913

कार्यालय मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी जिला स्वास्थ्य समिति एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, खैरथल - तिजारा

क्रमांक / मुख्य / एनएचएम / 2025 - 26 / 376 दिनांक- 22/05/25

ई - निविदा सूचना संख्या

इस कार्यालय के अधीन संचालित जनता क्लिनिकों के लिए नोन इन्वर्टर एसी और अन्य सामान एवं इस संस्था के अधीन आयोजित आवासीय प्रशिक्षणों / कार्यशाला हेतु वार्षिक आधार पर भोजन / टैंट / आवास व्यवस्था हेतु पंजीकृत फर्म / एजेन्सी के माध्यम से निम्नलिखित प्रकार निविदाएं निर्धारित प्रपत्र ऑनलाईन आमंत्रित की जाती है।

क.सं.	कार्य का विवरण	निविदा खोलने की तिथि	यूबीएन नम्बर
1	नोन इन्वर्टर एसी और अन्य सामान	02.06.2025	MHS2526GL RC01244
2	भोजन / टैंट / आवास व्यवस्था	03.06.2025	MHS2526SL RC01290

उपरोक्त निविदाएं www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc. rajasthan. gov.in से डाउनलोड की जा सकती है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला स्वास्थ्य समिति एवं
मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी,
खैरथल - तिजारा

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु

ई- 44 अग्रसेन नगर चूरू E-mail: eemhchuru@yahoo.com
फोन नं. 01562-254670

क्रमांक- प.01 ()/ चि.स्वा. / खण्ड - चूरु / 2025-26 / 144 दिनांक- 14.05.2025

निविदा सूचना संख्या- 03/2025-26

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु के अन्तर्गत जिला चूरू व हनुमानगढ़ में उप स्वा. केन्द्रों के निर्माण कार्य राशि रु. 48.50 लाख तक के कार्य के लिए निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.org,http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता हैं।

S no.	UBN
1	NRH2526WSOB00239

(राजेश कुमार सोलंकी)
अधिशाषी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड चूरू

DIPR/C/6615/2025

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन

(आदेश 5 सी.पी.सी.)

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी महोदय तारानगर जिला चूरू

वाद संख्या 103/2024 सन् 2024
पवन शर्मा बनाम ओमप्रकाश आदि

प्रेषितिः 1. ओमप्रकाश पुत्र रावताराम जाति ब्राह्मण निवासी तारानगर जिला चूरू
2. महेश पुत्र रावताराम जाति ब्राह्मण निवासी तारानगर जिला चूरू

आपको सुचित किया जाता है कि पवन कुमार पुत्र उदयचन्द जाति ब्राह्मण निवासी तारानगर जिला चूरू ने अदालत हाजा में एक वाद कृषिभूमि खाता सं. 425 रोही तारानगर जिला चूरू के खाता विभाजन बाबत पेश किया है अतः आपको उक्त वाद का उत्तर देने के लिए तारीख 25.06.2025 को दिन के 10.00 बजे व्यक्तिशः या वकील द्वारा जो कि मुकदमे हाल से परिचित किया गया है मुकदमे सम्बन्धी समस्त महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा व्यक्ति हो जो प्रश्न का उत्तर दे सके उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया जाता है

ज्ञात रहे कि उपरोक्त तारीख को आप उपस्थित न हुये तो आपकी अनुपस्थिति में वाद की सुनवाई की जावेगी।
मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा से आज दिनांक 20.05.2025 को जारी किया गया।

उपखण्ड अधिकारी
तारानगर (चूरू)

551 महिलाओं ने विशाल शोभा यात्रा निकाली

कोटपूतली(नि.सं.)। अखिल विश्व गायत्री परिवार व गायत्री चेतना केन्द्र कोटपूतली के संयुक्त तत्वाधान में ज्योति कलश यात्रा का भगवती शर्मा के जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजन किया गया। जिसमें तपोनिष्ठ व वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा, माँ गायत्री माता के दिव्य रथ के साथ 551 महिलाओं द्वारा विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा को सभापति पुष्पा सैनी, सभापति प्रतिनिधि एड. दुर्गाप्रसाद सैनी व वरिष्ठ भाजपा नेता शंकर लाल कसाना द्वारा पूजा अर्चना करके भगवान श्री परशुराम मन्दिर से रवाना किया गया। शोभा यात्रा का कस्बे के विभिन्न मुख्य मार्गो पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। ठाकुरदत्त शर्मा, छीतरमल अग्रवाल, बद्री प्रसाद शर्मा, कंवर सिंह जांगिड़, किशन लाल शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत सहारामजी का खेड़ा
पंचायत समिति बिजौलिया (भीलवाड़ा)

क्रमांकः-म.गा.नरेगा / सामग्री क्रय / 2025-26/14 दिनांक -20-5-2025

ई-निविदा सूचना संख्या- 2025-26/02

ग्राम पंचायत सहारामजी का खेड़ा पं.स. बिजौलिया में महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत विकास कार्यो के लिये वित्तीय वर्ष 2025-26 में निर्माण सामग्री एवं उपकरण इत्यादि की आपूर्ति जी शिड्यूल अनुसार आवश्यक निर्माण सामग्री आपूर्ति हेतु वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के तहत पंजीकृत संवेदकों एवं विनिर्मिताओं से दर संविदा ई-टेण्डर की प्रíि या द्वारा ऑनलाईन निविदा नियमानुसार आमंत्रित की जाती हैं।
NIB- ZBL2526 A 0345
UBN-ZBL2526 GLOB 00773
निविदा की अन्य विस्तृत जानकारी व विवरण वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी एवं Download कर प्राप्त की जा सकती हैं

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत सहारामजी का खेड़ा
पं.स. बिजोलिया

प्रसाशक
ग्राम पंचायत सहारामजी का खेड़ा
पं.स. बिजोलिया

कार्यालय ग्राम पंचायत गाजुवास
पंचायत समिति तारानगर, चूरू

क्रमांकः ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 21-25 दिनांक 23.05.2025

ई निविदा 01/2025-26

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत गाजुवास में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं / संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https:// eproc. rajasthan.gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

सरपंच
ग्राम पंचायत गाजुवास

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत गाजुवास

कार्यालय ग्राम पंचायत अलायला
पंचायत समिति तारानगर, चूरू

क्रमांकः ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 88-93 दिनांक 23.05.2025

ई निविदा 01/2025-26

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत अलायला में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं / संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https:// eproc. rajasthan. gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

सरपंच
ग्राम पंचायत अलायला
पंचायत समिति तारानगर

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत अलायला
पंचायत समिति तारानगर

कार्यालय ग्राम पंचायत झाडसर छोटा
पंचायत समिति तारानगर, चूरू

क्रमांक- ग्रा.प. / सामग्री निविदा / 227-232 दिनांक 23.05.2025

ई निविदा 01/2025-26

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत झाडसर छोटा में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं / संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https://eproc, rajasthan.gov.in एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

सरपंच
ग्राम पंचायत झाडसर छोटा

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत झाडसर छोटा

कार्यालय ग्राम पंचायत धीरवास छोटा
पंचायत समिति तारानगर, चूरू

क्रमांक- ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 19-24 दिनांक 23.05.2025

ई निविदा 01/2025-26

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत धीरवास छोटा में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं /संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https:// eproc.rajasthan.gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

सरपंच
ग्राम पंचायत धीरवास छोटा

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत धीरवास छोटा

मृतक आश्रितों को सहायता राशि स्वीकृत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निसं.)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने आदेश जारी कर विभिन्न दुर्घटनाओं में काल का ग्रास बने मृतकों के आश्रितों व गंभीर रूप से घायलों को सहायता राशि स्वीकृत की है। जारी आदेशानुसार जिले की तारानगर तहसील के बुचावास निवासी राकेश कुमार की मृत्यु हो जाने पर उनकी पत्नी सुमन, सुजानगढ़ तहसील के साण्डवा निवासी रणजीत मीणा की मृत्यु हो जाने पर उनकी पत्नी आकाश देवी, बीदासर के दड़ीबा मस्जिद के पास ?वार्ड नंबर 23 निवासी मोहम्मद गुलजार की मृत्यु हो जाने पर उनकी पत्नी यासमीन बानू और चूरू तहसील के चलकोई बणीरोतान निवासी सुरजीत की मृत्यु हो जाने पर उनकी माता मंजू कंवर को राजस्थान मुख्यमंत्री सहायता कोष से एक - एक लाख रुपए सहायता राशि स्वीकृत की गई है। संबंधित तहसीलदारों की जांच रिपोर्ट के आधार पर यह सहायता राशि स्वीकृत की गई है।

ऋषिकुल स्कूल में सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। शहर की प्राचीन शिक्षण संस्था ऋषिकुल स्कूल में कक्षा 12 वीं के वाणिज्य, कला और विज्ञान संकाय के परीक्षा परिणामों की घोषणा के बाद शुक्रवार को संस्था प्रधान डॉ. रेखा शर्मा के सानिध्य में अभिभावक व विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अभिभावकों और शिक्षकों की उपस्थिति में ऐतिहासिक सफलता का उत्सव मनाया गया।इस वर्ष ऋषिकुल स्कूल ने लगातार पाँचवें वर्ष वाणिज्य कला और विज्ञान संकाय में शत-प्रतिशत परिणाम देकर अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता को एक बार फिर सिद्ध किया है। कला, वाणिज्य और विज्ञान, तीनों संकायों में विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर संस्था संस्था व परिवार का नाम रोशन किया है। टॉपर विद्यार्थियों व अभिभको को विद्यालय परिवार की ओर से साफा माला पहनाकर व मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विकास चूड़ीवाला व सचिव संगीता चूड़ीवाला ने भी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संस्था प्रधान डॉ. रेखा शर्मा ने अपने संदेश में कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों की निष्ठा और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। हम सब मिलकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इसी लगन के साथ कार्यरत रहेंगे।

अंतर राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां शुरू

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 की तैयारियों के तहत योग का पूर्वाभ्यास कार्यक्रम शहर के ताल मैदान स्थित नेहरू पार्क में 20 जून से प्रारंभ हो गया है। आयुष्मान आरोग्य मंदिर आयुष कि प्रभारी व ब्लॉक स्तरीय योगाभ्यास कार्यक्रम की नोडल अधिकारी डॉ मधु दीक्षित ने बताया कि आयुर्वेद विभाग की ओर से 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास शहर के ताल मैदान स्थित नगरपरिषद के नेहरू पार्क में आयोजित किया जा रहा है। जिसमे योग प्रशिक्षक विजेता पोटलिया व अर्जुन सिंह की ओर से प्रतिदिन प्रातः योगाभ्यास करवाया जा रहा है। श्री योग शिविर 20 जून तक चलेगा। नोडल अधिकारी व।क्षेत्र की जानीमानी महिला आयुर्वेद चिकित्सक डॉ मधु दीक्षित ने योग के पूर्वाभ्यास कार्यक्रम में उपस्थित नागरिकों को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य उन्नयन में योग के महत्व के बारे में बताते हुए राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम का अधिकाधिक लाभ उठाने व 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मुख्य कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर सहभागिता निभाने के लिए प्रेरित किया। 21 जून को संपूर्ण विश्व में एक साथ योगाभ्यास किया जाएगा। सरकार की ओर से इस बार योग की थीम एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य रखी गई है। जिसमें विश्व के समस्त मनुष्य स्वस्थ रहें, यह भावना निहित है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित होने के लिए आमजन को प्रेरित किया गया।

स्पीच थैरेपी शिविर आज से

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। मारवाड़ी युवा मंच सुजानगढ़ और गणगौर शाखा, सुजानगढ़ की ओर से 24 व 25 मई को निःशुल्क स्पीच थेरेपी शिविर लगेगा। मंच अध्यक्ष मनोज शर्मा और गणगौर अध्यक्ष खुशबू सोनी ने बताया कि इवेंटवाला में डॉ लक्ष्मी बदरा बच्चों का हकलाहट, तुतलाहट, मंद बुद्धि, मूक बधिर और लकवा ग्रस्त बच्चों को परामर्श देंगी। जो बच्चे ज्यादा चीखना, चिल्लाना, गुस्सा करना अपने आप को मारना या फिर सामने वाले को मारना, सामान फेंकना, ज्यादा उछलना, कूदना करते है और ज्यादा मोबाइल चलते हैं, उनको भी परामर्श दिया जाएगा।

विद्युत पोल बदले जाने की मांग

सुजानगढ़ (नि.सं.)। कॉमरेड जगदीश नाथ ने वार्ड न. 5 में रामूराम पुनिया के घर के सामने व राजकुमार जाखड़ के घर के सामने स्थित जर्जर विद्युत खंम्भों को बदले जाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया है कि वर्तमान समय में आंधी बारिश का मौसम सर पर है और इन जर्जर विद्युत पोल के कारण कभी भी हादसा हो सकता है। अतः इनको बदलकर इनके स्थान पर नए पोल लगाए जाए।

संभागीय आयुक्त पूनम ने बीडीके अस्पताल का किया निरीक्षण

मरीजों से किया सीधा संवाद, दवा वितरण और ऑपरेशन दर में सुधार के निर्देश

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। संभागीय आयुक्त पूनम ने शुक्रवार को राजकीय बीडीके अस्पताल, झुंझुनूं का औचक निरीक्षण किया। अस्पताल की स्वास्थ्य सेवाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने जिला कलेक्टर रामावतार मीणा से अस्पताल के कामकाज और सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी ली। संभागीय आयुक्त पूनम ने अस्पताल में शल्य चिकित्सकों और अस्थि रोग विशेषज्ञों को ऑपरेशन दर बढ़ाने के लिए भी निर्देशित किया। जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने संभागीय आयुक्त को बताया कि अस्पताल की ओपीडी में रोजाना लगभग 2500-3000 मरीज आते हैं, जबकि आईपीडी में करीब 150-200 मरीज भर्ती रहते हैं। संभागीय आयुक्त ने मेडिसिन और सर्जरी विभागों में भर्ती मरीजों को दी जाने वाली सेवाओं के विस्तार पर विशेष जोर देने का निर्देश दिया। उन्होंने अस्पताल में उपलब्ध चिकित्सक ओपीडी चैंबर्स की संख्या, कुल चिकित्सकों की संख्या, विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता और भर्ती मरीजों की स्थिति के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। पीएमओ डॉ. जितेंद्र भाम्बू ने संभागीय

आयुक्त को जानकारी दी कि बीडीके अस्पताल में 24 घंटे प्रसूति रोग विशेषज्ञ की ऑन-फ्लोर सेवाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि बीडीके एकमात्र अस्पताल है जहां 24 घंटे ब्लड बैंक, सिजेरियन ऑपरेशन, ऑन-फ्लोर प्रसूति रोग विशेषज्ञ, निश्चैतन विशेषज्ञ और नवजात आईसीयू की सेवाएं उपलब्ध हैं।

नवजात शिशु इकाई की उत्कृष्ट सेवाओं की सराहना

निरीक्षण के दौरान, संभागीय आयुक्त ने नवजात शिशु इकाई का विशेष रूप से दौरा किया और उसकी सराहना की। उन्होंने इस इकाई को प्रदेशभर में शीर्ष स्तर पर रहने के लिए बधाई दी, जो अस्पताल की गुणवत्तापूर्ण सेवाओं का प्रमाण है।

मरीजों से सीधा संवाद और सरकारी योजनाओं का लाभ

संभागीय आयुक्त ने अस्पताल के विभिन्न वार्डों में जाकर भर्ती मरीजों से सीधे बातचीत की और उनसे अस्पताल की सेवाओं, चिकित्सकों और स्टाफ के व्यवहार के बारे में फीडबैक लिया। हरियाणा सीमा से सटे सूरजगढ़ निवासी कविता से बातचीत करते हुए, संभागीय आयुक्त ने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। कविता ने बताया कि यह उनका दूसरा प्रसव था और वह चार दिनों से अस्पताल में भर्ती हैं। उनका पहला प्रसव भी सिजेरियन ऑपरेशन से हुआ था, जिसके कारण दूसरे प्रसव में भी जटिलता की आशंका थी। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने और उनके परिवार ने दूर स्थित बीडीके अस्पताल, झुंझुनूं में प्रसव कराने का निर्णय लिया।

दवा वितरण और ऑपरेशन दर में सुधार के निर्देश

संभागीय आयुक्त पूनम ने दवा वितरण केंद्र का भी निरीक्षण किया और दवाओं की संख्या, आपूर्ति और मरीजों की संख्या के बारे में जानकारी ली। उन्होंने मरीजों को अधिकतम सेवाएं प्रदान करने और दवाओं का बफर स्टॉक बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने अस्पताल में शल्य चिकित्सकों और अस्थि रोग विशेषज्ञों को ऑपरेशन दर बढ़ाने के लिए भी निर्देशित किया। इस निरीक्षण के दौरान आरएमओ डॉ. सिद्धार्थ शर्मा, डॉ. विजय झाझड़िया, डॉ. नावेद, डॉ. सलीम, डॉ. श्वेता पूनिया, सतवीर मान, ओमप्रकाश और मनोहरलाल सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहा।

विज्ञान वर्ग में 97.80 प्रतिषत के साथ बलदेव स्कूल टॉपर, प्रतिभाओं को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

झुन्झुनूं(निस)। स्थानीय गणपति नगर स्थित राजस्थान पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की ओर से घोषित परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान समारोह हुआ। सम्मान समारोह में स्कूल टॉपर विज्ञान वर्ग के मेधावी बलदेव ने 97.80 प्रतिशत अंक व स्नेहा, भूमिका कड़वासरा, रितिका, आयुषी, अनुष्का, अमन, यश चौधरी, आशीष, प्रमीला, राहुल कुमार, अजय कुमार, गुंजन, अनुष्का, अमन चौधरी, नमोनारायण मीणा, जिया, प्रेरणा, चेतन रेपस्वाल, प्रियांशु, हिमांशी, धीरज मीणा, कोमल मीणा, रिधि, मनीषा मीणा, अभिजित जांगिड़ को 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर विद्यालय प्रांगण में साफा पहनाकर, तिलकार्चन व माल्यार्पण कर अभिभावक के साथ मिठाई खिलाकर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया, संस्था संरक्षिका विनोद ढूकिया ने मेधावी विद्यार्थियों को बधाई दी व भविष्य में भी ऐसे ही उत्कृष्ठ परिणाम देकर अपना, अपने परिवार व देश का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। संस्था सचिव इंजी. पीयूष ढूकिया ने बताया कि संस्था का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। बलदेव ने अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय परिवार, गुरूजन, माता-पिता को देते हुए कहा कि मेरी उपलब्धि गुरूजनों का आशीर्वाद है। बलदेव भविष्य में चिकित्सक बनकर समाज सेवा के रूप में देश की सेवा करना चाहता है। सहायक अभियन्ता ज्योति ढूकिया व प्रधानाचार्य शुभकरण खीचड़ ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रांगण में पटाखें चलाकर, एक-दूसरे के गुलाल - अबीर लगाकर व मिठाई खिलाकर खुशियां मनाई। सम्मान समारोह कार्यक्रम में रामेश्वर सिंह, समिता, सूरजभान सिंह नेहरा, अनिल नेहरा, संदीप कुमार, विमला देवी, सरिता, बिड़दीचन्द पंवार, अंकलेश, राजकौर, दिनेश कुमार, तारा प्रकाश, संजू देवी, कमला देवी, संजय कुमार, राजेश कुमार, राजेन्द्र कुमार, कविता देवी, मन्जू देवी, रतना देवी, राज, ललिता देवी, पवन कुमार शर्मा, अभिराज, कृष्णा देवी, वंशिका सहित अभिभावकगण मौजूद रहे। प्राचार्या निधि सिहाग, राकेश झाझड़िया, मंगलाराम जांगिड़, सुधीर शर्मा, योगेन्द्र बसेरा, प्रहलाद सिंह कुल्हरी, पवन कुमार, प्रवेश भाम्बू, सुभाष सैन सहित समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

आदर्श विद्या मन्दिर मण्डावा में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। आदर्श विद्या मन्दिर मण्डावा में शुक्रवार को प्रतिभा सम्मान समारोह व विजय जुलूस का आयोजन किया गया। यह आयोजन कक्षा 12 के राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2025 में विद्यालय के विद्यार्थियों की ओर से प्राप्त ऐतिहासिक परिणाम के उपलक्ष्य में किया गया। कला संकाय में आरती पुत्री विनोद ने 98.60% अंक प्राप्त कर जिला स्तर पर द्वितीय व राज्य टॉप 10 में स्थान अर्जित किया। विज्ञान संकाय में प्राची पुत्री नरेश कुमार ने 97.20% अंकों के साथ मण्डावा साइंस टॉपर बनने का गौरव पाया, जबकि वाणिज्य संकाय में कसक जांगिड़ पुत्री सुरेश कुमार जांगिड़ ने 94.00% अंक अर्जित कर मण्डावा कॉमर्स टॉपर का खिताब हासिल किया। इस वर्ष तीनों संकायों के कुल 161 विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया, जिनमें से 21 विद्यार्थियों ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। मंच पर भामाशाह मक्खन लाल यादव, महेश चंद्र तेतरवाल व अभिभावक अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विद्यालय प्रधानाचार्य श्रवण कुमार ने सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संस्था निदेशक अभिषेक तेतरवाल ने इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर विद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह परिणाम हमारे विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। हम शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता व अनुशासन को सदैव प्राथमिकता देते रहेंगे। टॉपर्स को माल्यार्पण कर वं परंपरागत साफा पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता गोविन्द सोनी ने किया व सीबीएसई विंग प्रधानाचार्य मुकेश कुमार स्वामी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संजू स्वामी, पूनम शर्मा, काजल कंवर, मुकेश गावड़िया, ओमप्रकाश, बिहारी लाल, मनोज कुमार, नरेंद्र दायमा, हरीश जानू सहित समस्त स्टाफ, विद्यार्थी व अभिभावक उपस्थित रहे।

प्रभु से बढ़कर कोई और सुख और सम्पदा नहीं, भागवत कथा श्रवण करने वालों का सदैव होता है कल्याण

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मण्डावा गढ में राज परिवार की ओर से चल रही श्रीमद् भागवत महापुराण के द्वितीय दिवस शुक्रवार को कथा में राजा दक्ष और शिवजी की द्वेष की कथा, सती का शरीर त्याग पार्वती अवतार व शुकदेवजी के जन्म का वृतांत का विस्तार से वर्णन किया गया। कथा वाचक प्रतापगढ के आचार्य मांगीलाल शर्मा ने कथा की शुरुआत करते हुए कहा कि आप सब पर ठाकुर जी की कृपा है। जिसकी वजह से आप आज कथा का आनंद ले रहे है। श्रीमद भगवत कथा का रसपान कर पा रहें हैं क्योंकि जिन्हें गोविन्द प्रदान करते है जितना प्रदान करते है उसे उतना ही मिलता है। कथा में यह भी बताया कि अगर आप भागवत कथा सुनकर कुछ पाना चाहते हैं, कुछ सीखना चाहते है तो कथा में प्यासे बन कर आए, कुछ सीखने के उद्देश्य से, कुछ पाने के उद्देश्य से आएं, तो ये भागवत कथा जरूर आपको कुछ नहीं बल्कि बहुत कुछ देगी। मनुष्य जीवन विषय वस्तु को भोगने के लिए नहीं मिला है, लेकिन आज का मानव भगवान की भक्ति को छोड़ विषय वस्तु को भोगने में लगा हुआ है। उसका सारा ध्यान संसारिक विषयों को भोगने में ही लगा हुआ है। मानव जीवन का उद्देश्य कृष्ण प्राप्ति शाश्वत है। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन का उद्देश्य कृष्ण को पाकर ही जीवन छोड़ना है और अगर हम ये दृढ़ निश्चय कर लेंगे कि हमें जीवन में कृष्ण को पाना ही है तो हमारे लिए इससे

प्रभु से बढ़कर कोई और सुख, संपत्ति या सम्पदा नहीं है। भगवत कथा के समय स्वयं श्रीकृष्ण आपसे मिलने आए हैं। जो भी इस भागवत के तट पर आकर विराजमान हो जाता है, भागवत उसका सदैव कल्याण करती है। उन्होंने कहा कि बिना जाति और बिना मजहब देखे इनसे आप जो मांगे ये आपको वो मनवांछित फल देती है और अगर कोई कुछ न मांगे तो उसे मोक्ष परियन्त तक की यात्रा कराती है। शर्मा ने शिवजी की द्वेष की कथा सती का शरीर त्याग पार्वती अवतार और शिवजी के साथ विवाह ध्रुव चरित्र ध्रुव का 36000 वर्ष तक भारत पर राज्य करना, प्रथु अवतार की कथा और प्राचीन बर्हि, पुरंजन उपाख्यान राजा प्रियव्रत और भरत चरित्र की कथा खगोल भूगोल व पाताल और 27 नर्को की कथा का विस्तार से वर्णन किया।

भाजपा उम्मीदवार सरिता शर्मा ने दाखिल किया नामांकन

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लक्ष्मणगढ़ नगरपालिका के वार्ड नंबर 9 में होने वाले उपचुनाव को लेकर शुक्रवार को भाजपा की ओर से पार्षद प्रत्याशी सरिता शर्मा ने भारी जनसमर्थन के साथ उपखंड कार्यालय पहुंचकर अपना नामांकन दाखिल किया। प्रत्याशी सरिता शर्मा ने रिटर्निंग अधिकारी मोहर सिंह मीणा के समक्ष दो नामांकन दाखिल किए। नामांकन के दौरान भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष ललित पंवार, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष चंद्रकांत जाजोदिया, जय प्रकाश सरावगी, अरुण चौधरी, प्यारे लाल कटारिया, पूर्व मंडल अध्यक्ष मधु सूदन दायमा, पार्षद ललित पारीक, अमित शर्मा, विष्णु खांडल, मुकेश सैनी,सोशल मीडिया प्रभारी कमल सुरोलिया, दीनदयाल जोशी, संदीप शर्मा, कमल शर्मा सहित बड़ी संख्या में भाजपा के जनप्रतिनिधि, पार्टी पदाधिकारी वं वार्डवासी मौजूद रहे। नामांकन से पूर्व सरिता शर्मा अपने समर्थकों के साथ एक संक्षिप्त रैली निकालकर उपखंड कार्यालय पहुंची। नामांकन दाखिल करने के बाद सरिता शर्मा ने कहा कि पार्टी ने उन पर जो भरोसा जताया है, उस पर वे पूरी निष्ठा से खरी उतरेंगी। उन्होंने कहा कि वार्ड की जनता के सहयोग और समर्थन से वे इस बार भारी मतों से जीत दर्ज करेंगी और वार्ड की जनसेवा को प्राथमिकता देंगी। पार्टी नेताओं ने भी विश्वास जताया कि सरिता शर्मा की जनसेवा भावना, सामाजिक कार्यों में सक्रियता और मिलनसार छवि उन्हें इस चुनाव में विजयी बनाएगी।

ग्रीष्मकालीन अभिरुचि व कौशल विकास शिविर का उदघाटन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। हिंदुस्तान स्काउट्स व गाइड्स राजस्थान राज्य जिला मुख्यालय गोकुलपुरा सीकर के तत्वाधान में आयोजित ग्रीष्मकालीन अभिरुचि व कौशल विकास शिविर का उद्घाटन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीपली नगर पिपराली में किया गया। शिविर प्रभारी सुलोचना कुमारी ने बताया कि शिविर उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक रतनलाल जलधारी रहे। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज बाटड़, सरपंच गौतम चनेजा, ए सीबीओ पिपराली रामनारायण, जिला संगठन आयुक्त अजय कुमावत व पमेश्वरी वर्मा, जिला प्रशिक्षण आयुक्त ललिता कुमारी, जिला सचिव डॉ

देवेंद्र सिंह खीचड़ राजू सैनी शंकरलाल सैनी रहे। शिविर सह प्रभारी माया खीचड़ ने बताया कि ग्रीष्मकालीन अभिरुचि शिविर के अंदर महिलाओं युवाओ को उनकी अभिरुचि के अनुसार सिलाई कढ़ाई मेहंदी ब्यूटीशियन इलेक्ट्रीशियन कबाड़ से जुगाड़ बनाना कंप्यूटर क्लासेस इंग्लिश स्पोकन क्लासेस कुकिंग क्लासेस आदि विषयों की विस्तृत रूप से ट्रेनिंग दी जाती है। पूर्व विधायक रतनलाल जलधारी ने बताया कि विद्यार्थियों व महिलाओं युवाओं को इन शिविरों के अंदर अधिक से अधिक संख्या में भाग लेना चाहिए। इन शिविरों का लाभ उठाते हुए अपनी अभिरुचि के अनुसार स्किल को डेवलप करना चाहिए इस मौके पर जिला अध्यक्ष मनोज बाटड़ ने कहा कि अभिरुचि शिविर बच्चों के लिए एक वरदान साबित होते हैं जो बच्चे गर्मियों की छुट्टियों के अंदर जहां पर अपना समय खराब कर देते हैं, वहां पर इन बच्चों इन शिविरो के माध्यम से लघु उद्योग की ट्रेनिंग दी जाती है। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुनीता आर्य, व्याख्याता अनीता आर्य, गणेश थलोड, रामावतार यादव, मूलचंद पिपराली विद्याधर मील, गोविन्द सैनी, शीशपाल तवर, शकुंतला ढाका, मिथुन जाटोलिया, राजवीर सिंह शेखावत, रामनिवास घायल मुकुंद राम, हंसा कंवर व विद्यालय स्टॉफ आंगनबाड़ी स्टॉफ ग्रामीण व विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे। शिविर में अबतक कुल 135 रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। विद्यालय परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाकर पानी डालने की जिम्मेदारी स्काउट गाइड को सौंपीं गई। अतिथियों का का धन्यवाद ज्ञापित व कार्यक्रम का संचालन राजवीर सिंह शेखावत ने किया।

संविधान बचाओ रैली में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भरी संघर्ष की हुंकार

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार चूरू जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से गुरूवार शाम को दादाबाड़ी चूरू जिला मुख्यालय पर जिला स्तरीय संविधान बचाओ रैली राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया व चूरू जिला अध्यक्ष इन्द्राज खिचड के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा व राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जुली, राजस्थान सह प्रभारी चिरंजीवराव रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। जिला स्तरीय संविधान बचाओ रैली को संबोधित करते हुए राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि भाजपा सरकार संविधान को कमजोर करने का काम कर रही है लेकिन इसके लिए कांग्रेस का एक एक कार्यकर्ता संघर्ष करेगा और इसका पुरजोर विरोध करेगा। संविधान को बचाने के लिए हम सब मिलकर भाजपा सरकार को करारा जबाव देंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार हमेशा से दलितों के विरोध में रही है। संविधान की शक्ति ने ही हमें आगे बढने के, सम्मानता का अधिकार दिया, हमें निर्भीक और निडर होकर पूरे सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीने की ताकत दी, इसलिए संविधान हमारा गौरव है इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि मानव अधिकारों को बचाए रखने के लिए संविधान को बचाए रखना जरूरी है। भाजपा सरकार संविधान को कुचलने की तैयारी कर रही है। कांग्रेस पार्टी उनके इस मंसूबे को कभी कामयाब नही होने देगी तथा कांग्रेस पार्टी संविधान की रक्षा के लिए भाजपा की सत्ता को उखाड फेकने का काम करेगी। उन्होंने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के संविधान को बचाने के लिए कांग्रेस पार्टी ने जो बीडा उठाया है। इसको अंजाम तक पहुंचाया जाएगा। राजस्थान सह प्रभारी चिरंजीवराव ने केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि सरकार जांच एजेंसियों का लगातार दुरूपयोग कर लोगों को परेशान करने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि जब से राज्य में भाजपा सरकार आई है, तबसे लोग त्राहि त्राहि कर रहे है। चूरू लोकसभा सांसद राहुल कस्वां ने कहा कि केन्द्र की भाजपा सरकार भारतीय संविधान के साथ छेडछाड करने का प्रयास कर रही है, जो सफल नही होगा, क्योंकि लोग अब जागरूक हो गए है। भाजपा के नेता अब तो भारतीय सेना का अपमान करने से भी नही चूक रहे है। यह लोग उच्च पदो पर रहते हुए पद की गरिमा गिरा रहे है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक हाजी मकबूल मंडेलिया ने कहा कि मेरे पांच साल के कार्यकाल को आज भी चूरू की जनता याद करती है। जितना विकास मेने पांच साल में किया है, उतना विकास 30 साल चूरू की जनता पर राज करने वाले विधायक ने भी नही किया। तारानगर विधायक नरेन्द्र बुडानिया ने कहा कि सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार की रीति नीति हमेशा से संविधान के खिलाफ रही है। कांग्रेस पार्टी ने हमेशा संविधान की रक्षा करने का काम किया है। भाजपा संविधान बदलने की कितनी भी तैयारी कर ले कांग्रेस पार्टी उनको अपने मंसूबे में सफल नही होने देगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया ने कहा कि संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ भीमराव अंबेडकर विश्व के गौरव है। बाबा साहब के बनाए गए संविधान को भाजपा कमजोर करने का जो हर संभव प्रयास कर रही है उसको हम कभी कामयाब नही होने देंगे। हम चूरू के गांव गांव, ढाणी- ढाणी व वार्डो में जाकर आमजन को संविधान बचाने के लिए जागरूक करेंगे और संविधान बचाने का संकल्प दिलाएंगे। सुजानगढ विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि केन्द्र की भाजपा सरकार संविधान को ताक पर रखकर काम कर रही है। भाजपा के नेता आये दिन संविधान की धज्जिया उडा रहे है परन्तु भाजपा सरकार उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नही करती है। भाजपा की कथनी और करनी में बहुत अंतर है। भाजपा के मंत्री ने सेना के खिलाफ बोला वो आज भी पद पर विराजमान है। संभाग प्रभारी नसीम अख्तर इंसाफ ने कहा कि संविधान हमें सम्मानता, स्वतन्त्रता, अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार प्रदान करता है लेकिन भाजपा देश की आमजन के हक व अधिकारो को दबाकर संविधान का खंडित करने का प्रयास कर रही है जिसको हम सभी कांग्रेसजन कभी सफल नही होने देगें। चूरू जिला प्रभारी व मंडावा विधायक रीटा चौधरी ने कहा कि भाजपा देश की सभी संवैधानिक संस्थाओं मीडिया, कार्यपालिका, विधायिका यहा तक कि न्यायपालिका पर भी हमला कर रही है। रतनगढ विधायक पुसाराम गौदारा ने कहा कि कहा कि आने वाले पंचायतीराज व नगर निकाय चुनावों में कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने की बात कही। चूरू जिला अध्यक्ष इन्द्राज खिचड ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार नीतिगत ढंग से संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर कर रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ काम कर रही है। संविधान बचाओं रैली को विधायक हाकम अली, पूर्व विधायक कृष्णा पुनियां, रेहाना रियाज, खानू खान बुधवाली, उप प्रधान केशरीचंद शर्मा, पूर्व सभापति पायल सैनी, अर्चना सारस्वत, प्रियंका बानो, गोविन्द महनसरिया, प्रदुमन सिंह, संजय कस्वां, भीमराज जाखड, रामनिवास बिडोदी, जितेन्द्र कस्वां, साजीद कुरेशी, दिनेश कस्वां, नरेन्द्र बाटड, इत्यादि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पार्षद लीलाधर चुलेट व चूरू जिला उपाध्यक्ष जमील चौहान ने किया। यूथ कांग्रेस की ओर से चूरू शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय मंडेलिया हाउस चूरू से दादाबाडी चूरू तक बाईक रैली का आयोजन किया गया जिसका नेतृत्व युवा नेता ईशाद मंडेलिया व यूथ कांग्रेस अध्यक्ष सोयल डीके सहित पार्षदो ने किया। इस दौरान चूरू शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, देहात ब्लॉक अध्यक्ष किशोर धान्धु, धर्मेन्द्र बुडानिया, मो. हुसैन निर्माण, आदुराम न्यौल, रमजान खां, कमला पुनियां, नारायण बालाण, रामप्रताप काटिवाल, सीताराम खटीक, शिवकुमार शर्मा, श्रवण बसेर, अजीज खां, संजय भाटी, विमल शर्मा, जयचंद मेघवाल, असलम मोयल, सुखाराम पिंटाला, इनायत खां, समीउल्लाह गौरी, दयाराम कस्वां, अली मोहम्मद भाटी, सोहनलाल मेघवाल, आसीफ निर्माण, जंजशेर खां, रामेश्वर नायक, शेर खां मलखाण, इस्माईल भाटी, इमरान राणासर, जाफर खां जोईया, हर्ष लाम्बा, विनोद सैनी, योगेश ढाका, आरिफ रिसालदार, कमलेष महला, विनोद सैनी, फूलचंद मुन्डीया, विनोद खटीक, बुल्लेषाह, एनके झारिया, असलम खा अरवाण, मनीराम कडवासरा, शाहरूख खान, चंदनमल मेघवाल, बाबू मंत्री, निराणाराम कस्वां, बजरंग बजाड, श्योचंद प्रजापत, सलीम पीए, रामनिवास सिहाग, तारिख नागौरी, कुरडाराम भाकर, आबीद जाबासरिया, महावीर झाझडिया, खालिद कुरैशी, नानूराम राठी, सलीम गौरी, सहित हजारों कांग्रेस कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहें। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के उपरान्त किया गया।

होनहार विद्यार्थियों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय भोजलाई चौराहा स्थित बाल भारती विद्यापीठ सीनियर सै. स्कूल में बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम आने के बाद होनहारों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। संस्था निदेशक भागीरथ मल पवार ने बताया कि तीनों स्ट्रीम में विद्यार्थियों ने उत्कृष्टता दिखाई है। विज्ञान वर्ग में पलक जांगिड़ ने 95.80, झलक जांगिड़ ने 93.30, अलीशा मेहरा ने 92.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। इसी प्रकार कला वर्ग में मोहिका जांगिड़ ने 92.20 प्रतिशत और मोनिका ने 90.60 प्रतिशत अंक हासिल किए। पांच विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक, 25 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक और 40 विद्यार्थियों ने 75 प्रतिशत से अधिक, 69 विद्यार्थियों ने 60 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए हैं और परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा है। सम्मान समारोह में संस्था के व्यवस्थापक भींवाराम बेनीवाल, निदेशक बी एम पचार, बंशीधर यादव, शांतिलाल शर्मा, शंकरलाल आदि मौजूद रहे, जिन्होंने विद्यार्थियों को साफा पहनाकर, माल्यार्पण किया और मुंह मीठा करवाया। कार्यक्रम में अनेक अभिभावकों का भी सम्मान किया गया। संचालन उमा जोशी ने किया।

गुर्जर समाज ने दी 73 आंदोलनकारी शहीदों को श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। गुर्जर आरक्षण आंदोलन में शहीद हुए 73 आंदोलनकारियों को श्रद्धांजलि दी गई है। इसके लिए श्री देवनारायण भगवान मदिर ट्रस्ट समिति श्रद्धांजलि सभा का आयोजन देवनारायण मंदिर में किया गया, जिसमें अनेक समाजबन्धु शामिल हुए। श्री देवनारायण भगवान मंदिर समिति ट्रस्ट सुजानगढ़ के अध्यक्ष नरेंद्र गुर्जर ने कहा कि कर्नल किरोड़ सिंह बैंसला के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन में 73 वीर गुर्जर शहीद हुए। तब से 23 मई को गुर्जर बलिदान दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर अध्यक्ष नरेंद्र गुर्जर ने के छात्र-छात्राओं को कहा कि इन वीर शहीदों को असली श्रद्धांजलि तब मिलेगी जब उनके बलिदान के बाद मिलने वाले 5 प्रतिशत आरक्षण से आप लोग राजकीय सर्वोच्च पदों पर जाकर बैठोगे। इस अवसर पर मनसुख खटाना, जगदीश दौराता, ओमप्रकाश, चौहान, किशोर डोई, सांवरमल हाकला, अजय सराधना, राजकुमार छावडी, परमेश्वर छावड़ी, रतनलाल पोसवाल, मनोज बोकण, रविकांत लीलू, देबू राम खटाना, गुमानजी मणकश, अनिल खटाणा, सुशील लीलू सहित अनेक समाजबन्धु मौजूद रहे। संचालन अजय सराधना ने किया। शहीदों को कार्यक्रम में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

जिला स्तरीय कार्यशाला 26 मई को

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। प्रदेश सरकार की ओर से उद्यम क्षेत्र में लागू की गई नवीन नीतियों/योजनाओं में प्रदत्त परिलाभों की जानकारी हेतु जिला उद्योग व वाणिज्य केन्द्र की ओर से 26 मई को सवेरे 11 बजे जिला मुख्यालय स्थित होटल शक्ति पैलेस में जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। उद्योग महाप्रबंधक उजाला ने बताया कि राज्य में विभिन्न सेक्टर्स में निवेश को बढ़ावा देने व रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए सरकार की ओर से राजस्थान एमएसएमई पॉलिसी 2024, राजस्थान ओडीओपी पॉलिसी 2024, एकीकृत कलस्टर विकास योजना, राजस्थान निर्यात संवर्द्धन पॉलिसी 2024, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2024 आदि जारी की गई हैं। कार्यशाला में सरकार की ओर से लागू की गई इन नवीन नीतियों/योजनाओं में प्रदत्त परिलाभों की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि जिले के वे समस्त उद्यमी, निवेशक जो स्वयं का नवीन उद्यम शुरू करने अथवा स्थापित उद्यम का विस्तार करने के इच्छुक हैं।

शिविर में दिखाया युवाओं ने उत्साह, 164 यूनिट रक्तदान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में अग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में अग्रवाल सेवा मंडल की ओर से ओमप्रकाश बांयवाला की स्मृति में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सुबह 10 से 5 बजे तक 164 यूनिट रक्तदान किया। रक्तदान शिविर का शुभारभ कौशल्या देवी अग्रवाल, डॉ निरंजन अग्रवाल, सांवरमल मित्तल, रवि बांयवाला, अर्चित जैसनसरिया ने फीता काटकर किया। शिविर के दौरान पुलिस थाने के एसआई हेमंत सिंह ने बताया कि समय समय पर स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान शिविर में भाग लेकर रक्तदान करना चाहिए। अन्य लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए। समाजसेवी शिवम गोयल ने बताया कि रक्तदान से जान बच सकती है और चिकित्सा उपचार में सहायता मिल सकती है। यह जरूरतमंद लोगों को जीवन प्रदान करता है। उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में रक्तदान करने वाले व्यक्ति के लिए रक्तदान के स्वास्थ्य लाभ काफी हैं। यह दिल के दौरे और स्ट्रोक के जोखिम को कम कर सकता है। गोयल ने कहा कि ब्लड डोनेट में एक बार 300 से 400 मिली ब्लड एक बार में लिया जाता है। यह शरीर के पूरे ब्लड का 15 वां भाग लिया जाता है। ब्लड डोनेट करने के बाद शरीर दूसरा ब्लड बनाने की कोशिश करने लगता है। अगर आप अपना खानपान और डाइट अच्छा रखेंगे तो 24 घंटे में वापस से नया ब्लड बनने लगता है। उन्होंने यह भी कहा कि आपके दिए हुए रक्त से किसी को जीवन दान मिलता है। इनसे बड़ा कोई पुण्य का काम नहीं है। इस मौके पर संपतराम जांगिड़, गौरी शंकर कंदोई, प्रकाश पापटान, जितेंद्र राजवी, गौरीशंकर कंदोई, प्रवीण भींयानिया, गोकुल जैसनसरिया, डॉ पूनम चंद भाटी, गणेश दास स्वामी, हेमंत महनसरिया, विपिन कंदोई, बाबूलाल कंदोई, अभिषेक पारीक, किशोर मित्तल, अर्चित जैसनसरिया, डॉ चंद्रभान, पलक जैसनसरिया, राधिका अग्रवाल, चंचल जैसनसरिया, साक्षी अग्रवाल, मीनाक्षी, मंजू, इंदु मित्तल सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

स्वस्थ शरीर के लिए योग की अहम भूमिका

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयुर्वेद विभाग की ओर से होने वाले जिला स्तरीय कार्यक्रम को लेकर शहर के विभिन्न स्थानों पर योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आयुर्वेद उपनिदेशक सत्यवीर सिंह ने बताया कि आगामी 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर होने वाले जिला स्तरीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जिला मुख्यालय स्थित नेचर पार्क, इंद्रमणि पार्क, योग व प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, आपणी पाठशाला व अग्रसेन नगर पार्क में योगाभ्यास करवाया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को अग्रसेन नगर पार्क में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. संतरा जाट व योगाचार्य अरविंद सिंह राठौड़ के नेतृत्व में योग शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. संतरा जाट व अरविंद सिंह राठौड़ ने अलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी, सूर्य नमस्कार सहित अनेक आसन्नों का अभ्यास करवाया और शरीर को स्वस्थ रखने के उपायों की जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. संतरा जाट ने कहा कि व्यक्ति के शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग अत्यधिक जरूरी है। प्रतिदिन योग से शरीर में व्याप्त किसी भी रोग से निजात पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि योग के साथ-साथ व्यक्ति को खान-पान का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। आगामी 21 जून तक चलने वाले इस शिविर में दिन-प्रतिदिन लोगों में उत्साह बढ़ रहा है। इस अवसर पर ओमप्रकाश तंवर, हुक्मीचंद गौड़, मदनलाल पुरोहित, प्रमोद कुमार, तुलसी देवी, दिनेश स्वामी, सज्जन लाटा, कल्याण सिंह राजपुरोहित, ओम प्रकाश इंदौरिया, रंजना स्वामी, गीता पाटवाल, पार्वती जांगिड़, मधु राजपुरोहित, नरेंद्र रक्षक, दुलीचंद सोनी, गोपाल, महेश सहित बड़ी संख्या में महिला-पुरुष व बच्चें उपस्थित रहे।

आदर्श स्कूल के विद्यार्थियों ने एक बार फिर बोर्ड परीक्षाओं मारी बाजी

स्कूल में विद्यार्थियों का किया शानदार सम्मान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के आदर्श ग्रुप ऑफ एजुकेशन की ओर से शुक्रवार को विद्यालय परिसर में सीनियर सैकेंडरी बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली आदर्श प्रतिभाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिसमें रिद्धि स्वामी पुत्री मनोज कुमार 97.80, नरेश सैनी पुत्र संतोष कुमार 96.80, हनुमान पुत्र अमराराम सारण 96.40, ममता सिहाग पुत्री रणजीत सिहाग 96.20, अभिलाषा जाखड़ पुत्री रामचंद्र 95.80, गिरिजा जोशी पुत्री संदीप जोशी 95.80, नवीन सोनी पुत्र रविशंकर95.80, अर्पणा राठौड़ पुत्री किशोर सिंह 95.60, प्रहलाद कटारिया पुत्र हनुमानाराम 95.40, हरीश सैनी पुत्र ओमप्रकाश सैनी 95.40, महिमा चौधरी पुत्री रमेश कुमार 95.40, विकास कुमार पुत्र हेमराम जाट 95.20, मोहम्मद नदीम पुत्र मोहम्मद फारूक 95.20, प्रियंका पुत्री रामनिवास 95.20, कृष्ण सिद्ध पुत्र मांगनाथ 95.20, ऋतू पारीक पुत्री रामदेव पारीक 95, पार्वती स्वामी 94.80, आइना सारण 94.60, अनसुईया 94.60, अनसुईया सारण 94.60, महेश सुथार 94.40, अजय शर्मा 94.20, भावना स्वामी 94.20, रामवीर 94, प्रशस्ति जैसनसरिया 94.20, मुकेश सारण 94, टीनू पारीक 94, वंश 94, फाल्गुनी शर्मा 94.80, सहित 90 प्रतिशत से अधिक अंक वाली 77 व 80 प्रतिशत से अधिक अंक वाली 200 प्रतिभाओं को सचिव राधा लाटा, प्रधानाचार्य राधेश्याम बढ़ाढरा, सुशील गोस्वामी, अभिमन्यु लाटा तथा संकाय हेड की ओर से सम्मानित किया गया। स्कूल निदेशक गिरीश लाटा ने बताया कि इस बार का परीक्षा परिणाम गत वर्षों से भी उत्कृष्ठ रहा है। इस बार न केवल संख्यात्मक दृष्टि से बल्कि गुणात्मक रूप से बेमिसाल रिजल्ट रहा है। उन्होंने आगामी सत्र से आदर्श में प्री फाउंडेश व फाउंडेशन क्लास के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अब आदर्श हाईटेक टेक्नोलॉजी से जुड़कर शहर को शिक्षा के क्षेत्र में और अग्रणी ले जाने के लिए कृतसंकल्पित है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावक, विद्यालय स्टॉफ व विद्यार्थी उपस्थित रहे। टॉपर्स विद्यार्थियों ने अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय में चल रही आदर्श टेस्ट सीरीज, आदर्श महासंग्राम तथा शानदार फैकल्टी को दिया। उन्होंने विद्यालय के स्तर को महानगरों जैसे बताया। अब विद्यालय का नेतृत्व पूर्णकालिक निदेशक गिरीश सर के हाथों में आने से आदर्श को और अधिक बुलंदियों को छूने से कोई नहीं रोक सकता। शहरी व ग्रामीण क्षेत्र से आए अभिभावक भी आदर्श की सफलता को कड़ी मेहनत का परिणाम व शानदार मैनेजमेंट को दिया। समारोह का समापन वंदे मातरम् के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन राधा सारस्वत व दीपचंद ने किया।

दुर्घटना में एक की मौत, एक घायल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। गत रात्रि को छापर-जेतासर रोड़ पर ट्रेक्टर ट्रॉली और मोटरसाइकिल की टक्कर में एक युवक की मृत्यु हो गई और एक युवक घायल हो गया। जानकारी के मुताबिक देवानी निवासी ताराचंद (25) अपने रिश्तेदार मदन के साथ अपने गांव आ रहा था। रास्ते में अचानक सामने से ट्रेक्टर ट्रॉली आ गयी जिसके एक ही लाइट थी। जिसकी वजह से ट्रेक्टर ट्रॉली ने मोटरसाइकिल को जबरदस्त टक्कर मार दी। चालक मौके से फरार हो गया। दोनों घायलों को पहले छापर अस्पताल और बाद में सुजानगढ़ सरकारी अस्पताल लाया गया। जहाँ टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार और अन्य ने इमरजेंसी मे भर्ती कराकर इलाज शुरू कराया। जहाँ डॉ लियाकत अली ने ताराचंद को मृत घोषित कर दिया और गंभीर घायल मदन का इलाज शुरू किया। छापर पुलिस को सूचना दी गई जिसपर हेड कांस्टेबल गोपालराम मौके पर और सुजानगढ़ अस्पताल पहुचे। छापर पुलिस ने परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर शुक्रवार को पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया।

भामाशाह मुरारका की भावनाओ पर फेरा पानी, आमजन को हो रही भारी परेशानी

पांच करोड़ की लागत से बना रोडवेज बस स्टैंड फांक रहा धूल, बसें नही आने से बना शो पीस

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। सीबी मुरारका चैरिटेबल ट्रस्ट मुंबई की की ओर से नवनिर्मित वातानुकूलित बस डिपो पर रोडवेज बसे नहीं आने के कारण आमजन को हो रही परेशानियों एवं बसों के ठहराव के संबंध ट्रस्ट के स्थानीय प्रतिनिधि जय प्रकाश सरावगी के नेतृत्व में लक्ष्मणगढ़ उपखंड अधिकारी मोहर सिंह मीणा को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन में बताया गया कि जनता की समस्याओं को देखते हुए करीब 8 वर्ष पूर्व सीबी मुरारका चैरिटेबल ट्रस्ट मुंबई के मुख्य ट्रस्टी काशी प्रसाद मुरारका की ओर से करोड़ों रुपए की लागत का एक बस स्टैंड अत्यआधुनिक सुविधा युक्त मय वातानुकूलित प्रतीक्षालय व 19 दुकानों सहित बनाकर लक्ष्मणगढ़ नगर पालिका के सुपुर्द कर दिया गया था किंतु आज तक राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसें हाईवे से ही गुजरती है जिसके चलते आमजन को खासी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ज्ञापन में मांग की गई कि राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सभी बसों का आगमन,निर्गमन एवं ठहराव बस डिपो पर करवाने के लिए विभाग के उच्च अधिकारियों से बात चित की जाए।बस डिपो पर जो 19 दुकान है उनका आवंटन जल्द करवाया जाए जिससे कि शहर की जनता को बस डिपो पर जरूरत का सामन मिल सके तो वही लोगों का रोजगार का अवसर भी मिल सके। हाइवे के चौराहे पर अनावश्यक बसों का ठहराव नहीं हो जिसके लिए पुलिस की व्यवस्था की जाए।ट्रस्ट के स्थानीय प्रतिनिधि जय प्रकाश सरावगी ने बताया कि करीब 8 वर्ष पूर्व लक्ष्मणगढ़ के भामाशाह काशी प्रसाद मुरारका ने करीब 5 करोड रुपए की लागत से एक बस डिपो का निर्माण करवा कर स्थानीय नगरपालिका के सुपुर्द कर दिया गया, जिसके पश्चात करीब एक महीने तो एक्सप्रेस बसे डिपो में आई और बाद सभी बसे अंदर आना बंद हो गई। डिपो पर रोडवेज बसों के ठहराव के संबंध में सीएम व परिवहन मंत्री को भी ज्ञापन दिया जा चुका है किंतु लक्ष्मणगढ़ का दुर्भाग्य है कि बसे डिपो में नहीं आ रही है। उन्होंने बताया कि करीब 10 दिन पूर्व जो सीकर फतेपुर की लोकल बसे डिपो में आ रही थी वो भी बंद हो गई है और विंडो भी बंद कर दी गई है, जिसके चलते ज्ञापन दिया गया है। उन्होंने बताया कि इसके बाद भी प्रशासन अगर नहीं चेतता है तो आंदोलन किया जाएगा। ज्ञात रहे कि लोकल बसों को पहले पुराने बस स्टैंड पर शहर के अंदर आती थी किंतु विभाग ने शहर के अंदर बहुत ज्यादा अतिक्रमण होने की बात कहते हुए लोकल रोडवेज बसों का शहर के अंदर आवागमन बंद कर दिया था जिसके बाद बसे बस डिपो में उपलब्ध रहती थी किंतु विभाग की ओर से करीब 10 दिन पूर्व वहां भी बसों का आवागमन बंद कर दिया जिसके पश्चात शहर की जनता के साथ साथ आस पड़ोस के गांवों व शहरों से आने वाले यात्रियों को अब हाइवे से पर बसों में चढ़ना और उतरना पड़ रहा है जिसके चलते आम जन बहुत परेशान है। सरकारी अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों को विभाग से उच्च अधिकारियों से वार्ता कर जनता की उक्त समस्या का जल्द से जल्द कोई स्थाई समाधान करवाना चाहिए।

लू व तापघात से प्रभावित मरीजों को मिले तत्काल उपचार : जिला कलक्टर सुराणा

जिला कलक्टर ने जिला ग्रामीण स्वास्थ्य समिति की बैठक में चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा कर दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने शुक्रवार को डीओआईटी वीसी सभागार में जिला ग्रामीण स्वास्थ्य समिति की बैठक में चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा कर चिकित्सा अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। इस दौरान जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि जिले के समस्त चिकित्सा संस्थानों पर आने वाले लू व तापघात से प्रभावित मरीजों को तत्काल उपचार मिले। इसके लिए चिकित्सा केन्द्रों पर तत्काल प्राथमिक उपचार के साथ आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने सभी प्रकार की दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा अधिकारियों से कहा कि जिले में संबंधित ब्लॉक क्षेत्र में ऐसे सभी प्रकार के आयोजन जहां भीड़भाड़ ज्यादा होने की संभावना वहां बढ़ते तापमान को देखते हुए आवश्यक चिकित्सा इंतजाम सुनिश्चित करें। चिकित्सा संस्थानों पर गर्मी से प्रभावित मरीजों के लिए आरक्षित वार्डों में कूलर व पंखों की उपलब्धता की भी जांच करें। सुराणा ने बैठक में आयुष्मान कार्ड का शत प्रतिशत वितरण करने तथा प्रधानमंत्री वय वंदन योजना में 70 वर्ष से अधिक के व्यक्तियों की स्क्रीनिंग के संबंध में निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना की समीक्षा

जिला कलक्टर ने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना की समीक्षा करते हुये राजकीय चिकित्सा संस्थानों में योजना के लाभार्थी के भर्ती होने के दौरान योजना के पैकेज का लाभ दिलवाने के साथ समय पर टीआईडी जनरेट करने के निर्देश दिए। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज शर्मा ने जिले के सभी चिकित्सा संस्थानों पर पिछले एक माह के दौरान भर्ती मरीजों व टीआईडी जनरेट व पैकेज के बारे में जानकारी दी। जिला कलक्टर ने टीकाकरण, खसरा– रूबेला, परिवार कल्याण, एम्बुलेंस सेवा, पीसीपीएनडीटी एक्ट की पालना के तहत समय पर निरीक्षण तथा 'शुद्व आहार–मिलावट पर वार' अभियान के तहत आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले के राजगढ़ ब्लॉक को भारत सरकार की ओर से आशान्वित ब्लॉक में शामिल किए जाने पर निर्धारित इंडीकेटर तथा राज्य सरकार की गुरू गोलवलकर योजना में चूरू ब्लॉक को शामिल होने पर निर्धारित इंडीकेटर पर चर्चा की। सीएमएचओ डॉ मनोज शर्मा ने विभागीय योजनाओं व कार्यक्रमों की प्रगति से अवगत कराते हुए मुख्यमंत्री निशुल्क दवा व जांच योजना और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा की।

पोषण अभियान की प्रगति पर हुई चर्चा

बैठक में जिला कलक्टर ने महिला एवं बाल विकास विभाग के उपनिदेशक डॉ नरेन्द्र सिंह से जिले में पोषण अभियान की प्रगति के बारे में चर्चा कर समुचित निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा विभाग और महिला व बाल विकास विभाग की ओर से संयुक्त सेक्टर बैठक कर पोषण अभियान के बिन्दुओं पर चर्चा के निर्देश दिए। इस दौरान राजकीय डेडराज भरतिया चिकित्सालय अधीक्षक डॉ दीपक चैधरी, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अहसान गौरी, क्षय रोग नियंत्रण अधिकारी डॉ वेदप्रकाश, उप मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ प्रवीण झूरिया, आरसीएचओ डॉ राजेश गुप्ता, डॉ. राशिद, जिला कार्यक्रम प्रबंधक आशीष खण्डेलवाल, संग्राम सिंह, डीपीसी प्रेमशंकर शर्मा, राजकुमार बैरवा व डीआईसी मैनेजर विजेन्द्र भाटी आदि मौजूद रहे।

94 लाख रूपये की लागत से बने बीसीएमएचओ भवन का विधायक ने किया लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

बीदासर(निस)। कस्बे के वार्ड नं एक सिटी डिस्पेंसरी के पास 94 लाख रूपये की लागत से बने ब्लॉक मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भवन का शुक्रवार को फीता काटकर लोकार्पण विधायक मनोज मेघवाल व पालिका अध्यक्ष सीताराम भोभरिया ने किया। विधायक मेघवाल ने कहा कि बीसीएमएचओ कार्यालय का वर्ष 2022 के बजट में स्वीकृत हुआ था। इस के एक साल बाद वर्ष 2023 में भवन निर्माण का बजट मिल गया और एक साल के अंदर भवन भी बनाकर तैयार हो गया। यह बीदासर के लिए एक बड़ी सौगात है। गौरतलब है कि लोकार्पण कार्यक्रम में संबंधित विभाग का कोई भी अधिकारी व कर्मचारी मौके पर उपस्थित नहीं था। वर्तमान में ये कार्यालय बंद पड़ी जनाना अस्पताल के भवन में चल रहा था। इस भवन का निर्माण कार्य 2023 में आरआर कंस्ट्रक्शन कंपनी को दिया गया था जिसका का कार्य जनवरी 2024 में शुरू हुआ जो सितम्बर में बनकर तैयार हो गया। इस भवन में तीन रूम, एक ऑफिस व एक बड़ा मीटिंग होल बनाया गया है। इस मौके पर पालिका उपाध्यक्ष मेराज उल हसन छींपा, नगर कांग्रेस अध्यक्ष जेठाराम यादव, जवाहरसिंह राठौड़, पार्षद गोपाल गुर्जर, यूनुस बिसायती, रामपाल पांडिया, अफजल हुसेन स्लामपुरिया, हरीश बांठिया, हनुमान मणिहार, नंदलाल छापोला, पवन पारीक, सलीम क़िलानिया, गोविंद सोनी आदि उपस्थित रहे।

बेटी से शादी के लिए मना करना नागवार गुजरा, आरोपी ने युवती के पिता को मौत के घाट उतारा

बड़ी बेटी का देवर छोटी बेटी से करना चाहता था शादी, पिता ने मना किया तो दी मौत

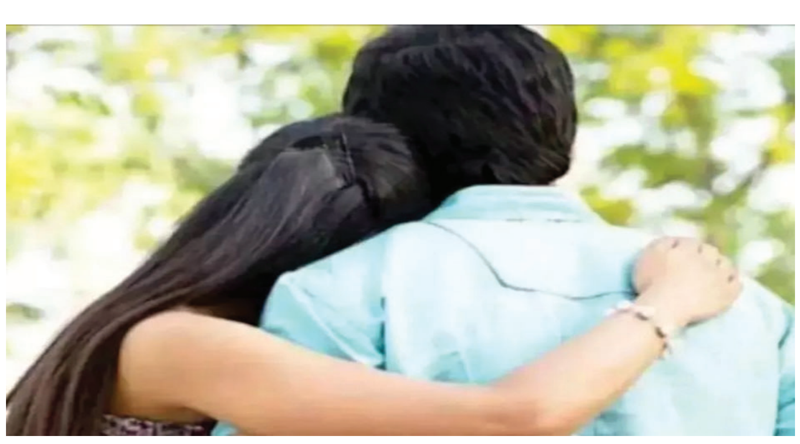

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। चिड़ावा के अरडावतिया कॉलोनी में 12 मई 2025 की रात को हुई दलीप कुमार की हत्या का पुलिस ने खुलासा किया है। मामले में पुलिस ने चौंकाने वाला खुलासा करते हुए बताया कि हत्या किसी बाहरी व्यक्ति ने नहीं, बल्कि मृतक के नजदीकी रिश्तेदार ने ही की थी। मृतक की बड़ी बेटी का देवर प्रवीण ही इस वारदात का मुख्य आरोपी निकला। जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। प्रवीण पर पहले से ही 10,000 का इनाम घोषित था।

प्रेम-प्रसंग बना हत्या का कारण

पुलिस जांच में सामने आया कि प्रवीण मृतक दलीप कुमार की छोटी बेटी से प्रेम करता था और उससे शादी करना चाहता था। उसने कई बार दलीप कुमार के घर आकर विवाह का प्रस्ताव रखा, लेकिन दलीप ने इस रिश्ते को सिरे से खारिज कर दिया। इसी बात से प्रवीण इतना गुस्सा हुआ कि उसने दलीप कुमार की हत्या की साजिश रच डाली और उसे अंजाम दिया। घटना की रात दलीप कुमार अपने घर की बैठक में सो रहे थे, जबकि उनकी पत्नी और बेटी दूसरे कमरे में थीं। देर रात करीब 2 बजे बैठक से मारपीट और चीख-पुकार की आवाजें आने लगीं। जब पत्नी और बेटी ने दरवाजा खोलने की कोशिश की, तो पाया कि वह बाहर से बंद था। उन्होंने तुरंत पड़ौसी मदनलाल टेलर को फोन किया। जब दरवाजा खोला गया, तो दलीप लहुलुहान अवस्था में पड़ा था। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन जयपुर ले जाते समय रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया।

सूचना मिलते ही पुलिस तत्काल घटनास्थल पर पहुंची

एफएसल टीम, डॉग स्क्वॉड और अन्य विशेषज्ञों को बुलाकर महत्वपूर्ण सबूत एकत्रित किए गए। पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड की ओर से पोस्टमार्टम करवाया गया। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की गई साक्ष्य जुटाए गए। सीसीटीवी फुटेज में एक युवक बार-बार दिखाई दे रहा था, जिसका हुलिया मृतक की बड़ी बेटी रेखा के देवर प्रवीण से मिलता-जुलता था। इसी दौरान पुलिस को गुप्त सूचना भी मिली कि प्रवीण और मृतक की छोटी बेटी के बीच शादी की बात चल रही थी, जिसमें दलीप कुमार बाधा बन रहे थे। इन सभी कड़ियों को जोड़ते हुए पुलिस प्रवीण तक पहुंची।

कुश्ती में चूरू जिले की बेटियों ने जीता उपविजेता का खिताब

सरदारशहर(निस)। राजस्थान कुश्ती संघ के तत्वावधान में 20 से 22 मई तक बारां में आयोजित हुई अंडर 17 वर्षीय राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में चुरू जिले का उत्कर्ष्ट प्रदर्शन रहा। उक्त जानकारी देते हुए चूरू जिला कुश्ती संघ के अध्यक्ष रतिराम पूनियां ने बताया कि बालिका वर्ग में 40 किलो में अंजनीतिका ने कांस्य पदक, 42 किलो में मोनिका ने रजत पदक, 46 किलो में सुनीता ने रजत पदक, 61 किलो में कंचन पंवार ने रजत पदक प्राप्त कर उपविजेता चैंपियनशिप का खिताब जीता। इसी प्रकार बालक वर्ग में 80 किलो में वैभव चौधरी ने कांस्य पदक और 90 किलो में कानाराम सारण ने कांस्य पदक प्राप्त किया। चूरू जिला कुश्ती संघ के सचिव मामराज चाहर ने बताया कि विजेता पहलवानों का जिला स्तर पर भव्य सम्मान समारोह आयोजित कर अभिनंदन किया जाएगा। सभी विजेता खिलाड़ियों को राजस्थान शारीरिक शिक्षक संघ के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामलाल जाखड़, हरदीप स्पोर्ट्स अकादमी के निदेशक विजय लाखलान, पहलवान लादुराम शर्मा, देवेंद्र लाम्बा, खेल प्रेमी महेंद्र सेन ने सभी पहलवानों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

झुंझुनूं के सैन्य शक्ति स्मारक को मिलेगा मॉडर्न स्वरूप: लखावत ने दौरासर स्मारक का दौरा किया

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राजस्थान राज्य धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने शुक्रवार को झुंझुनूं के दोरासर स्थित सैन्य शक्ति स्मारक का दौरा किया। स्मारक को आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित कर राष्ट्रभक्ति की भावना को और अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की योजना पर चर्चा की। उनके इस दौरे का मुख्य उद्देश्य स्मारक की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना और उसे एक जीवंत प्रेरणा केंद्र के रूप में विकसित करना था। लखावत ने स्मारक स्थल पर पहुंचकर सबसे पहले इसके संरचनात्मक और तकनीकी पहलुओं का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने तकनीकी विशेषज्ञों और स्थानीय अधिकारियों के साथ स्मारक की मजबूती, डिजाइन और वर्तमान संरचना पर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान उन्होंने स्मारक में सुधार और उन्नयन के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि स्मारक न केवल ऐतिहासिक महत्व को दर्शाए बल्कि आधुनिक समय की जरूरतों को भी पूरा करे।

मॉडर्न ऑडियो-विजुअल सिस्टम से लैस होगा स्मारक

मीडिया से बातचीत करते हुए, लखावत ने बताया कि सैन्य शक्ति स्मारक को एक आधुनिक और आकर्षक स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। उनका लक्ष्य है कि आगंतुकों को देश के वीर शहीदों के बलिदान की गौरवगाथा प्रभावशाली और प्रेरणादायक ढंग से अनुभव हो सके। उन्होंने कहा कि हम स्मारक में अत्याधुनिक ऑडियो-विजुअल सिस्टम स्थापित करने जा रहे हैं, जिसमें शहीदों की कहानियां, उनके परिवारों की भावनाएं और देशभक्ति सेजुड़ी विभिन्न प्रस्तुतियां शामिल होंगी। इससे स्मारक सिर्फ एक दर्शनीय स्थल नहीं रहेगा, बल्कि यह एक जीवंत प्रेरणा केंद्र बन जाएगा। लखावत ने स्थानीय जनता और जनप्रतिनिधियों से भी संवाद किया और स्मारक के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व को और बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए सुझाव आमंत्रित किए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि झुंझुनूं जिले का सैन्य परंपरा में एक विशेष स्थान रहा है और यह स्मारक उन सभी शहीदों की अमर स्मृति को सहेज कर रखने का माध्यम है, जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। यह पहल स्मारक को स्थानीय समुदाय से जोड़ने और इसे एक साझा विरासत के रूप में विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मौके पर झुंझुनूं के विधायक राजेंद्र भाम्बू, भाजपा जिला अध्यक्ष बनवारी लाल सैनी सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता, स्थानीय नागरिक और सैन्य परिवार उपस्थित रहे। सभी ने स्मारक के आधुनिकीकरण की दिशा में हो रहे प्रयासों की सराहना की और आशा जताई कि इससे युवाओं में देशभक्ति की भावना को बल मिलेगा। प्राधिकरण की ओर से तैयार की जा रही उन्नयन योजना में स्मारक की भौतिक संरचना के साथ-साथ भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रस्तुति को भी समाहित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्मारक आने वाले समय में केवल प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गौरव का प्रतीक बन सके। यह आधुनिक स्वरूप शहीदों के बलिदान को एक नए और प्रेरणादायक तरीके से प्रस्तुत करेगा।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।